CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चमत्कार

दि. ५५८

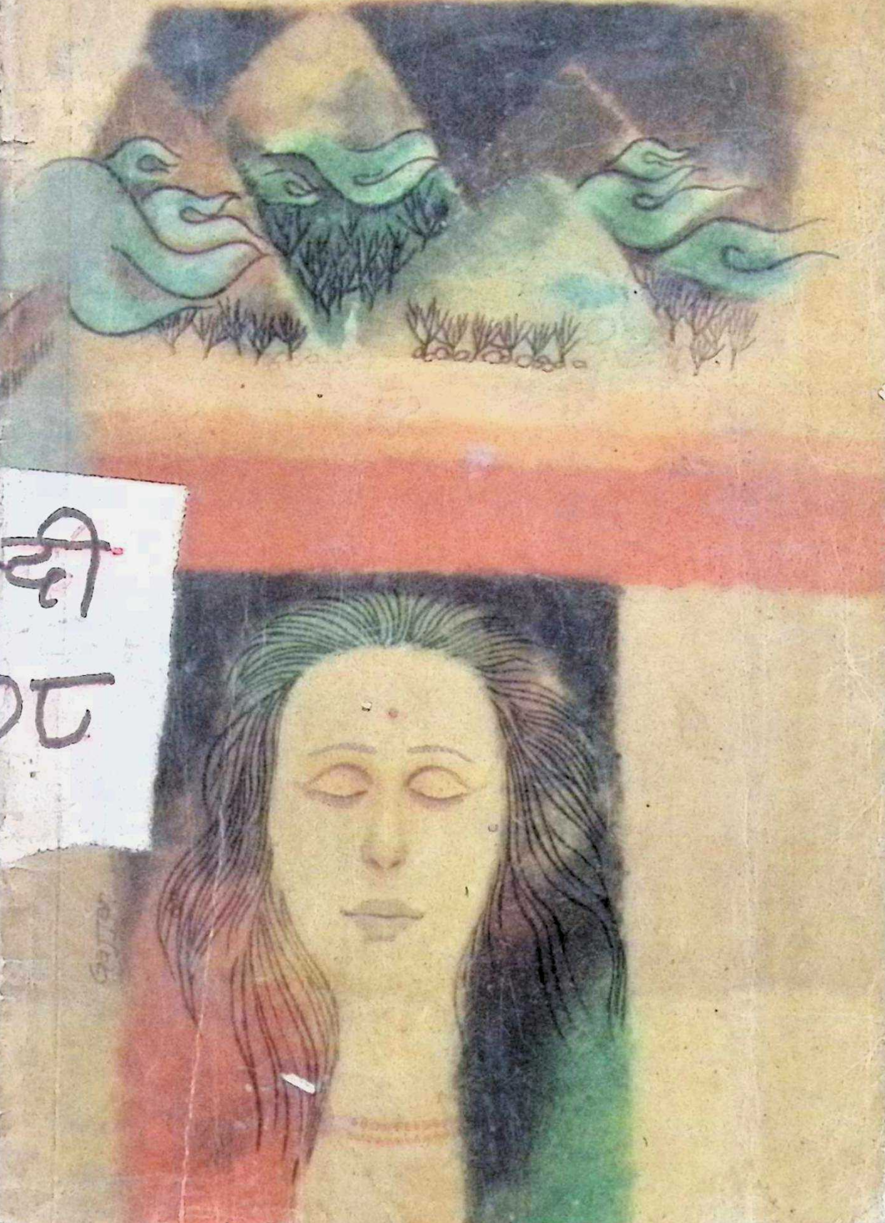

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चमत्कार

कि ५५८

आरिगपुरि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आरिगपूडि

तेलुगुभाषी आरिगपूडि का नाम ए० रमेश चौधरी है। आरिगपूडि आपका कुल-नाम है और उपनाम भी। २८ नवम्बर १९२२ को जन्मे आरिगपूडि अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी के अतिरिक्त दक्षिण की लगभग सभी भाषाओं के ज्ञाता हैं। आपने १८ उपन्यास, ४ कहानी संग्रह, ३ नाटक, १ जीवनी ग्रंन्थ, २ बाल साहित्य की पुस्तकें तथा १ प्रदेश परिचयात्मक रचना हिन्दी साहित्य को दी हैं।

संपर्क सूत्र :
१३८, शेनाय नगर
मद्रास–६०००३०

प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो॰बा॰१०६; पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

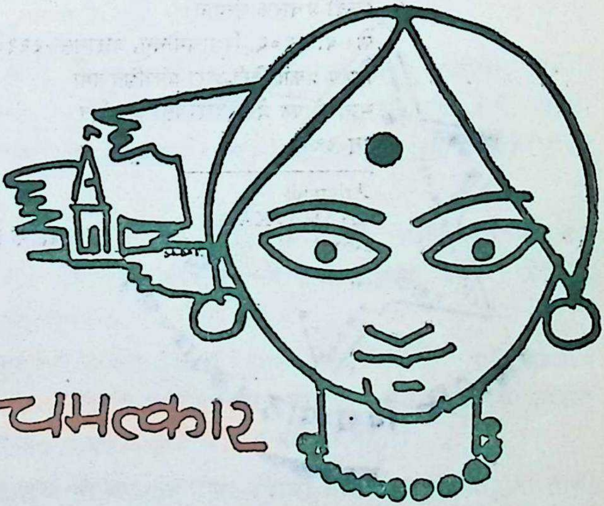

ચમત્કાર

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारत के प्रथम बुक क्लब
प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो० बा० १०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१ के लिए
विजय प्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित तथा
भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित
सन् १९७६

Arigpudi
CHAMATKAR
Novel

मूल्य : ४.००
सदस्यों के लिए : २.००

वाल्मीकि विद्यापीठ
९२६९३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पथरीली जमीन, बिखरे-विखरे रोड़े-कंकड़, झाड़-झंखाड़, कँटीली, रेतीली बंजर-सी, निर्जन-सी, सुनसान-सी, अनाकर्षक, अरम्य। छोटे-छोटे टीले, पतली पगडंडियाँ, नाटे-नाटे पेड़। नुकीली पहाड़ी शिवलिंग-सी। उस पर क़िरीट सा एक मन्दिर।

पहाड़ी पर कहीं नीम के नीचे, कहीं ढाक से सटे, कहीं कीकड़ के तले दस-पन्द्रह घर थे। पत्थरों की मुँडेर से घिरे खाली दालान, बाड़ें। छोटी-सी बस्ती। पर इसकी महत्ता?

यह पहाड़ी कइयों के लिए पूज्य है। इसका मन्दिर पवित्र है, मूर्ति आराध्य है। श्रद्धालु दूर से इसको इस तरह नमस्कार करते हैं, जैसे यह उनके भगवान् की प्रतिकृति हो और एकाएक क्षितिज में प्रत्यक्ष हो गई हो।

श्रद्धा और भक्ति की भावनाएँ प्रायः कथाओं और किंवदन्तियों द्वारा सींची जाती हैं। इस पहाड़ी के बारे में भी कई लोककथाएँ हैं, दन्तकथाएँ हैं। इसका अपना प्रबल स्थलपुराण है। कोई इसे दशग्रीव का मुकुट बताता है, तो कोई मन्मथ की भस्मीकृत मूर्ति, तो कोई पद्मासनस्थ शिव की कल्पना इसमें साकार देखते हैं। किसी-किसी का तो यह भी कहना है कि यह वह मथनी है, जिससे देवताओं ने क्षीरसागर को मथा था।

इसके दक्षिण में चंचलसलिला तुंगभद्रा है। उत्तर में एक नाला है। सूखा-सूखा-सा। यह पहाड़ी नैसर्गिक दुर्ग है।

इसकी स्थिति किसी बड़े साम्राज्य के बड़े ताले की कुंजी-सी है।

पहाड़ी के मन्दिर की ऊँची वेदिका से तुंगभद्रा के तट पर विजयनगर के भव्य, विशाल सौध, आकर्षक अट्टालिकाएँ, गगनचुम्बी मन्दिर दिखाई देते हैं। प्रातः काल जब सूर्योदय होता है, तो ऐसा लगता है, जैसे विजयनगर के मन्दिरों की गोदी में लेटकर उठ रहा हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुस्थल-सा प्रदेश, जिसमें कहीं-कहीं कई अरब के रेगिस्तान का साम्य पाते थे। पहाड़ी का मन्दिर कइयों के लिए चेतावनी-सा था। यदि यह किसी में भक्ति जगाता था, तो न मालूम किसी को क्यों चिढ़ाता भी लगता था।

इस छोटी सी पहाड़ी को लेकर न मालूम कितनी ही लड़ाइयाँ हुई थीं। न मालूम इसके आस-पास कितने लोग बलि हो गए थे। विजयनगर के सम्राटों और अड़ोस-पड़ोस के सुलतानों में इस छोटी-सी पहाड़ी के लिए कितनी ही बार छीनाझपटी हुई थी। कभी यह विजयनगर के साम्राज्य में माना जाता, तो कभी सल्तनत में गिना जाता था।

मन्दिर का निर्माण भी विचित्र था, शिखर के तोड़ दिए जाने पर यह मस्जिद-सा लगता था। उस गाँव के बड़े-बूढ़े अब भी बताते हैं कि कैसे बीजापुर की सेनाएँ ऊधम मचाती, रक्तपात करती वहाँ आईं। कैसे इन्होंने मन्दिर तोड़ा और मन्दिर ऐसा गिरा कि उसके नीचे पच्चीस-तीस सिपाही ढेर हो गए और जो दो-चार बच गये थे, वे हाय-तौबा करते उल्टे पैर भाग गए। अब भी उनके आक्रमण यदाकदा होते रहते हैं.........यह पहाड़ी, विजयनगर की ड्यौढ़ी-सी है।

× × × ×

उस दिन सूर्य छुपा-छुपा-सा रेंग रहा था। आकाश मेघाच्छन्न था। बादलों ने काले लबादे ओढ़ लिए थे और सूर्य की किरणों को खुलकर छिटकने नहीं दे रहे थे। कुछ ठंडक-सी थी।

उस प्रान्त में बड़ी गर्मी होती थी। जमीन तपती थी, आसमान तपता था। भूमि तृषित होठों को खोले आकाश की ओर ताका करती थी। इसलिये बेमौसमी बादल सुहावने लगते थे।

मन्दिर के आँगन में ढेर से नीम के पत्ते झर गए थे। धूल थी। पन्द्रह-वर्षीया सीता उनको बुहार रही थी। वह प्रतिदिन प्रातः यह काम किया करती थी। मन्दिर के एकान्त में वह कभी-कभी अकेली हाथ जोड़कर कुछ गुनगुनाया करती थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीता उस मन्दिर के पुरोहित की पोती थी। पिता जीवित नहीं थे। वे कुछ वर्ष पहले एक युद्ध में मारे गए थे। उनके साथ औरों ने भी आत्मोसर्ग किया था। यह मन्दिर भी तहस-नहस कर दिया गया था। सीता तब उतनी बड़ी न थी कि यह जान सके कि क्यों लोग धर्म के नाम पर इतने उद्धत, उच्छृंखल, नृशंस और क्रूर हो जाते हैं। भगवान् की सृष्टि को उजाड़ कर उसको सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करते हैं। बाग को नष्ट करके, माली को खुश करने की कोशिश करते थे। उसके लिए यह सब अब भी पहेली है।

वह साधारण ग्रामकन्या थी। भोली-भाली। पर, ग्रामवासियों को उससे विशेष प्रेम था, लगाव था। वह छोटी थी, पर वह जो कहती, उस गाँव में वही होता। बड़े-बूढ़े भी उसको मानते थे। वह प्रतिष्ठित थी पर अपनी इस प्रतिष्ठा से अपरिचित थी।

लाल लहँगा लाल चोली, माथे पर सिन्दूर का बड़ा टीका। गोरा-गोरा रंग। जब वह चलती थी, तो लगता था जैसे कोई मन्दिर की देवी चल रही हो। वह शालीनता और गम्भीरता की प्रतिमूर्ति थी। उसमें कुछ दैवी आकर्षण था और उसकी बालसुलभ स्वाभाविकता उसकी महत्ता को और भी बढ़ाती लगती थी।

बुहारते बुहारते उसने, अपना सिर ऊपर उठाया। आकाश की ओर देखा। झाड़ू छोड़ दी। भागी-भागी मन्दिर में गई। वहाँ कोई न था वह खड़ी-खड़ी मूर्ति की ओर ध्यान से देखने लगी, जैसे मूर्ति उससे कुछ कह रही हो और वह ध्यान से सुन रही हो।

फिर वह उछलती-कूदती, सीढ़ियों पर से अपने घर की ओर आई।

लकड़ी का फाटक खोला और कुछ गाती-गुनगुनाती घर के पिछवाड़े चली गई। वहाँ एक झोपड़ी थी। उसमें दो तीन गाएँ थीं, कुछ बकरियाँ। उसको देखते ही गाएँ रँभाने लगीं। बकरियाँ मिमियाने लगीं, जैसे वे भी उसको उसी तरह चाहती हों, जैसे गाँव के और लोग चाहते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह गाती जाती थी और एक एक को छोड़ती जाती थी। वे फाटक की ओर जातीं, रह-रह कर पीछे मुड़ कर देखतीं, मानो सीता के आने की प्रतीक्षा कर रही हों। विचित्र लगाव।

उनको छोड़कर वह घर के बर्तन धोने लगी। पास ही, चारपाई पर उसका बाबा लेटा-लेटा खाँस रहा था। वयोवृद्ध, रोगग्रस्त, दुखग्रस्त। कितना बड़ा परिवार था उसका! सब एक-एक करके पहाड़ी के लिए बलिदान हो गए। कितने दुःख, कितनी ही स्मृतियाँ, भविष्य और भूत मिलकर उसको घोंटते-से लगते और वह खाँसता जाता था।

"बेटी, तुम आ गई? क्या बात है, आज तुम बहुत खुश मालूम होती हो। गा रही हो, सुनूँ तो गाना, सुनाओ।"

"गाना तो नहीं गा रही थी बाबा, गुनगुना रही थी।"

"हूँ, तुम्हारी फूफी भी कुछ इसी तरह गुनगुनाया करती थी। बिचारी।" वृद्ध का कण्ठ रुँध गया, आवाज फट गई, खाँसी बढ़ गई, आँसू ढुलक पड़े।

"जाने भी दो बाबा, तुम फूफी को बहुत याद करते हो।"

"तू बिल्कुल उसी की तरह ही तो है। तुम्हें देखता हूँ और वह याद आ जाती है। न मालूम वह कहाँ है? याद क्या है, खुला घाव है, बेटी तुम्हें देख-कर तसल्ली कर लेता था, अब नजर भी धुँधली हो रही है, गाओ न।"

"ना, खुला घाव और खुल जाएगा। मैं नहीं गाऊँगी, नहीं गुनगुनाऊँगी। तुम आराम से लेट जाओ।"

सीता ने यह कह तो दिया, पर मन्द स्वर में गुनगुनाने लगी, मानों बूढ़े बाबा की बात को ठुकरा देना उसके बस की बात न हो।

"बेटी, मन्दिर की सफाई कर दी है न?"

"हाँ बाबा, मैंने तुम्हारा खाना भी बना दिया है, अन्दर छींके पर रख दिया है। जब भूख लगे खा लेना।"

"तो तुम कहाँ जा रही हो?"

"गौवों के पास, पहाड़ के नीचे, तलहटी में।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"बेटी, वहाँ नहीं जाया करते। अपना गणेश है न, वही उन्हें चरा लाएगा।"

"नहीं, आज मैं ही जाऊँगी।"

"इतने सवेरे ? बेटी, पहाड़ी के नीचे न जाओ वहाँ खतरा है। न मालूम कब क्या हो ?"

"बाबा, मुझे कोई खतरा नहीं है।"

"तुम्हारी फूफी भी यही कहा करती थी। बड़ी जिद्दी लड़की थी। उठा ले गए उसको उचक्के—कहाँ ले गए, कुछ पता नहीं। खैर, मत जाओ बेटी, मान भी जाओ।"

"आज नहीं मानूँगी तुम्हारी बात, नीचे जाऊँगी ही, शाम को आकर बताऊँगी कि मैं क्यों गई थी। अच्छा, जा रही हूँ, खा लेना।"

सीता गुनगुनाती गौ-बकरियों के पीछे गड़ेरिन-सी पहाड़ी के नीचे उतरने लगी। उसको नीचे जाता देख, दो-चार और लड़कियाँ भी उसके साथ निकल पड़ीं।

● ● ●

: २ :

ग्रामवासी सीता को प्रायः अकेली न छोड़ते थे। उनका विश्वास था, यदि उसपर कोई आपत्ति आई तो सारे ग्राम पर आ जाएगी। इसलिए पांच-दस युवक भी उसके साथ हो गए। वह अक्सर यूँ भी बकरियों को लेकर नहीं निकलती थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर के आँगन और मन्दिर के प्रांगण के बाहर, वह देखी भी न जाती थी। वह एकान्त में रहती, उसको एकान्त पसन्द भी था।

गणेश ने पूछा, "मैं आ ही तो रहा था, फिर इतने सबेरे गौवों को लेकर जाने की क्या जरूरत है?"

"जरूरत है, तभी तो आई हूँ।" सीता ने कहा।

दोनों थोड़ी दूर चुप-चाप चलते रहे, गौवें पहाड़ी की तलहटी में पहुँच गई थीं। घास कम थी, और जो थी वह हरी न थी। बकरियाँ झाड़ियाँ यूँ खींच रही थीं, जैसे उनेक खींचने मात्र से उन पर पत्ते आ जाएँगे। गौ-बकरियों को वहाँ छोड़, वह पहाड़ी के उत्तर-पश्चिम की ओर चल पड़ी। कुछ दूरी पर नाला था, नाले के किनारे ढाक के पेड़ों का झुरमुट।

गणेश उसके पीछे-पीछे अंगरक्षक की तरह चला। वह ग्राम का उत्साही युवक था। उसके माँ-बाप भी सीता के माँ-बाप की तरह पिछली लड़ाइयों में मार दिए गए थे। एकहरा छरहरा वदन, कसरती। बीस-बाईस की उम्र। मुँह पर विचित्र निश्चिन्तता, मतवालापन।

गाँव में किसी की कोई विशेष सम्पत्ति न थी। लोग कम, जमीन कम। खेतीबारी में कोई दिलचस्पी नहीं। दिन-रात खून-पसीना एक करो, फसल पैदा करो, और वह घर न पहुँचे, तो ऐसी खेती करने से खेती न करना ही अच्छा था। वे गौ-बकरियों के भरोसे ही गुजारा कर लेते थे या कभी-कभी तुंगभद्रा के पार जाकर विजयनगर में कोई काम-धन्धा कर लेते थे।

गणेश जब कभी गाँव में रहता, सीता का साथ न छोड़ता। उसके आस-पास ही मँडराता रहता। उसका उससे कुछ अजीब लगाव था। वह गाँव के युवकों का मुखिया था। जब वह निकलता, तो उसके साथ "गुंडप्पा" भी निकलता। नाम तो उसका नरसिंह था, पर वह इतना मोटा था कि उसके साथी उसे "गुंडप्पा" ही कहते थे। उसका गणेश से विचित्र सम्बन्ध था। वह उसको चाहता भी था और उससे चिढ़ता भी था। उनमें मैत्री थी और होड़ भी। पर, दोनों सीता को भक्ति की दृष्टि से देखते। जहाँ सीता होती, वहाँ वे दोनों भी होते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नरसिंह ग्राम के सबसे अधिक प्रभावशाली परिवार का था। सिवाय उसके उस गाँव में उसके परिवार का अब कोई न रहता था। सब विजयनगर में जा बसे थे। उसके पिता, विजयनगर के राजा देवराय के महल में कोई छोटा-मोटा काम करते थे। कभी-कभी या तो वे गाँव आ जाते, नहीं तो गुंडप्पा ही उनको देखने चला जाता। यदि गणेश का साथ न होता, या सीता का सम्पर्क न होता, तो शायद वह भी गाँव छोड़कर विजयनगर में, अपने परिवार के साथ ही रहता।

सभी को आश्चर्य था कि सीता क्यों इतनी जल्दी यूँ गाँव से निकली थी। जरूर कोई बात होगी। उसे कुछ भान हुआ होगा।

तब तक सीता नाले के किनारे, ढाक के नीचे, एक पत्थर पर लहँगा समेट कर बैठ गई थी। उसके सामने एक चौड़ा-सूखा नाला था। सुबह की धूप में पत्थर चमक रहे थे। रेत चमक रही थी। बदली छाई थी और हवा बह रही थी। ढाक के पत्ते चामर करते से प्रतीत होते थे। वह चुप थी। तनी-सी बैठी थी।

गणेश वगैरह भी उसको घेर कर बैठ गए। गणेश ने पूछा, "सीता, तुमने बताया नहीं कि तुम इतने पहले क्यों चली आई?"

"गणेश, मुझे ऐसा लगता है कि आज हमारी पहाड़ी पर हमला होगा… और…।"

"तो तुम क्यों चली आई? हम हैं न? हम भरसक उनका मुकाबला करेंगे। अगर यही बात है, तो तुम्हें घर बैठना चाहिए।"

सीता मुस्करा दी, कुछ न बोली।

"कुछ दिन पहले ही तो वे आए थे, अब आकर करेंगे भी क्या? यहाँ कोई फसल-वसल तो है नहीं अब?"

"फसल के लिए थोड़े आते हैं वे? आ जाते हैं, इसलिए जाते-जाते फसल ले जाते हैं, तुम इतना भी नहीं समझते।" गुंडप्पा ने हँसते हुए कहा। यह सुन कर सीता की मुस्कराहट भी खिल-खिलाहट में खिल गई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"चुप भी रह, फिर गाँव में वे लूटेंगे क्या? हम रहते हैं यहाँ और खाना विजयनगर से आता है। इतनी सारी लूट-खसोट के बाद हमारे घरों में लूटने के लिए बाकी ही क्या रह गया है?"

"हूँ।''''" सीता कुछ न बोली, शायद वह उसको सुन भी न रही थी।

"और मन्दिर? हाथ लगाएँगे, तो फिर मन्दिर के पत्थर यूँ लुढ़केंगे कि वे उनके नीचे ढेर हो जाएँगे। एक बार मुँह की खा चुके हैं, दुबारा हमला करने की हिम्मत न होगी।

"हूँ..." सीता सिर हिला रही थी। पर, कुछ कह न रही थी।

"तुम्हारी फूफी भी, बाबा कहते हैं, एक दिन यूँ नीचे आई और सल्तनत के सिपाही उसको उठाकर ले गए। तुम वापस चलो सीता, यहाँ क्या करोगी तुम?"

"तुम्हारे होते क्या कोई सीता को उठाकर ले जा सकेगा?" गुंडप्पा ने गणेश की पीठ थपथपाते हुए कहा। वह हँसा। सीता भी हँस पड़ी।

"तू चुप भी रहता है कि नहीं?''''सीता'''': " कहते-कहते गणेश रुका। उसे दूरी पर कहीं धूल दिखाई दे रही थी। फिर बोला, "सीता, तुम उठो; पहाड़ी पर जाओ। जाओ भी न, वे लुटेरे आते दिखाई दे रहे हैं। जल्दी करो।"

सीता मुस्करा दी, पर वह अपनी जगह से हिली नहीं।

"गुंडप्पा देखता क्या है, बना न धुआँ—जल्दी कर।" गणेश ने उससे कहा। सबने मिल-मिलाकर गीली लकड़ियों से आग बनाई और धुआँ ऊपर उठने लगा। धुएँ का ऊपर उठना था कि पहाड़ी पर से रहे-सहे लोग, जिसके हाथ में जो आया, उसे लेकर भागा-भागा चला आया और नाले के किनारे, जैसा कि वे अनुभव से सीख गए थे, एक तरह की मोर्चाबन्दी करने लगे।

"सीता, तुम एक तरफ दूर हट जाओ।" गणेश ने कहा,। पर, सीता ने उसकी परवाह न की और वह वहीं खड़ी धुएँ की ओर देखती रही।

"सीता को सबेरे ही पता लग गया था कि ये लोग आज हमला करेंगे, तभी तो वह आई है।" गुंडप्पा पेड़ के तने के पीछे खड़ा होकर फुसफुसाने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लगा। अगर उसका वश चलता, तो वह शायद पहाड़ी की ओर भाग जाता। लोग अचम्भे में थे।

लुटेरे पास आते जा रहे थे। सीता उनको देखकर मुस्कराती खड़ी थी। ग्रामवासियों का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। मगर, वह ध्यानस्थ-सी थी। उसकी आँखें खुली थीं, पर ऐसा नहीं प्रतीत हो रहा था कि वह किसी को देख रही है।

अभी लुटेरे नाले से कुछ दूर थे और तेजी से आते मालूम होते थे कि आसमान फट-सा पड़ा। मूसलाधार वर्षा होने लगी। मरुस्थल लुढ़कने लगा। देखते-देखते नाले में बाढ़ आ गई। लुटेरे भींगे-भींगे दाँत मींचे-मींचे, घोड़ों को एड़ लगाते आगे आते जाते थे। पर उनके घोड़े उस भयंकर वर्षा में अकड़ से रहे थे।

"अरे, इतने सारे लोग! दो-ढाई सौ, हम पचास-साठ, क्या मुकावला करेंगे इनका?" गुंडप्पा भय से काँपता-काँपता गणेश के कान में कह रहा था।

लुटेरे नाले के पास आए। घोड़ों को नाले में बढ़ाने की कोशिश की। पर, वे हिनहिनाकर पीछे हटने लगे। वर्षा के रुकने के आसार न थे और नाले का बहाव भी भयावह था। झाड़-झंखाड़ बहे जा रहे थे।

"अरे, वह लड़की मुस्करा रही है, पकड़ो उसे।" उनमें से एक ने कहा और आगे बढ़ने की कोशिश की। उसने नाले में पैर रखा ही था, कि वह फिसला, झाड़-झंखाड़ों ने उसे आगे धकेला। थोड़ी देर बाद वह कराहता-कराहता किनारे लगा और छटपटा कर ठंडा हो गया। उसे किसी साँप ने डँस लिया था।

घोड़े इतनी दूर भाग गए थे कि लुटेरे उनको काबू में न कर पाए। वे वापस नहीं आए।

"चमत्कार, चमत्कार!" गणेश चिल्लाया और सब सीता की ओर इस तरह देखने लगे, जैसे वह कोई अद्वितीय देवी हो और यदि आज वह वहाँ न होती, तो क्या उत्पात मचता कहना मुश्किल था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीता भींग गई थी। उसके कपड़े अंग-अंग से चिपक गए थे और वह मुस्कराती जाती थी। जब वर्षा रुकी, तो वह पैर पटकती, सिर हिलाती और गुनगुनाती हुई पहाड़ी की ओर चली। निश्चिन्त, संतुष्ट, जैसे वह जिस कार्य पर आई थी, उससे निवृत्त हो गई हो। और ग्रामवासी कृतज्ञता में, आश्चर्य में, उसके पीछे जुलूस में चले जा रहे थे।

● ● ●

: ३ :

अगले दिन सीता मन्दिर के प्रांगण में गई और नीम के नीचे बैठ गई। उसके साथ उसकी सहेलियाँ बैठी कोई खेल खेल रही थीं। खेल में इतनी मगन, मस्त, शायद वह भूल भी न चुकी थी कि कल जो कुछ हुआ था, उसमें उसका कितना हाथ था।

बाबा बहुत चिन्तित थे और प्रफुल्लित भी। प्रफुल्लता हो या चिन्ता, पुरानी देहतोड़ खाँसी उनका पीछा न छोड़ती लगती थी। गणेश उनके पास बैठा था। पिछले दिन इतनी बारिश हुई थी कि घर में बहुत कुछ भींग-भाग गया था। सीता उन कपड़ों को बाहर पत्थरों पर सुखा कर पास के मन्दिर से उनको कभी-कभी देख ले रही थी और गणेश बाबा के पैर दबा रहा था।

"बेटा गणेश, तुम इस सीता से कहो न कि यूं पहाड़ी के नीचे न जाया करे।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"मैंने कहा भी बाबा, पर वह सुनती ही नहीं है। मगर हाँ, अगर वह कल न जाती, तो इस पहाड़ी पर लाशों की दूसरी पहाड़ी-सी वन जाती।" गणेश बोला।

"हाँ, हां, सुना है। सव परमेश्वर की कृपा है। कृपा क्यों न हो बेटा, सारा-का-सारा परिवार ले गया है, कुछ तो दे इस विचारी लड़की को, नहीं तो जीएगी कैसे ? कोई तो सहारा होना चाहिए।"

"हूँ, "गणेश अचरज से बाबा की वात सुन रहा था।

"भगवान् का उस पर हाथ है, उसमें दैवी शक्ति है।"

"हाँ, बाबा।"

"फिर भी स्त्री को पुरुष का साथ चाहिए ही। आजकल तो दिन चैन से काट रहे हैं, पर कौन जाने आगे क्या हो !"

"हाँ।"

"सीता जीने के लिये क्या काम करेगी ? क्या कर सकती है ? सब भगवान् के भरोसे छोड़ दिया है, पर भगवान् ने भी तो शायद हम लोगों को छोड़ रखा है।"

"हाँ, बाबा।"

"समय ने ऐसा पलटा खाया है कि मत पूछो, हमेशा हमले होते रहते हैं। लूट-खसोट, मार-झपट, हत्याएँ, अत्याचार, न मालूम क्यों ? पता नहीं, किसी को मारकर क्या पाते हैं ये लोग ? खा भी तो नहीं सकते हैं। धर्म को ही नष्ट करना है तो धर्मावलम्बियों को नष्ट कर देने से तो वह नष्ट नहीं हो जाता। प्राणी मर जाते हैं, पर ज्ञान तो नहीं मरता। यह क्या कल का धर्म है ? न मालूम कब से चला आ रहा है कितने ही मर गए, पर धर्म तो नहीं मरा।"

"हाँ, बाबा।"

"जमीन-जायदाद की ही भूख है, तो इस पाशवकिता, जोर जबर्दस्ती की क्या जरूरत है ? कुछ भी हो, बेटा दिन बहुत बुरे हैं—हाँ, हाँ।" बाबा कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोचता-सोचता खाँसकर कमान-सा हो गया। कितनी ही बातें अन्दर थीं, जो उसके निर्बल, दुबले-पतले शरीर को भीतर-ही-भीतर निचोड़ सी रही थीं। वह कुछ कहना चाहता था, पर खाँसी उसको कहने न देती थी। गणेश ने उसकी छाती दबाते हुए, उसको लिटा दिया।

"बहुत कुछ लुट गया है, लुटाकर भी हम नहीं लुटे हैं, मगर सीता के पास ऐसी चीज है, जो अगर लुट गई, तो हम सब बरबाद हो जाएँगे, समझो बेटा?"

"जी।"

"इन लोगों ने स्त्रियों की इज्जत-आबरू भी नहीं छोड़ी है। जब से हमारी सीता सयानी हुई है, मेरी चिन्ता और बढ़ गई है, और वह ऐसी नादान, निश्चिन्त घूमती फिरती है, जैसे अब भी वह छोटी सी मासूम लड़की हो।"

"और बेहद जिद्दी भी है बाबा। जो बात मन में आ जाती है, उसको पूरा करके दम लेती है। किसी की नहीं सुनती।"

"हाँ, बेटा, अब यह नाले तक भी जाने लगी है। सुना है, उन लुटेरों की नजर इस पर पड़ गई थी, उन्होंने गन्दे इशारे भी किए थे। गन्दी बातें बकी थीं·······।"

"हाँ।"

"यानी जब वे अगली बार आएंगे और आएँगे अवश्य, तो हमारी सीता को पकड़ ले जाने की कोशिश करेंगे। मेरी बेटी, उसकी फूफी को भी तो ये हत्यारे इसी तरह उठा ले गए थे। लड़के चले गए, मैंने सोचा था कि लड़की के सहारे जीवन काट दूँगा, पर·······।" बाबा की आँखें सजल हो आईं, आवाज थर्रा गई।

"और सीता यह नहीं समझती है बाबा, मैंने उससे कहा भी।" गणेश कह रहा था।

"जिन्दगी अभी बाकी है, और यह एक ही सहारा है सीता·······।"

"हूँ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"मैं चाहता हूँ कि सीता का विवाह हो जाए, तब मैं चला भी गया तो वह आराम से रहेगी, कम-से-कम मुझे जीते जी, यह तसल्ली तो रहेगी कि मैंने अपना कर्तव्य किया।"

बाबा कहते-कहते रुके। शायद उनको सीता की आवाज़ सुनाई पड़ गई थी।

बाबा जानते थे कि गणेश सीता को चाहता है, उसने एक-दो बार कुछ ऐसा संकेत भी किया था, पर सीता ने कभी कुछ न कहा, जिससे यह मालूम किया जा सके कि वह गणेश के साथ शादी करना चाहती है। उम्र बढ़ रही है, वह अब भी खेल-खिलवाड़ में मस्त रहती है। इतनी समझदार है, पर यह छोटी-सी बात नहीं समझती।........बाबा प्रायः सोचा करते।

"इस कम्बख्त गाँव में स्त्रियाँ विवाह होते ही विधवा भी तो हो जाती हैं ....शायद इसीलिए......." बाबा इधर-उधर देखने लगे। गुंडप्पा घर में आ रहा था।

"अरे गणेश, तुम यहाँ ? मैं तुम्हारे लिए सारा गाँव छान आया।" उसने कहा।

"क्यों ?"

"मैं विजयनगर जा रहा हूँ। तुम भी साथ चलो। यहाँ क्या करोगे ? सीता कह रही है कि जल्दी कोई हमला न होगा। चलो भी।"

"क्यों, अकेले जाते क्या डर लगता है ?"

"हाँ," गुंडप्पा कहने लगा।

"हाँ, अगर शादी नहीं भी करती है, तो हमलोग भी यदि विजयनगर पहुँच गए, तो काफी है.......मैं और सीता भी।" बाबा कह रहे थे और सीता एक हाथ में रस्सी लेकर उछलती-कूदती, गाती-गुनगुनाती अन्दर आई। आते ही बोली, "नहीं बाबा, मैं विजयनगर नहीं जाऊँगी। मैं इस गाँव को, इस मन्दिर को, इस पहाड़ी को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी। मैं कहीं नहीं जाऊँगी, मुझसे जाने के लिये मत कहो। मैं नहीं जाऊँगी तुम भी यहीं रहोगे......।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो लड़की एक क्षण पहले हँसती-हँसती आई थी, उसकी आँखों से अनायास आँसू बहने लगे।

"अच्छा, बेटी, जैसी तुम्हारी मर्जी।"

"अच्छा! मेरे बाबा बड़े अच्छे हैं, अब तुम सोओ।" सीता ने उनको चारपाई पर लिटा दिया, और पैरों पर एक फटी-पुरानी चादर डाल दी।

"मैं बाबा को अकेली इसलिए छोड़ गई थी कि मेरे होते वे सोएँगे नहीं और तुम लोग यहाँ चले आए। बाबा तीन दिनों से सोए नहीं हैं।" सीता ने गणेश और गुंडप्पा से कहा।

"सीता, हम विजयनगर जा रहे हैं, क्या कुछ चाहिए? "गणेश ने पूछा।

"कुछ नहीं," सीता ने कहा। और पिछवाड़े जाकर घर के काम में लग गई। वह काम करती जाती थी और गाती जाती थी। विचित्र अवस्था, विचित्र स्वभाव।

● ● ●

: ४ :

ब्राह्म वेला।

वृद्ध मन्दिर में पूजा कर रहे थे। कोई विशेष अनुष्ठान था। वे कुछ स्वस्थ से प्रतीत होते थे। सीता नीम के नीचे पत्थर के चबूतरे पर बैठी थी। मूक, चकित-सी। किं-कर्तव्य-विमूढ़-सी। उसके सामने लोगों की कतार-सी बँधती जाती थी····रोगी, अपाहिज, लूले, लँगड़े, घायल, जख्मी, अभागों की कतार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न मालूम कैसे आसपास के इलाके में खबर पहुँच गई थी कि सीता में चमत्कार की शक्ति है। एक सामान्य किशोरी के रूप में वह भगवान् की प्रतिनिधि थी। कोई पैदल आया, तो कोई गाड़ी में, कोई किसी सम्बन्धी की पीठ पर। कोई डोली में, तो कोई घोड़े पर। पहाड़ी की तलहटी में काफी गाड़ियाँ जमा हो गई थीं···उस छोटे से गाँव में बड़ी सी भीड़ जमा हो गई। कोई शुभ दिन था और सीता के अनजाने ही वहाँ एक मेला लग गया था।

सीता को उसके वृद्ध बाबा का आदेश था कि वह मौन धारण कर उस चबूतरे पर बैठे। सीता का मन कह रहा था कि वह उठ आए और सहेलियों के साथ खेले। पर वह वृद्ध बाबा की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर पा रही थी। वह भव्य, सुन्दर और गम्भीर दिखाई देती थी। मुँह पर विचित्र आभा, अंग प्रत्यंग पर प्रस्फुटित होता यौवन, आँखों में मादक आकर्षण, गेहुआँ रंग, लम्बी कुंचित केशराशि। वह सर्वांगीण सुन्दरता की कल्पनाकृति लगती थी।

वह कम उम्र की थी, अविवाहित और वहाँ उसे लोग "माँ, माँ" कह कर पुकार रहे थे। उसको क्या मालूम कि जब सहायता, स्नेह, सहानुभूति और प्रेम की आवश्यकता होती है तो हर स्त्री माँ लगती है। वह मन-ही-मन हँस भी लेती। किन्तु, चुप थी।

"माँ, इसकी सन्तान नहीं हुई है। कुछ—।" एक बुढ़िया अपनी जवान बहू को सामने दिखाकर कह रही थी और बहू विचारी लाज के कारण जम सी गई थी। बुढ़िया सीता के पैर पकड़ रही थी और सीता कुछ कह नहीं पा रही थी।

"माँ, इसको मृगी है। न मालूम कहाँ गिरे, कुछ तो—अब हम तुम्हारे भरोसे ही आए हैं," एक और वृद्धा अपने लड़के के बारे में कह रही थी।

"माँ, ये सूखते जा रहे हैं। कुछ खाते भी हैं, तो उल्टी हो जाती है। कितने ही वैद्यों को दिखाया, पर कोई लाभ नहीं हुआ। पाँच साल से यही चल रहा है। न इनको आराम है, न हमको।" एक स्त्री अपने [illegible] पति के बारे में प्रार्थना कर रही थी।

वाल्मीकि विद्यापीठ (काठमाडौं)
१२६९३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीता सिसकने लगी और उसको सिसकता देख बहुत से लोगों की आँखों में आंसू आ गए। वह मौन तो थी ही। इस स्थिति से सहसा वह दुखी भी हो गई।

"माँ, छह महीने या पहले ये लड़ाई में घायल हुए और तब से यह घाव भरा नहीं है, क्या इलाज नहीं करवाया हमने ?" एक युवक अपने मित्र का घाव दिखाने लगा। गले के नीचे, पीठ पर चमड़ी ही न थी। लाल-लाल घाव, जघन्यता और क्रूरता का प्रतीक ! सीता ने आँखें मूँद ली।

"माँ, तुम हमें बस एक बार छू दो, हम ठीक हो जाएँगे। पच्चीस मील से तुम्हारे दर्शन के लिए रेंगता-रेंगता आया हूँ। छू दो न एक बार, मेरा कोढ़ ठीक हो जाएगा।" एक कोढ़ी गिड़गिड़ा रहा था। सीता पथरायी-सी बैठी थी।

"मैंने नहीं दिया है विष, मैं नहीं दूँगी विष। क्या मैं इतनी मूर्ख हूँ कि अन्नदाता को ही विष दे दूँ ? यह और स्त्रियों की साजिश थी। राजा मुझे देख मुस्काराए नहीं कि वे जलने लगीं। राजा के कान में फूँक दिया कि मैंने उन्हें विष देने की कोशिश की थी। हैं, हैं……"। ये शब्द कहती हुई एक सुन्दर युवती जोर से हँसने लगी। वह विक्षिप्त युवती, कभी हँसती, कभी कराहती, कभी बाल नोंचती और कभी मुक्का दिखाती।

सीता का हाथ पकड़कर वह उसे मनाने लगी, "तुम कह दो कि मैंने विष नहीं दिया है। लोग कहते हैं कि तुम सब कुछ जानती हो, जानती हो न कि मैंने विष नहीं दिया है ? कहो, सब विश्वास कर लेंगे, वे राजा भी करेंगे,….।" वह स्त्री इतने जोर-जोर से चिल्लाकर कह रही थी कि सब की नजरें उसी पर थीं। और सब स्तब्ध खड़े थे। सीता यह सब न देख सकी, उसने आँखें मींच लीं।

उसने पहिली बार मनुष्य के दुःख और क्लेश के इतने रूप देखे थे। उस छोटी सी ग्रामीण कन्या ने कभी कल्पना भी न की थी कि संसार में इतने दुःख और कष्ट भी हो सकते हैं, और वह अचम्भे में थी कि ये सब मुझे देखने क्यों आए हैं ? मुझ में क्या है ? क्या मैं औरों से भिन्न हूँ ? क्या कभी मेरी हालत भी ऐसी होगी। मैं इनके कष्ट कैसे दूर कर सकती हूँ ? भगवान् ने, जिसने इतना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुछ दिया है, क्या इतने कष्ट भी दिए हैं ? मैं क्या जानूँ ? हे भगवान् ! उसके मन में ये प्रश्न उठते आते थे। वह व्याकुल थी, विह्वल। उसकी व्याकुलता उसके चेहरे पर साफ-साफ झलक रही थी।

"बेटी, किसी ने कहा था कि तुम उस दिन जान गई थी कि हमला होनेवाला था और तुम जो नाले के किनारे बैठी, तो उसमें एकाएक बाढ़ आ गई और वे लुटेरे उलटे पैर भाग गए। तुम्हारे हाथों में महिमा है, बेटी। जरा इस लड़के को आशीर्वाद दो कि चिरंजीवी हो। यह मेरा आठवाँ लड़का है, इसके पहले सातो गुजर गए हैं।" एक अधेड़ स्त्री कह रही थी। सीता फूट पड़ी जैसे उसके परिवार की स्थिति किसी और परिवार की भी हो। वह बिलखने लगी।

मंदिर में घंटी बजी। सीता के बाबा लड़खड़ाते हुए, सीढ़ियों पर उतर कर आए। उनके हाथ में थाल था और उसमें कपूर जल रहा था। उन्होंने थाल को ऊपर उठाया और कुछ जपा, फिर सीता के माथे पर टीका किया। बोले, "बेटी, ये सब तुमको देखने आए हैं, और तुम यूँ बिलख रही हो। जो कुछ तुम्हें सूझता है, कहो।"

"मुझे कुछ नहीं सूझ रहा है। मुझे जाने दो बाबा !"

"हूँ।"

"मुझमें कोई शक्ति नहीं है। भगवान् मुझे बताते हैं और मैं सुनती हूँ। उनका कहा करती हूँ, मेरे पूछने पर तो भगवान् नहीं बताएँगे। मैं आप सबके बारे में पूछ रही हूँ। मुझे वे अभी कुछ नहीं बता रहे हैं। मैं भी आप ही की जैसी हूँ।"

"नहीं, नहीं।" लोग बोल उठे।

"यदि भगवान् ने आपमें से किसी के कष्ट-निवारण के लिए कुछ बताया तो मैं कह दूँगी। सब भगवान् की इच्छा है।"

जब सीता यह कह ही रही थी, तो यह कल्पना करना भी कठिन हो रहा था कि वह छोटी-सी निरीह लड़की है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"भगवान् आप सबका कल्याण करे।" उसने हाथ जोड़कर कहा और खड़ी होकर मन्दिर की ओर देखने लगी। उसके साथ और लोग भी उसकी ही तरह हाथ जोड़कर खड़े हो गए। "जय महादेव!" वे जय-जयकार करने लगे। सीता ने अपने बाबा से कहा, "बाबा, अब तुम आराम करो।" और पास खड़े लोग सोचने लगे, जैसे उनको यह सलाह दी गई हो। वे वहीं बैठ गए और सीता बाबा को अपने साथ लेकर घर चली गई।

● ● ●

: ५ :

विजयनगर बहुत समीप था और उस छोटे-से गाँव के कुछ लोग वहीं काम-धन्धा किया करते थे। वे सवेरे चले जाते और शाम को लौट आते थे। सात-आठ मील का फासला। तुंगभद्रा कोई खास गहरी न थी, पर पानी अकुलाता-लहराता-सा तेज चलता था। पत्थरों के बीच, लम्बे तख्त लगाकर पुल भी बना लिया गया था।

आसपास पत्थरों की खानें थीं। वहाँ से पत्थर विजयनगर के मन्दिरों के निर्माण के लिये भेजा जा रहा था। उससे पहले तुंगभद्रा नदी से पत्थरों की छोटी-सी नहर बनवाई गई थी। जहाँ पहले पत्थर-ही-पत्थर दिखाई देते थे, अब वहाँ हरियाली दिखाई देती थी। कई जगह अच्छी फसलें होने लगी थीं। गाँव के बहुत से लोग वहीं बस गए थे।

जब कभी विजयनगर में कोई उत्सव होता, तो यह छोटा-सा गाँव बिल्कुल खाली हो जाता। पर, सीता तब भी गाँव न छोड़ती। पहाड़ी के नीचे वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाले तक तो हो आती थी, पर कभी तुंगभद्रा पारकर विजयनगर नहीं गई थी, यद्यपि बाबा ने उसको ले जाने का कई बार प्रयत्न किया था। गणेश ने भी दो-चार बार विजयनगर ले जाने की कोशिश की थी।

उस दिन विजयनगर में कोई उत्सव था। सारा नगर पथों, वीथियों और वाटिकाओं में एकत्र था। इस प्रकार उल्लास व्यक्त किया जा रहा था, मानों देश पर कोई आपत्ति ही न हो। सब निश्चिन्त से थे। प्रफुल्ल और सुखी।

विजयनगर का नवनिर्माण इस तेजी से हो रहा था कि कहीं बेकारी न थी। जिनके पास कला थी, उनका राजा और प्रजा दोनों ही पोषण कर रहे थे। विजयनगर निरन्तर बढ़ता जा रहा था और उसके साथ अनेक काम-धन्धे भी।

स्नानशाला के पास काफी भीड़ थी। राजा देवराय वहाँ जल-क्रीडा के लिए आ रहे थे। उनके अन्तःपुर की कितनी ही स्त्रियाँ उनकी प्रतीक्षा में वहाँ पहले ही उपस्थित थीं।

राजा बहुत रँगीले समझे जाते थे। हास-विलास से अपना मनोरंजन तो करते थे, किन्तु उनमें शौर्य और साहस भी कम न था। जब महल से उनकी सवारी निकलती थी, तो विशाल जनपथ के किनारे लोग खड़े हो जाते थे। गणेश और गुंडप्पा भी वहाँ खड़े थे।

गुंडप्पा का पिता भीमन्ना, राजा की पूजा के लिए, प्रतिदिन प्रातः फूल वगैरह पूजा-द्रव्य ले जाता था। वह बिना रोक-टोक के राजमहल में प्रवेश कर सकता था। उम्र काफी थी। बचपन और जवानी उसने राजाओं की सेवा में काटी थी। देवराय के पूर्वजों के लिए भी वह फूल ले जाया करता था। राजा भी उसका लिहाज करते थे। कभी-कभी उसकी बात सुनते थे। वह बड़ा आदमी भले ही न हो, पर कद्रदाँ उसकी भी कद्र करते थे।

राजमहल के पास उसको एक छोटा-सा मकान मिला हुआ था। पास में ही एक पहाड़ी थी, जिस पर नृसिंह की मूर्ति थी। सटकर हम्पी का मन्दिर था और उससे सटा था, तुंगभद्रा का तट। वह धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। पहले जब स्वास्थ्य ठीक था, तो कभी-कभी गाँव हो आता था। पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिछले कुछ दिनों से उसने वहाँ जाना ही छोड़ दिया था। जब गुंडप्पा ने आकर सीता के चमत्कार के बारे में बताया, तो वह वहाँ जाने के लिए उतावला हो उठा। वह अत्यन्त प्रभावित था! सीता के बाबा उसके मित्र थे और उनसे मिले काफी अर्सा हो गया था।

विजय-नगर में अन्यत्र भी सीता के बारे में बातें हो रहीं थीं। कहीं आश्चर्य प्रकट किया जा रहा था, तो कहीं सन्तोष। कहीं कुतूहल, कहीं भक्ति। जब यह मालूम हुआ कि रोगग्रस्त, पीड़ित और त्रस्त लोग दूर-दूर से उसके दर्शन के लिए जा रहे थे, तो कई लोग विजयनगर का वार्षिकोत्सव छोड़कर सीता के गाँव जा रहे थे। सुना गया कि पहाड़ी की तलहटी में इतने सारे तम्बू लग गए थे, जैसे किसी छावनी ने वहाँ पड़ाव किया हो। इस बारे में भी विजयनगर में काफी कुछ कहा जा रहा था।

गणेश जब कभी विजयनगर जाता, तो गुंडप्पा के यहाँ ही रहता। उसकी कोई हैसियत न थी। न कोई साख और न कोई धाक। कोई निश्चित काम न था, न पहुँच ही। पर, उसको भी काफी लोग जानते-पहचानते थे। जब कभी कोई सीता के बारे में पूछता, तो उसकी छाती गर्व से फूल जाती, उसे अचरज होता क्या हमारी सीता ही है, जिसके बारे में इतनी बातें हो रही हैं? फिर सन्तुष्ट होता, "क्यों न हो, हमारी स्त्री कोई साधारण स्त्री नहीं है।"

भीमन्ना उनके साथ गाँव जाना चाहता था। वह बहुत देर तक उनकी प्रतीक्षा करता रहा। पर, जब वे दोनों न आए, तो वह स्वयं ही निकल पड़ा।

चाँदनी रात थी। समशीतोष्ण ऋतु। वह अकेला ही लाठी टेकता हुआ निकल पड़ा। सारा नगर अलंकृत था। वारांगनाएँ सज-धजकर संगीत के साथ नृत्य कर रही थीं। मनोहारी दृश्य था। भीमन्ना ने इतने उत्सव देखे थे कि उसके लिए नए उत्सवों में कोई विशेष आकर्षण नहीं रह गया था।

वह चलते-चलते नदी के तट तक पहुँचा। उसने देखा, वहाँ बहुत सारे लोग उसके गाँव की ओर जा रहे हैं। इससे पहले, इतने सारे और इतनी तरह के लोगों को एक साथ गाँव की ओर जाते हुए उसने कभी नहीं देखा था। —"तो लड़के का कहना ठीक है?" वृद्ध को ढाढ़स हुआ। उसे अफसोस भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुआ कि वह अपने साथ अपनी पत्नी को नहीं ले जा रहा है। लड़का आवारा हो गया था, इसलिए यह जानना उसके लिए मुश्किल था कि वह कब झूठ बोल रहा है और कब सच। एक बार खुद देखने के बाद, वह अपनी पत्नी को ले जाना चाहता था।

रात बढ़ती जाती थी। साथ लोग थे, फिर भी रास्ता कम होता नजर न आता था। उतावलेपन में, फासला कुछ-कुछ अखर भी रहा था। थकान थी। पैर घसीटते-घसीटते, जैसे-तैसे तुंगभद्रा के पास पहुँचा। वहाँ, गणेश और उनका लड़का नरसिंह पुल पार करने में यात्रियों की मदद कर रहे थे।

न मालूम वे कब किस रास्ते वहाँ पहुँच गए थे। बूढ़े का हौसला बढ़ा। यात्री नदी पार जाते और जोर से सीता का जयजयकार करते। गणेश और गुंडप्पा ने जब वृद्ध को उस पार पहुँचा दिया, तो अनायास उसके मुख से भी "जय सीता" निकल पड़ा। सब पुलकित थे।

जब वे गाँव पहुँचे, तो पूर्व में उषा लजा-सी रही थी। लाल, लाल।

● ● ●

: ६ :

पहाड़ी की तलहटी से, चोटी के मन्दिर तक सीढ़ियाँ जाती थीं। सीढ़ियों पर भीड़ थी। सिवाय मेले-उत्सवों के वहाँ कभी किसी प्रकार की भीड़ न देखी जाती थी।

गुंडप्पा का पिता सीढ़ियों के पास एक पत्थर पर बैठ गया। भीड़ क्या थी, भक्तों का ऊर्ध्वगामी प्रवाह था। और, यह सब गाँव की एक छोटी-सी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नादान लड़की के कारण, जो कभी उसकी गोद में खेली थी। अगर कुछ ऐसी भक्ति पहले होतीं तो, वृद्ध ने सोचा, उसे गाँव छोड़कर विजयनगर जाने की नौबत ही न आती।

आस-पास दो-तीन तम्बू थे, उनमें पूजा-द्रव्य बेचे जा रहे थे। उस सुनसान गाँव में दुकानों का होना भी आश्चर्यजनक था। खासी चहल-पहल थी। ठीक तरह सबेरा भी न हुआ था कि इतनी भीड़ जमा हो गई थी।

वृद्ध ने सिर उठाकर देखा, चबूतरे पर और भी घनी भीड़ थी। मन्दिर में पूजा हो रही थी। कभी-कभी घंटे बज उठते थे। नीम का पेड़ जो हरा-भरा रहता था, करीब-करीब गंजा-सा हो गया था। उसके पत्ते इधर-उधर पड़े हुए थे। उन्हीं को बिस्तर बनाकर कुछ अपाहिज लेटे हुए थे।

स्पष्ट था कि वह भीड़ पूजा-पाठ में इतनी व्यग्र न थी, जितनी कि सीता के दर्शनार्थ। वह मन्दिर के अन्दर अपने बाबा के साथ पूजा कर रही थी। सब उसके दर्शनों के लिए आकुल थे। वृद्ध का आश्चर्य निरन्तर बढ़ता जा रहा था। जब वह धीमे-धीमे लकड़ी टेकता, ऊपर चबूतरे पर पहुँचा, तो पूजा समाप्त हो गई थी और एक ऊँचे मंच पर सीता ध्यानस्थ बैठी थी। लोग उसको निहार रहे थे। उत्कण्ठित भयभीत नेत्र। वह मौन थी। वृद्ध जान गया था कि वह तब बोलती न थी और जब बोलने के लिए लोगों ने ज़िद की, तो उसने हँसकर कह दिया था, "बोलने के लिए है ही क्या ?"

लोग उठकर, हाथ पसारकर सामूहिक रूप से याचना करते से प्रतीत होते थे। सीता हाथ से संकेत करके पद्म का चित्र सा बना रही थी। "भगवान् को मानो", फिर यूँ चुप हो गई; मानो जता रही हो प्रवचन से लाभ ही क्या ?

भीमन्ना को आता देख सीता उसके पास गई, उसके चरण स्पर्श किए और उसको अपने बाबा के पास ले गई। बाबा पूजा समाप्त करके, अपने घर एक खाट पर बैठे, यूँ मुँह हिला रहे थे, जैसे कुछ खा रहे हों—वार्धक्य उन्हें खाता-सा लगता था। भीमन्ना को देख वे उठे और उसको गले लगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिया। प्यार से पूछा, "आज शानदार विजयनगर छोड़कर इस सुनसान पहाड़ी पर कैसे चले आए हो ?"

"यह पहाड़ी अब सुनसान कहाँ है ? यहाँ तो बड़ी रौनक है।" भीमन्ना ने कहा।

"रौनक ? दुख और क्लेश की रौनक, कष्ट और पीड़ा की रौनक—" सीता बोली।

"यह सब तेरी वजह से ही तो है बेटी !" भीमन्ना ने कहा।

"दु:ख और क्लेश ? नहीं बाबा।"

"नहीं बेटी, रौनक। बड़ी तेज हो गई, बेटी।" भीमन्ना के अधरों पर मुस्कराहट खिली और सीता खिलखिला उठी।

"बेटी, मैं तुम्हें ही देखने आया हूँ।"

"मुझे ?"

"हाँ, तुम तो विजयनगर आओगी नहीं, मैंने सोचा कि मैं ही देख आऊँ।"

"मैंने दो-तीन बार सीता से कहा भी कि वह विजयनगर चले, पर उसने माना नहीं।" बाबा ने कहा।

"यहाँ बड़ा काम है बाबा !"

"हाँ ठीक है, अच्छा काम है, यही तो देखने आया हूँ। लड़का कह रहा था, अगर वह अकेला ही कहता, तो शायद मैं इतनी जल्दी न आता। सारा विजयनगर कह रहा है, तुमने चमत्कार किया है, यह तुम्हारा चमत्कार ही था, बेटी कि सरहद के पार से डाकू और लुटेरे पहाड़ी के इतने पास आए और गिरते-पड़ते वापस भाग गए।"

"मेरा क्या चमत्कार है बाबा ? सब भगवान् की कृपा है।"

"सब कुछ भगवान् की ही कृपा है, वह कृपा कुछ ही दिव्य पुरुषों और स्त्रियों द्वारा ही अवतरित होती है। यह हमारा विश्वास है, धर्म और देश का विश्वास है। तुम वह दिव्य स्त्री हो, शक्ति हो।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"नहीं तो बाबा, मुझे नहीं मालूम। मैं तो एक मामूली सी लड़की हूँ। यह सब मुझे नहीं मालूम, नहीं बाबा," कहती-कहती झेंप वह गई।

"यदि तुम दिव्य शांति न देती, तो इतने लोग यहाँ दूर-दूर से क्यों आते ?"

"मेरे पास थोड़े ही आए हैं ? ये तो भगवान् के दर्शन करने आए हैं।"

भीमन्ना मुस्करा दिया। बोला, "कई कहते हैं, उनकी बीमारियाँ ठीक हो गई हैं। बाकी को यह धीरज है कि उनकी भी बीमारियाँ ठीक हो जाएँगी। और तो और, विजयनगर के राजमहल में की स्त्री थी, जो कुछ दिन पहले पागल थी। अब वह यूँ रहती है, जैसे कभी पागल ही न हुई हो। वह कह रही है कि वह एक मन्दिर बनाएगी, जिसमें तुम्हारी मूर्ति रखेगी।"

सीता हँस पड़ी, "शायद अभी उसका पागलपन ठीक नहीं हुआ है।"

"सचमुच तुमने इतने सारे लोगों को कैसे राहत दी ?" भीमन्ना ने पूछा। उसकी उत्सुकता बढ़ती जाती थी।

"मैंने कुछ भी नहीं दिया। मैंने सिर्फ इतना ही कहा कि इस पहाड़ी के पीछे एक बावड़ी है, उसमें नहाओ और मन्दिर की परिक्रमा करके भगवान् का स्मरण करो, बस।"

"किस बावड़ी में ? वहीं जहाँ हमारी गाय-भैंसें पानी पिया करती थीं ? बावड़ी तो पहिले भी थी, वहाँ का पानी पीकर तो बीमारियाँ आती थीं, जाती नहीं थीं। तुम्हारा प्रभाव—"

"मेरा नहीं, बावा, भगवान् का—"

"तुमने इन अपाहिजों को कहा होगा कि बावड़ी में नहाकर नीम के पत्तों पर लेट जाओ—।"

"हाँ, हाँ, बेचारे पत्थरों पर कैसे सो सकते हैं ?"

"हाँ, बेटी, श्रद्धा और भक्ति से बड़ी-बड़ी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ हल हो जाती हैं।"

"हाँ बाबा, पर........"सीता ने कुछ सोचा तो, पर यह न सूझा कि कैसे कहा जाए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"श्रद्धा से बड़े काम हो जाते हैं, पर कर्म को देखकर ही वह उपजती है। तुम इतनी श्रद्धा लोगों में पैदा कर सकी, क्या यह कम चमत्कार है ?"

"बाबा, तुम जरा इनसे बातें करते रहो, मैं खाना तैयार कर दूँ।" कहती हुई सीता भीमन्ना से बोली, "बाबा आज आपका भोजन हमारे यहाँ है।" और इधर-उधर देखती हुई घर के अन्दर चली गई।

"देखा भीमन्ना, लड़की सयानी हो गई है। इसका विवाह हो जाए, तो मैं राम-राम करता आराम से चला जाऊँ।"

"मगर इतने लोग········?" भीमन्ना ने कुछ सन्देह व्यक्त किया।

"हाँ, हाँ, जो शक्ति भगवान् ने इसे दी है, क्या वह विवाह करने मात्र से खतम हो जाएगी ?" सीता के बाबा ने पूछा।

"हाँ, नहीं, क्या मालूम ?" भीमन्ना सीधा उत्तर न दे सका।

"एक ही चिन्ता मुझे दिन-रात सताती रहती है कि कहीं यह भी बेटी की तरह········।" बाबा की आवाज रुँध गई।

"अरे, कब तक उसी के लिए रोते रहोगे·······तसल्ली कर लो, बेटी गई तो सीता-जैसी पोती भी तो मिल गई।"

"हाँ, हाँ, अगर तुम्हारी नजर में कोई लड़का आए, तो········।"

"अच्छा देखेंगे, पहले मैं भी जरा बावड़ी तो देख आऊँ।"

"क्यों बुढ़ापा दूर करके जवानी चाहते हो ? राजमहल के आदमी हो न, सौ बरस की भी जवानी मिले, तो काफी नहीं है।" बाबा ने हँसते हुए कहा।

भीमन्ना भी हँसा, "बेटी खाना बनाएगी और इस बीच में बावड़ी देख आऊँगा।" कहता-कहता वह उठा और बावड़ी की ओर चल दिया।

● ● ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: ७ :

उस दिन प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में ही सीता पहाड़ी से नीचे उतर आई। जहाँ देखो, वहीं अपाहिज, विकलांग, बीमार और उनके भाई-बन्धु रह रहे थे। उन सब के लिए पहाड़ी पर जगह न थी। जैसे-तैसे रोज बावड़ी और मन्दिर तक हो आते थे, और रात दिन पहाड़ी की ओर मुँह किए, कुछ प्रार्थना किया करते थे, जैसे वह कोई मूर्ति हो।

सीता सदा इतनी व्यस्त रहती थी कि कहीं आने जाने का समय ही न था। इसलिए जब वह नीचे गई, तो सबको आश्चर्य हुआ, कुतूहल भी। वह तलहटी में एक पत्थर पर बैठ गई। उसके सामने भी भीड़ थी और दूर वह नाला जहाँ कभी आततायी आए थे और उल्टे पाँव लौट गए थे।

मौसम भी आज कुछ उसी दिन की तरह था। बदली थी, हवा भी दम भरती-भरती रुक-रुक कर चल रही थी। सीता को वहाँ बैठी देख कई आपत्ति की आशंका करने लगे थे। बिना कारण वह नीचे न आएगी, यह उनका विश्वास था।

गणेश और गुंडप्पा उसके आस-पास थे। वे बातें कर ही रहे थे कि पहाड़ी पर कई लोग लट्ठ वगैरह लेकर तेजी से भागते आते दिखाई दिए। वे सीता के पास आकर इस तरह रुके, जैसे उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हों।

"वे फिर आ रहे हैं।" उन्होंने सीता को सूचना दी। वे सभी अनुमान कर सकते थे कि वे कौन हैं—घुड़सवार, उत्तर-पच्छिम में जबर्दस्त धूल उड़ रही है। बड़ी तादाद में आते मालूम होते हैं।

"हूँ, मैं जानती थी।" सीता ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या तभी तुम आई हो ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"हाँ, भगवान् है, तैयार हो जाओ। मैं भी नाले की ओर चलती हूँ।" सीता यह कहकर उस जगह की ओर बढ़ी, जहाँ वह पिछली बार बैठी थी। नाले के किनारे, ढाक के नीचे।

"तम्बू वगैरह देखकर ये लोग शायद सोच रहे हैं कि यहाँ कोई छावनी है। इससे पहले कि यहाँ की सेना कुछ करे, वे उसे नष्ट कर देना चाहते हैं। कौन जाने इन लोगों के मन में क्या है?" सीता ने कुछ आश्चर्य दिखाया और कुछ खेद।

नाला सूखा था और आसानी से पार किया जा सकता था। आकाश में बादल थे, पर पानीवाले नहीं। वर्षा के कोई आसार न थे। तो इस बार किस प्रकार रक्षा होगी? सब त्रस्त थे। भयभीत भी। पर कुछ कुछ आश्वस्त भी; क्योंकि सीता वहाँ थी।

वे अपाहिज जो मुश्किल से चल पाते थे, न जाने उनमें कहाँ से इतना उत्साह आ गया था कि वे सोचने लगे कि सीता की जान ही खतरे में है और उसकी रक्षा करना उनका कर्तव्य है। वे रेंगते-लँगड़ाते, गिरते-उठते नाले के किनारे इकट्ठा हो गए। हो-हल्ला शुरू हो गया। वह शान्त प्रान्त जयजयकार से गूँजने लगा।

घुड़सवार नाला पार करके आए। कोढ़ी बीमारों को लाठी लिए लड़ने के लिए तैयार देख वे एक बार खिलखिला कर हँस पड़े। बीसियों को मार-काट दिया। जब उनमें से कुछ उतरकर सीता के पास आए, तो देखा वह सैकड़ों अपाहिजों से घिरी हुई है। भयावना दृश्य था। दयनीय, घिनौना, कँपा देने वाला दृश्य!

उन आततायियों ने शायद इस दृश्य की कल्पना भी न की थी। वे नहीं जानते थे कि पिछले कुछ मासों से उस पहाड़ी की बस्ती, बीमारों की बस्ती हो गई है! उनकी कातिलाना हरकतें देखकर, बीमारों का भागना तो दूर, वे उनकी ओर इस तरह आ रहे थे, जैसे वे मौत चाहते हों और हत्यारे जल्लाद हों। उनके लिए जिन्दगी से छुटकारा पाने का शायद यह एक और रास्ता था। ये मदोन्मत्त आततायी भी इसका अनुमान कर सकते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे धीमे धीमे लौटने लगे। बीमारों की बस्ती में भी उन्होंने कुछ लूट-खसोट की। कई को मार दिया और इस तरह चले गए, जैसे मैदान मार लिया हो।

जहाँ तम्बू वगैरह थे, वहाँ अब खून के नाले बह रहे थे। गिद्ध मँडरा रहे थे। नज्जारा युद्धभूमि का सा था। सीता ने यह देख आँखें मूँद लीं। वह अपने से पूछती लगती थी........"क्या यह सब यहीं होना था ? क्यों यह होता है ? क्यों वे लोग चले गए ? भगवान्, तेरी कृपा निस्सीम है।"

वह जल्दी-जल्दी सीढ़ियों पर से होती हुई मन्दिर के चबूतरे पर पहुँची और मन्दिर की मूर्ति के सामने साष्टांग गिर-सी गई। उसको साष्टांग नमन करते देख, और लोग भी साष्टांग नमन करने लगे।

वे मरते-मरते घायल होकर भी, सीता का जयजयकार कर रहे थे। इस आक्रमण और उसके उपसंहरण में भी उसकी दैवी शक्ति की झाँकी देख रहे थे। सीता का प्रभाव उन लोगों पर एकाएक द्विगुणित-सा हो गया।

और सीता समझ ही न पा रही थी कि यह सब क्यों हो रहा था। कहीं यह सब मेरे ही कारण तो नहीं हो रहा है ? उसने सोचा, यदि वे मुझे ही ले जाना चाहते हैं, तो ले जाएँ। पर, इतने निस्सहाय, रोगियों को उन्होंने क्यों मारा ? यदि मैं चली गई, तो क्या वे यहाँ के लोगों पर हमला करना छोड़ देंगे ? भगवान् ! उनको ज्ञान दो। इससे वह अधिक सोच भी न सकी।

वह अपने घर गई। नेत्रों से आँसू छलकते जाते थे। उसके बाबा उसे खोजते हुए लाठी टेकते-टेकते मन्दिर की ओर आ रहे थे, पर वार्धक्य उनको चलने न देता था। वह उनके अंग-अंग को रोकता सा लगता था।

सीता उनको देख फूट-सी पड़ी। वह उनको साथ घर ले गई और चारपाई पर लिटा दिया। फिर स्वयं दूर गायों के पास बैठकर बिलख-बिलख कर रोने लगी।

वह रो रही थी और उसके भक्त कह रहे थे, "देवी सीता का यह एक और चमत्कार है।"

● ● ●

Nepal Sanskrit ... Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: ८ :

भीमन्ना को पक्का विश्वास हो गया कि सीता में निस्सन्देह कोई दैवी शक्ति है। जब तक वह इस पहाड़ी पर है, उसे कोई नहीं जीत सकता। और जब तक यह पहाड़ी अजेय है, तब तक विजयनगर भी अजेय है। यही उसके श्रद्धापूर्ण चिन्तन का निष्कर्ष था।

वे अपाहिज जो बिना कराहे, आहें भरे न उठते थे, न चलते थे, कैसे सीता की रक्षा में जूझ पड़े थे? कैसे उन मुर्दों में भी अकस्मात् प्राण का संचार हो उठा था। यदि वे इस प्रकार उठ खड़े हुए थे, तो सीता के सन्देश पर ही। एक छोटी सी लड़की बिना दैवी शक्ति के क्या यह सब कुछ कर सकती है?

भीमन्ना ने सोचा कि वह विजयनगर छोड़कर फिर गाँव आ जाए और रहा सहा जीवन यहीं लोगों की सेवा में काट दे, सीता की सहायता करे। उसको ऐसा लगा, जैसे उसकी सहज भक्ति को सहसा कोई उचित आराध्य मिल गया हो।

वह विजयनगर से सन्देह और अविश्वास लेकर यहाँ आया था और श्रद्धा और भक्ति से यहीं रह गया। इस बीच राजप्रासाद से दो बार बुलावा भी आ गया था। पर, वह न जा सका। वह जाना भी नहीं चाहता था।

भीमन्ना के विचारों ने करवट ली—क्या लाभ यदि सीता अरण्यपुष्प की तरह इस कुग्राम में विकसित हो और कुम्हला जाए, राज्य की श्री राजा की आँखों से दूर रहे। राजा भी तो जानें कि उनके साम्राज्य की रक्षा एक दैवी शक्ति कर रही हैं, जो एक ग्रामकन्या के रूप में यहाँ रह रही है। जिसका नाम सुनकर दूर-दूर से लोग आ रहे हैं, उसके बारे में राजा को भी तो पूरा-पूरा वृत्तान्त मिले। यह कार्य मेरे सिवाय कौन कर सकता है? मैं इस ग्राम का निवासी हूँ, मेरी पहुँच राजमहल तक है। मुझे राजा से सीता के बारे में कहना ही होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस निश्चय के बाद भीमन्ना उस गांव में न रह सका। वह विजयनगर की ओर निकल पड़ा। मार्ग में उसे कितने ही लोग मिले, जो सीता के दर्शन करने जा रहे थे। वह सुनसान रास्ता, जहाँ कभी एक-दो से अधिक आदमी नहीं दिखाई देते थे, रौनकदार हो गया था। लोगों ने पत्थरों पर अपने-अपने नाम खोद दिए थे। किसी-किसी ने उन पर सीता का चित्र तक बना दिया था। कहीं-कहीं मूर्ति बना दी गई थी। पेड़ों पर झंडियाँ बांध दी गई थीं। कई जगह तम्बुओं में कुछ पुरोहित बैठ गए थे, जो सीता के नाम पर यात्रियों को प्रसाद बांट रहे थे।

यह सब देख भीमन्ना को अचरज हुआ। उसे भय भी हुआ कि अगर लोग इस तरह आते-जाते रहे, तो राज्य की ओर से कभी-न-कभी कोई कर भी लगा दिया जाएगा।

वह विजयनगर गया तो कई लोगों ने सीता के बारे में कई तरह के प्रश्न किए।

क्या यह सच है कि उनके दर्शन मात्र से सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं ?

क्या उनके स्पर्श मात्र से रोग-निवारण हो जाता है !

विकलांग भी ठीक हो जाते हैं ?

सुनते हैं, उसको देखते ही वार्धक्य चला जाता है ?

क्या वह बड़ी सुन्दर है ?

भीमन्ना उनके प्रश्न सुनकर मुस्करा दिया।

शाम का समय था। फूल लेकर भीमन्ना महल में गया। आज महल भी खाली-खाली-सा था। राजा न हो तो महल भी सूना-सूना-सा लगता है। मालूम हुआ कि उस दिन प्रातः ही राजा अपने उद्यान प्रासाद में चले गए थे। वहाँ राजा से मिलना सम्भव न था। वह उनका विनोदगृह था। वह सरोवर के तट पर था। दूर-दूर तक ऊँची दीवारें थीं। कदम-कदम पर पहरेदार नियुक्त थे। अन्तःपुर की स्त्रियों का भी वहाँ जाना निषिद्ध था।

भीमन्ना मन्दिर में गया। वहाँ के पुजारियों को उसने सीता के बारे में बताया। उन्होंने पूछा, "उसकी जाति क्या है ?"

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"वह ग्वालिन है।"

"ग्वालिन ?" उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया। बोले, "और वह मन्दिर के प्रांगण में प्रवचन करती है, उसका परिवार मन्दिर में पूजा करता है ? यह सर्वथा अनुचित है। परम्परा के विरुद्ध है। यह नहीं होना चाहिए।"

"यह हो रहा है, जब ब्राह्मण-पुरोहित भय के कारण मन्दिर छोड़कर भाग आए हो, तब क्या मन्दिर को खण्डहर के रूप में छोड़ दिया जाता ? लुटेरों ने हमला किया और तुम भी अपना लौटाहंडी लेकर यहाँ भाग आए। तुम को शर्म आनी चाहिए। जो काम तुम अपना समझते हो, वह तुमने नहीं किया, वह अब सीता कर रही है—।" जब भीमन्ना ने ऊँची आवाज में कहा, तो वे कुछ और न कह सके। भीमन्ना स्वयं ब्राह्मण था और उसकी अवहेलना नहीं हो सकती थी।

"तो किस पद्धति से वहाँ पूजा हो रही है ?" उन्होंने जानना चाहा।

"मुख्य पद्धति नहीं है, पूजा है। स्मृति नहीं, भक्ति है। जो पद्धति उनको ठीक लगती है, उससे करते हैं।" भीमन्ना बोला।

"अनर्थ हो गया, इसकी शिकायत तो राजा के यहाँ जानी चाहिए। शूद्रों को मन्दिरों में पौरोहित्य करने का कोई अधिकार नहीं है। इन लोगों ने पवित्र मन्दिरों को अपवित्र कर दिया है। शक्ति-भक्ति कुछ नहीं है, आडम्बर है, पाखण्ड है।" वे पुजारी एक स्वर में कहते से लगते थे।

"तुम कर्मकाण्डी लोग यह नहीं समझ सकोगे। मैं स्वयं अपनी आँखों सीता के चमत्कार देखकर आया हूँ। देखते रहना कि उस छोटी-सी पहाड़ी पर इनके लोग पूजने जाएँगे कि इस मन्दिर में भक्तों का आना ही कम हो जाएगा। तब तुम्हारी आँखें खुलेंगी।" कहते हुए भीमन्ना दुखी होकर चला गया।

उसने नहीं सोचा था कि सीता के चमत्कार की इतनी स्वार्थपूर्ण और कुत्सित प्रतिक्रिया होगी। वह जैसे मन-ही-मन बोला, मैंने शायद गलती की कि इन लोगों को मैंने सीता के बारे में बताया। इनका राजा पर बहुत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बोलवाला है। ये सीता के बारे में राजा के कान भरेंगे। यह सब न होता, यदि मैं इनसे कहता ही नहीं। इसके लिए मैं ही जिम्मेवार हूँ। मुझे सीता की रक्षा करनी है और करूँगा।

● ● ●

: ६ :

अगले दिन विजयनगर में एक विचित्र घटना घटी। ऐसी घटनाएँ प्रायः नहीं घटती थीं। और इसलिये जब कभी ऐसी घटना घटती थी, तो गली-गली लोगों का जमघट लग जाता था।

सड़क पर एक अजीब जुलूस-सा निकल रहा था। पाँच-दस लुटेरों को मुँह पर कालिख पोतकर चीथड़े पहनाकर धीमे-धीमे घुमाया जा रहा था। उनमें दो-चार घायल थे, लहूलुहान थे। वे हाय-हाय कर रहे थे। और बाकी शर्म के कारण नीचे सिर किये सरक-से रहे थे। लोग उनको गालियाँ दे रहे थे। कई उन पर थूक भी रहे थे। आततायियों का सार्वजनिक अपमान किया जा रहा था और यह भी कहा जा रहा था कि यह राजा की आज्ञा पर ही हो रहा है।

ये वे ही थे, जिन्होंने पहाड़ी पर पिछले दिनों आक्रमण किया था। उनके वापिस जाते-जाते अँधेरा हो गया था। वे जा रहे थे कि लुटेरों के एक और जत्थे ने इन पर हमला किया। वे इस ख्याल में थे कि ये बहुत कुछ लूट-पाट कर ले जा रहे हैं। हमलावर भी उन्हीं के मजहब के थे। दोनों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दलों में घमासान लड़ाई हुई। कई मारे गए। कई जख्मी हुए। अगले दिन जब गड़रिये उस तरफ गए तो उन्होंने कई को घायल हुए नीचे पड़े कराहते और कई को उनकी रक्षा करते हुए देखा। गड़रियों ने उनको घेरकर पकड़ लिया। वे उनको डाँटते-फटकारते पैदल ही विजयनगर ले गए। चूँकि वे विजयनगर के प्रान्त में पकड़े गए थे, इसलिए उनको यह दण्ड दिया जा रहा था।

सीमावर्ती प्रान्त था। प्रायः वहाँ अराजकता रहती थी। सुल्तान के आदमी वहाँ तक मारने-खसोटने तो आ जाते थे, परन्तु उनको अमन और शासन की उतनी परवाह न थी।

इन आततायियों को घुमाते-घुमाते राजा के महल के प्रथम प्राकार के पास ले जाया गया। वहीं पास ही हस्तिशाला थी। वहाँ उनको राजा के सामने पेश किया जाना था और कहा जा रहा था कि उनको हाथियों द्वारा कुचलवा दिया जाएगा। वहाँ पहले ही से बड़ी भीड़ थी और उससे बड़ी भीड़ उन लोगों के साथ आ रही थी।

महल के पिछवाड़े बड़े-बड़े परदे पड़े हुए थे, मोती की लड़ियों की झालरें लटक रही थीं। जगह-जगह सैनिक खड़े थे। अन्तःपुर की स्त्रियाँ भी परदों के पीछे उपस्थित थीं। परदों के इस तरफ, बीचों-बीच एक ऊँचा मंच था। उस पर रेशम का छोटा-सा शामियाना था। मंच पर सोने का सिंहासन था। राजा देवराय की प्रतीक्षा की जा रही थी।

आततायियों को मंच के सामने लाकर एक पंक्ति में खड़ा कर दिया गया। सबकी नज़रें उन पर केन्द्रित थीं। और वे कांप रहे थे। इस समय ये दिलेर खूँखार लुटेरे मिट्टी के पुतले से लगते थे।

राजा की सवारी आई। राजा सफेद घोड़े पर सवार थे। उनके पीछे दरबारी। इतने लोग थे और इतना कोलाहल हो रहा था पर राजा की सवारी देखते ही सन्नाटा सा छा गया। सब अपनी-अपनी जगह शान्त खड़े हो गए। राजा ने हाथ उठाकर प्रजा के स्वागत को स्वीकार किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशाल सिंहासन पर राजा आसीन हुए। स्वस्थ सिंहपुरुष, गर्वोन्नत ललाट, पुष्ट भुजाएँ, महिमामण्डित व्यक्तित्व। राजा सज्जनों के मित्र और दुर्जनों के शत्रु-से प्रतीत हो रहे थे।

"हम माफी चाहते हैं महाप्रभु!" आततायी एक साथ हाथ उठाकर विनती करने लगे।

"हम फिर कभी नहीं आएँगे। हमें उस पहाड़ी पर हमला नहीं करना चाहिए था। जब जव हमने हमला किया है तब-तब कुछ-न-कुछ हुआ है। हमलों के बाद कितने ही बीमार होकर मर गए, लेकिन हम बेअक्ल, बदतमीज बाज न आए।

"हूँ।" राजा इस प्रकार सिर हिला रहे थे, जैसे किसी उड़ती उड़ती जानकारी को जरूरी सवूत मिल गया हो।

"उस पहाड़ी पर देवी है। उसी का शाप है कि हमारे लोगों ने ही हमें मारा, हम गड्ढे में जा गिरे। अब कान पकड़ते हैं महाराज, हम उस तरफ कभी न जाएँगे।"

"कौन है वह देवी?" राजा ने पास खड़े मन्त्रियों से पूछा ही था कि दर्शकों के एक भाग ने एक स्वर में कहा, "सीता, सीता देवी।"

राजा को आश्चर्य हुआ। भीमन्ना जो दर्शकों में खड़ा था, पुलकित हो उठा। पर पुजारीवर्ग की भृकुटियाँ तन गईं।

"मुझे बताया गया है कि तुम में सुल्तान के एक रिश्तेदार भी हैं। हैं?" राजा ने गम्भीर स्वर में पूछा। वे एक दूसरे को देखने लगे; जैसे कोई अत्यन्त गोपनीय भेद खुल गया हो।

"हुजूर, मैं नजदीकी रिश्तेदार तो नहीं हूँ, मगर शाही महल में मेरा आना जाना जरूर है।"

"हूँ।"

"यही सीता को पकड़कर, सुल्तान की आरामगाह में ले जाना चाहता था।" गणेश और गुंडप्पा उसको देखकर फुसफुसाने लगे। औरों को अपनी ओर घूरता देख, उन्होंने बातें करना वन्द कर दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"जो अपमान तुम्हारा किया गया है, वह काफी है। तुम माफ किए जाते हो। पर हमारे राज्य में तुम कहीं भी नहीं रह सकते। भविष्य में उस पहाड़ी के पास फिर देखे गए, तो मौत की सजा दी जाएगी।" राजा यह कहकर मंच से उतरे और परदों के बीच में से अन्दर चले गए।

प्रेक्षक कुछ निराश हुए। वे आततायियों को हाथियों द्वारा कुचले जाते हुए देखना चाहते थे। उन्होंने यह भी कल्पना नहीं की थी कि सुनवाई इतनी जल्दी समाप्त हो जाएगी। राजा दयार्द्र थे, क्षमाशील थे। किन्तु, उन्होंने कल्पना भी न की थी कि वे उन दुष्टों को भी माफ कर देंगे, जिन्होंने बीमार, अपाहिजों, बेकसूरों और निहत्थों को मौत के घाट उतार दिया था। पर भीमन्ना प्रसन्न था कि राजा इस प्रकार सीता के नाम और प्रभाव से परिचित हो गए थे। उसका काम हल्का हो गया था। वह यह भी अनुमान कर सका था कि यदि अपराधी सीता का नाम न लेते, तो अवश्य हाथियों द्वारा कुचलवा दिए जाते। यह भी सीता के नाम का ही प्रभाव था। वह यह सोच कर फूला न समाता था।

● ● ●

: १० :

राजा जब अन्तःपुर में पहुँचे, तो वहाँ भी सीता की चर्चा थी। यूँ तो जब से वह पागल स्त्री ठीक हुई थी, तभी से उसकी चर्चा हो रही थी, पर वे तब तक उसकी बात को पागल स्त्री का पागलपन समझती आ रही थीं। उसके कहने-सुनने पर उन्होंने उसके मन्दिर के लिये धन भी दिया था, पर आज विश्वास हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा अपने विश्रामकक्ष में पहुँचे ही थे कि वह स्त्री खुशी-खुशी आई। उनके पास बैठकर धीमे-धीमे कहने लगी, "आज आपको मालूम हुआ सीता का प्रभाव? देवी-देवताओं के इस देश में सीता देवी है; लक्ष्मी है, सरस्वती है, सभी कुछ है।"

"हूँ।"

"देखने में देवी है, बहुत सुन्दर, एक बार जो नज़र पड़ती है, तो सहसा हाथ जुड़ जाते हैं। वह भगवती है, भगवान् ने क्या शक्ति दी है उसको, उसकी शक्ति का मैं ही प्रमाण हूँ। मैं कभी अन्तःपुर से पागल करार कर निकाल दी गई थी, और अब उसकी कृपा से सब ठीक है।"

"हूँ।"

"आज विजयनगर यदि सुरक्षित है, तो उसका कारण आपकी शक्ति तो है ही, पर सीता की दैवी शक्ति भी कम नहीं है। वह आपके साम्राज्य की भाग्य-लक्ष्मी है—।" राजा अन्यमनस्क से मुस्करा दिए। क्षमा भरी, अविश्वास-भरी मुस्कराहट।

"मैं तुंगभद्रा के तट पर उसके लिये एक मन्दिर बनवा रही हूँ, कृतज्ञता में। आप ही का दिया हुआ उस पर खर्च कर रही हूँ। मैं चाहती हूँ कि वह मन्दिर सीता की दैवी शक्ति के अनुरूप सुन्दर हो। आप कृपया सहायता कीजिए।"

"सहायता मिल जाएगी। जल्दी क्या है।" राजा कुछ सोचते से लगते थे। अपराह्न में वे प्रायः उदास से हो जाते थे। प्रातः का कार्यभार उनको थका देता था, और अभी सायंकाल के विनोद-विलास प्रारम्भ न हुए थे। सोचा था कि सुनवाई में काफी समय लग जाएगा, समय तो नहीं लगा पर वे वहाँ से मन में कोई ऐसी चीज ले आए थे, जिसके बारे वे सोचते लगते थे। विमला की बातों से उनके विचार घने बादल से मन में घुमड़ने लगे। वे और उलझ गए।

राजा पूजा-पाठ करते थे, पर वह एक आवश्यक कर्मकाण्ड-सा था। स्वभाव से वे विलासी, भावुक प्रकृति के, रसज्ञ, रसिक थे। स्त्री उनके लिए केवल विलास की वस्तु थी, आनन्ददायिनी। स्त्री में देवी का रूप धुंधला था। वह काम-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वासना की पूर्ति का साधन मात्र थी। सीता के बारे में जब सुना तो कुछ-कुछ अविश्वास हुआ और कुछ-कुछ उसके प्रति आकर्षण भी।

वे इस तरह की बातों पर अधिक देर सोच भी न पाते थे। व्याकुल-से थे। मदिरा-सेवन का समय न हुआ था। कक्ष में बैठना भी नहीं भा रहा था। वे उठे और प्रासाद के पिछवाड़े के उद्यान में घूमने लगे। उद्यान से मार्ग तुङ्गभद्रा-तट तक, मन्दिर तक चला गया था। राज-परिवार इसी रास्ते पूजा के लिए मन्दिर जाया करता था।

वे फूल-पौधों को देखते-देखते कुछ ही दूर गए थे कि भीमन्ना हाथ में फूलों का गुच्छा लिए उनके सामने आया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। राजा को पुष्पगुच्छ समर्पित करके मार्ग से हट गया।

"अरे कहाँ थे तुम ? स्वास्थ्य तो ठीक है ? महारानी कह रही थीं कि उनको पूजा के लिए दो दिन से ठीक फूल भी नहीं मिले थे। नगर में नहीं थे क्या ?"

"जी नहीं, गांव गया हुआ था।"

"तुम्हारे गाँव में ही वह लड़की है न ?" राजा ने इस प्रकार पूछा जैसे कुछ जानते ही न हों।

"जी हाँ, यह उसी का चमत्कार है कि वह पहाड़ी है और उस पर मन्दिर है। हमलावर मन्दिर उजाड़ गए थे, उसके परिवार ने उसको बनवाया और आप जानते ही हैं उस पहाड़ी का क्या महत्व है।"

"क्या चमत्कार किया उसने ?"

"महाप्रभु, उसको मालूम हो जाता है कि कब आक्रमण होनेवाला है। वह स्वयं खाली हाथ शत्रु को देखने चली जाती है और शत्रु उसे देखते ही पीछे हट जाते हैं। कभी वर्षा तेज होने लगती है, तो कभी अपाहिज उनको मार भगाते हैं।"

"हूँ।"

"कितने ही लोग उसके दर्शन के लिए आ जा रहे हैं महाप्रभु ! पहाड़ी के पीछे एक बावड़ी है। किसी जमाने में वहाँ ठीक पानी भी न होता था

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और जो होता था, उसे डंगर पिया करते थे। अब उसी पानी में लोग स्नानादि करते हैं, उनकी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। वे अपने को धन्य मानते हैं। महाप्रभु, यह सब मैंने स्वयं अपनी आँखों देखा है। यह सब उस भगवान् का आशीर्वाद है, और इस स्त्री का चमत्कार।"

"कौन है यह ? इसके माँ-बाप कौन हैं ?"

"माँ-बाप दोनों ही मार दिए गए हैं। बाबा के यहाँ पल रही है। गड़रिये लोग हैं, महाप्रभु की ही प्रजा हैं। छोटी उम्र की है, सोलह-सत्रह की, बिल्कुल नादान, मासूम।"

"बहुत सुन्दर भी है ?"

"जी।" भीमन्ना ने कह तो दिया, पर राजा का यह प्रश्न उसे पसन्द न आया, क्योंकि वह उनके स्वभाव से परिचित था।

"जो राज्य का इतना उपकार कर रही है, राजा का भी तो उसके प्रति कुछ कर्तव्य है।" राजा के मुख से ये बातें अनायास निकल गईं; यद्यपि वे ऐसा कहना नहीं चाहते थे।

"जी, आपकी कृपा है।"

"हम उसे देखना चाहते हैं। एक बार उसको हमारे दर्शन के लिए ले आओ।"

"जैसी आपकी आज्ञा महाप्रभु !"

बातें करते-करते वे उद्यान पार करके तुङ्गभद्रा तट तक मन्दिर के प्रांगण में आ गए थे। पुजारी उनका स्वागत करने के लिए वहाँ उपस्थित थे। वे सम्भवतः सीता के बारे में उनसे निवेदन करते यदि भीमन्ना उनके साथ न होता, और यदि सभा में सीता की बात न उठी होती। वे राजा को नमस्कार करके, पंक्ति में खड़े हो गए और कोई मन्त्र-पाठ करने लगे।

राजा उनको देखते-देखते मन्दिर के गोपुर से इस प्रकार चले गए, जैसे मन्दिर का निरीक्षण करने आए थे।

● ● ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: ११ :

देवराय रँगीले, विनोदप्रिय, आखेट के शौकीन और स्वतन्त्र स्वभाव के थे। राजा की जिम्मेदारियों के वावजूद उनका बचपना न छूटता था।

वे प्रातःकाल शिकार के बहाने निकल गए। साथ में उनके दो-चार मित्र और अंगरक्षक थे। राजा ने अपना वेश बदल रखा था। न किरीट था, न राजकीय पोशाक ही। रईसों के सादे लिबास में थे घोड़े पर सवार।

वे तुङ्गभद्रा के तट पर गए। फिर आगे बढ़ते रहे। पुल पार करके सीता के गाँव पहुँचे। पहाड़ी के नीचे उन्होंने अपना घोड़ा छोड़ दिया। सीढ़ियों से पैदल मन्दिर के पास गए। तब तक लोगों का आना-जाना प्रारम्भ हो गया था।

वे चबूतरे पर बैठ गए। उनको बताया गया कि सीता मन्दिर के अन्दर ध्यानस्थ है। वे कुछ देर इधर-उधर देखते रहे। एक चट्टान पर पैर रखकर जो उन्होंने उत्तर की ओर नजर दौड़ाई, तो वह नाला दिखाई दिया जो सूख-सा गया था। उसके किनारे के ढाक ही उसके अस्तित्व की सूचना देते थे। उसके पार मीलों तक धुँधली सपाट जमीन.......यह वही क्षेत्र था, जहाँ पहले कई बर्बर युद्ध हुए थे। कभी विजयश्री विजयनगर के राजाओं को मिली थी, तो कभी उनके शत्रुओं को। देवराय ने जाने क्या सोचकर आँखें मूँद लीं। शायद उनको कोई दुःखद स्मृति सताने लगी थी।

वे जब पीछे हटकर मन्दिर के चबूतरे पर आए और नीम के नीचे खड़े हुए, सीता हाथ जोड़े, मन्दिर के पाट खोलकर बाहर आई। वहाँ जो भी था वह अपने स्थान पर हो गया, जैसे कोई देवी प्रकट हुई हो।

देवराय भी बहुत प्रभावित हुए। वे उसका अनिन्द्य सौन्दर्य, तेज, कान्ति और आकर्षण देखकर स्तब्ध रह गए। उसके सौन्दर्य पर वे मुग्ध हो उठे। एक सामान्य ग्राम्य बाला में इस प्रकार का स्वर्गिक सौन्दर्य देख वे चकित थे। वे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसे देखते खड़े थे कि वह धीमे-धीमे चलती आई और नीम के पास ही एक छोटी सी वेदी पर आकर ध्यानस्थ-सी बैठ गई। उसे राजा की उपस्थिति का लेश मात्र भान न हुआ।

सीता के भक्त उसके चारों ओर घेर कर बैठ गए। वह मौन थी। लोग चुप थे। पर, ऐसा लगता था, जैसे हर कोई उसके साथ किसी प्रकार के मूक सम्भाषण में व्यस्त था। राजा का आश्चर्य बढ़ता जाता था।

वह कुछ देर योंही बैठी रही, फिर अचानक उठी, एक तरुणी की तरह, इठलाती इठलाती, सीढ़ियों पर से उछलती-कूदती अपने झोपड़े में चली गई। राजा उसे देख दंग खड़े थे। सीता के भक्त इस प्रकार बिखर गए, जैसे दर्शन समाप्त हो गया हो। राजा भी सीढ़ियों पर से उतर गए। अब उनके मन में सीता-ही-सीता थी। उस कामुक राजा ने अपने जीवन में कितनी ही स्त्रियाँ देखी थीं,·········मनमोहनी, तनोल्लासिनी, अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त आकर्षक, पर सीता का सौन्दर्य कुछ और ही था। उसका यौवन भी उन सबों से भिन्न था। राजा के लिए यह एक अपूर्व अनुभव था। बतानेवालों ने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि सीता इतनी सुन्दर है। किसी ने कहा ग्वालिन है, किसी ने कहा जादूगरनी है, किसी ने कहा कि उसमें दैवी शक्ति है, पर किसी ने यह न कहा कि उसमें अद्भुत सौन्दर्य है।

यहाँ आकर मैंने अच्छा किया। राजा ने अपने को आश्वस्त किया। वह तब तक अपने घोड़े के पास पहुँच गए थे। वे तुरन्त विजयनगर की ओर जा सकते थे, पर उन्होंने पहाड़ी की परिक्रमा करने का निश्चय किया। पहाड़ी के चारों ओर लोगों ने जगह-जगह ठिकाने बना लिए थे। कहीं-कहीं गन्दगी भी जमा हो गई थी। न खाने-पीने की सुविधा थी, न आने-जाने की। सीता कोई भी हो ग्वालिन हो या छलना या जादूगरनी, लोग आ-जा रहे हैं, तो उनके रहने-सहने का प्रबन्ध करना मेरा कर्तव्य है,·······एक क्षण राजा ने सोचा। उनकी धार्मिकता, कभी-कभी इस प्रकार भी व्यक्त हो जाती थी।

पर थोड़ी देर बाद उनके विचारों ने एक और मोड़ ली।····तब तक घूमघाम कर वे तुंगभद्रा के पुल तक आ गए थे। सोचा—अगर यहीं सब सुविधाओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की व्यवस्था कर दी गई, तो सीता विजयनगर नहीं आएगी। और विजयनगर में ये सब सुविधाएँ हैं ही। कितने ही मन्दिर हैं। पर क्या भगवान् ने इसको इतना आकर्षण, इतना सौन्दर्य इसीलिए दिया है कि वह मन्दिरों की मूर्ति पर चढ़ा दिया जाए। नहीं······

राजा अन्यमनस्क से घोड़े पर सवार धीमे-धीमे चलते जा रहे थे। मन आन्दोलित हो रहा था—मेरे महल में भी तो मन्दिर हैं, यदि यह सच है कि जिस राज्य में वह रहेगी, उस राज्य की विजय होगी, तो फिर वह मेरे ही महल में क्यों न रहे। विजयश्री मुझे मिलेगी, मैं भी तो युद्ध की सोच रहा हूँ। विजयनगर का शत्रुसीमा के इतने निकट होना अच्छा नहीं है। हमें उत्तर में अपनी सीमाएँ बढ़ानी होंगी। वह महल में रहेगी········" राजा ने घोड़े को एड़ मारी और वह सरपट दौड़ने लगा।

"भक्ति अच्छी है, भगवान् अच्छे हैं, पर मनुष्य का जीवन भी तो कुछ है। भक्तिन है तो क्या? रहे, हुआ करे, भक्तिन का भी तो अपना जीवन है। वह क्या रनिवास में एक रानी बनकर नहीं रहना चाहेगी! यदि वह विजयश्री है, तो मैं चाहता हूँ कि वह मेरे साथ रहे, मेरी रानी बने······"राजा यह सोचते-सोचते महल में चले गए।

● ● ●

: १२ :

जब से राजा देवराय सीता को देखकर आए थे, बेचैन और विह्वल से थे। उनके मन में जैसे एक युद्ध, एक आन्दोलन छिड़ा हुआ था। राजकाज या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिवारिक बातें—किसी में उनका मन नहीं लग रहा था। उनको इस मनःस्थिति में देख उनकी रानियों ने कारण पूछा, पर वे कोई उत्तर न दे सके। उनको उस हालत में कभी पहले नहीं देखा गया था। यह मोह था, प्रेम था, स्वार्थ था, या विजयलालसा की पूर्ति का आसान मार्ग·······कुछ भी हो, उनकी मानसिक चंचलता देख, उनकी रानियाँ चिन्तित थीं।

राजपुरोहित ने जब मन्दिर में उपस्थित होने के लिये प्रार्थना की, तब उनका मुखमण्डल कुछ इस प्रकार पीला पड़ गया, जैसे उन्हें अनिच्छापूर्वक मन्दिर जाने के लिए तैयार होना पड़ रहा हो। दरबार में गए तो वहाँ की कार्यवाही में कोई रुचि न ली, चुप रहे। समासद आश्चर्य में थे।

सभा-भवन से उठकर वे हस्तिशाला की ओर गए। उनको हाथियों का बड़ा शौक था। घोड़ों पर तो वे जान देते थे। पर हाथियों के पास भी वे कुछ-कुछ उचटे-उचटे से ही रहे। रनिवास में जा सकते थे, पर वहाँ भी मन न लगा। वहाँ से अश्वशाला गए घोड़े पर सवार होकर उन्होंने फिर सीता के पास जाना चाहा, पर उस चाह को उन्होंने रोक लगा दी। फिर न जाने उनके मन क्या बवण्डर उठा····लोगों ने पहचान लिया तो? सीता की दैवी शक्ति यदि एक सेना को खदेड़ सकती है, तो क्या मुझे नहीं त्रस्त कर सकती? शक्ति दो तरह की होती है, एक वह जो नाश कर सकती है, दूसरी वह जो निर्माण कर सकती है। वह मेरे राज्य में है, मैं उसका राजा हूँ। मेरे राज्य के निर्माण में वह सहायक हो सकती है। होगी, उस मैं पा सकूँ तब न? तभी तो वह मेरी ओर आकर्षित होगी, जब उसे मालूम होगा कि मैं उस पर इस प्रकार मुग्ध हूँ। तो क्या किसी रानी को भेजूँ? लेकिन न जाने, रानियाँ ईर्ष्या में क्या-क्या करें? नहीं, तो मन्त्री को भेजूँ? मन्त्री को पहले ही मेरी स्त्रीलोलुपता पसन्द नहीं है। वह कोई व्यूह रचेगा। अनाचारी, विलासी और अधार्मिक कहेगा। वृद्ध है, कुछ कहा भी नहीं जा सकता। तो किसको भेजूँ? भीमन्ना को ही भेजूँ? पर उसे भी कैसे भेजा जाए? जिसे मैं अपनी रानी बनाना चाहता हूँ, क्या उसे बुलाने के लिए एक साधारण सेवक जाए? नहीं, यह अनुचित है। तो फिर क्या किया जाए? राजा बहुत देर तक इसी उधेड़बुन में पड़े हें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब कभी वे इस प्रकार चिन्तित हो जाते, तो झील के किनारे के महल में चले जाते थे। वहाँ एकान्त था। इधर-उधर के विनोद करने का प्रयत्न करते परन्तु वे उस दिन महल के शयनकक्ष में आँखें खोले छत की ओर देखने लगे, जैसे किसी स्वप्न का मनोहारी दृश्य देख रहे हों, विजयनगर के एश्वर्यमण्डित सौधों की कल्पना कर रहे हों। मगर इन पड़ोसी शत्रुओं का भय जाता रहा, तो विजयनगर में वह संपन्नता आएगी जो पहले कभी कही नहीं थी। विजयनगर की सम्पन्नता ही इसकी शक्ति है········और, सीता····?

यह सोचते-सोचते वे उठे। सेवक को बुलाया और सेनापति को शीघ्र उपस्थित होने के लिए कहा। शयनकक्ष में चहलकदमी करने लगे। क्या यह कोई सामरिक विषय है या निजी मामला है ? विजयनगर के विजय की बात है, इसलिए सामरिक विषय है। हाँ, सेनापति ही यह कार्य कर सकेगा। राजा ने निश्चय कर लिया और वे शयनकक्ष से बाहर, एक अलंकृत पीठ पर आसीन हो गए—कुछ निश्चिन्त से, कुछ आश्वस्त-से।

सेपापति का महल सरोवर तट के समीप ही थी। जब सेनापति आया, तो राजा सोचने लगे, यदि मैं अपने मन की बात कहूँ और उसके मन में अनुकूल प्रतिक्रिया न हुई तो फिर क्या होगा ? मन में प्रश्न उठा कि बात कैसे कही जाए ? राजा का संकोच प्रबल हो उठा। इस प्रकार की झिझक उन्हें पहले कभी नहीं हुई थी। रनिवास की सभी रानियाँ दूतों द्वारा ही यहाँ लाई गई थीं, पर राजा न जाने क्यों अब दूत भेजते हिचक रहे थे। निश्चय करके भी अपना निश्चय बताने में आगे-पीछे देख रहे थे।

आखिर उन्होंने सोचा कि उस पहाड़ी तक चल जाए, छद्म रूप में नहीं, राजा के रूप में ही, सेनापति के साथ, सेना के निरीक्षण के बहाने। हो सकता है, सीता दिखाई दे जाए। हो सकता है कि वह अपनी दैवी शक्ति से अनुमान कर ले कि मेरे मन में क्या है और समस्या स्वतः हल हो जाए। कुछ भी हो, सेनापति भी जान जाएगा कि मैं उसे कहाँ भेजना चाहता हूँ।

"तुंगभद्रा के पास एक पहाड़ी है। उस पर एक मन्दिर है। हम वहाँ जाना चाहते हैं।" राजा ने गम्भीरता से कहा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"महाप्रभु, वहाँ हमने कोई मोर्चाबन्दी नहीं की है, सारी मोर्चाबन्दी दुर्ग के पास ही है। लेकिन जब कभी शत्रु सैनिक उस तरफ आए हैं, न मालूम क्या चमत्कार है कि या तो वे उल्टे पैर भागे हैं या फिर मारकाट दिए गए हैं। मन्दिर है, इसलिये आसपास सैनिक व्यवस्था करना उचित भी नहीं है।" सेनापति ने दबे स्वर में निवेदन किया।

"मैं यह नहीं पूछा रहा हूँ कि वहाँ सैनिक व्यवस्था क्यों नहीं की गई ? मैं तो केवल उस पहाड़ी मन्दिर को देखना चाहता हूँ।"

"जो आज्ञा महाप्रभु !" कहकर सेनापति ने शीश झुकाया।

"सुनो, वहाँ सामन्तों के जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। वहाँ मैं होऊँगा और तुम। साथ में कुछ अश्वारोही अंगरक्षक। हमारे आने-जाने की सूचना कहीं न दी जाए।"

"जो आज्ञा।"

"मैं थोड़ी देर में महल के द्वार पर आ रहा हूँ, तुम वहाँ मिलो।"

"जो आज्ञा, महाप्रभु !"

सेनापति के जाने के बाद महाराजा ने ऐसा अनुभव किया जैसे उनके बन्धन अचानक खुल गए हों।"

राजा शीघ्र ही पहाड़ी तक हो आए, पर सीता के दर्शन न हुए। फलतः उसको देखने की इच्छा और भी उत्कट हो गई।

● ● ●

: १३ :

सेनापति ने प्रातःकाल सीता के पास जाना उचित नहीं समझा। उसे बताया गया था कि सीता मन्दिर में चली जाती है और उसके दर्शनार्थ भारी भीड़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एकत्रित होती है। वह विजयनगर से शाम को निकला। उसके साथ कई घुड़सवार थे, भीमन्ना था। तीन पालकियाँ थीं, उनमें एक खाली थी और दूसरी अमूल्य उपहारों से भरी। राजा उन्हें सीता के लिये भेज रहे थे। तीसरी में अन्तःपुर की तीन स्त्रियाँ थीं।

जब वे विजयनगर के राजपथ से गुजरे, तो अनुमान किया गया कि राजा अपने किसी वन्धु को कहीं भेज रहे हैं। भीमन्ना को साथ देखकर, वे अपने अनुमान को ठीक ही समझ रहे थे।

अपराह्न का समय था। सूर्य अस्ताचल की ओर झुकता जा रहा था। जब वे पहाड़ी के पास पहुँचे, तो गाएँ गांव की ओर जा रही थीं। गोधूलि वेला थी। पहाड़ी पर बिखरी झोंपड़ियों के छप्परों से धुआँ रह-रहकर, अटक-अटक निकल रहा था।

सीता अपने घर में थी, बाबा के पास। बाबा बार-बार खाँस रहे थे। वे दीवार के सहारे पीठ सीधी करके बैठे थे। पर जब खाँसी उठती, तो सारी देह धौंकनी-सी हो जाती और वे हाय-हाय करने लगते। सीता कभी-कभी उनकी छाती सहलाती। प्रायः उस समय दूर से आते हुए दर्शनार्थी उसको देखने नहीं आते थे। कुतूहलवश यदि कोई कभी आता भी, तो पत्थरों के बाड़े से उसे देखकर चला जाता, अक्सर अन्दर कोई नहीं आता था।

सेनापति ने घोड़े पहाड़ी के नीचे छोड़ दिए। पालकियाँ भी वहीं रख दी गई। अन्तःपुर की स्त्रियों के साथ उपहारों को लेकर, वह सीता के घर के पास पहुँचा। जब बाबा ने उनको देखा, तो वे हठीली खाँसी के उपद्रव के बावजूद उनकी अगवानी करने बाड़े के फाटक तक पहुँचे, कुछ-कुछ भयभीत-से। सोचा, राजमहल के लोग किसी मामूली बात के लिए मुझ गरीब के घर नहीं आएँगे, अवश्य कोई बात है। क्या है? वह सोच ही रहे थे कि उनकी नजर भीमन्ना पर पड़ी। उनको ढाढ़स बँधा, भय और संकोच जाता रहा।

फिर सेनापति भी अजीब ढंग से मुस्करा रहा था। अगर कोई राजकार्य होता, तो भला स्त्रियाँ क्यों आतीं? नहीं, डरने की कोई बात नहीं है। हो सकता है, ये भी सीता के दर्शन के लिए आए हों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"बेटी, मेहमान आए हैं, इनके लिए बाहर खाट डाल दो।" बाबा ने सीता को आवाज दी।

"आप उनको क्यों कष्ट देते हैं; हम स्वयं ले आएंगे।" सेनापति के साथ आए हुए सैनिकों ने कहा। घर में ले-देकर कुल तीन चारपाइयाँ थीं और अगर सभी अतिथि उन पर बैठते, तो नई चारपाइयाँ खरीदनी पड़तीं—यह सेनापति अनुमान कर सकता था। उसने सैनिकों को रुकने का संकेत किया—"हम यहीं बैठ जाएँगे—अच्छे साफ पत्थर हैं, स्त्रियाँ अन्दर बैठ जाएँगी। खाट की कोई जरूरत नहीं।"

वह और भीमन्ना दालान के पत्थरों पर बैठ गए। बाबा को अचरज हो रहा था। वे भी ससंकोच वहीं बैठ गए। वह खाँसते जाते थे। वृद्ध को तकलीफ हो रही थी, यह सेनापति सहज ही अन्दाज कर सकता था।

"अरे भैया, तुम अपनी खाट मँगवा लो। खाट पर बैठो, नहीं तो शायद अधिक खाँसोगे। हमारी फिक्र न करो।" भीमन्ना ने कहा और सैनिकों ने उसकी खाट लाकर बाहर रख दी। बाबा उस पर बैठे-बैठे लम्बी-लम्बी साँसें लेने लगा। बोले, "भाई, मुझे माफ करना, मैं इस खाँसी के मारे तंग हूँ, ठीक तरह बैठ भी नहीं पाता हूँ।"

"भाई, अब आराम ही से बैठना, तुम्हारे भाग्य खुल गए हैं।" भीमन्ना ने कहा।

"क्यों, क्या कहीं मेरी बेटी का पता लग गया है?" बाबा ने पूछा।

"नहीं, सीता का नसीब जाग उठा है।" भीमन्ना बोला।

"बाबा, राजा ने एक सन्देश भिजवाया हैं।" सेनापति ने कहा।

"सन्देश और राजा ने? वह क्या भाई?" बाबा ने हर्षमिश्रित आश्चर्य से पूछा?

"वे सीता से सविधि विवाह करना चाहते हैं।" सेनापति बोला।

"राजा, राजा, राजा?" बाबा आश्चर्य से प्रश्न करते-करते जोर-जोर से खाँसने लगे। उन्हें विश्वास नहीं हुआ। वे सहसा निश्चय न कर सके कि क्या कहा जाए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"महाराज ने अपने निश्चय की सूचना देते हुए ये उपहार भेजे हैं, पालकी भी भेजी है। आप दोनों के लिए विजयनगर में महल में व्यवस्था कर दी गई है।" सेनापति ने कहा।

"चलो चलें, लड़की का कल्याण होगा। साथ ही अपना भी उद्धार हो जाएगा।" भीमन्ना ने बाबा को समझाया। पर, बाबा खाँसते जाते थे।

"आप जो कुछ चाहेंगे, सब की व्यवस्था कर दी जाएगी। राजा ने मुझे आज्ञा दी है।" सेनापति ने कहा।

"राजा हमारे माँ-बाप हैं। वे आज्ञा दे सकते हैं कि सीता को उनके महल में भेज दिया जाए। हम उनकी आज्ञा का उल्लंघन भी नहीं सकते, पर वे तो सीता से विवाह करना चाहते हैं। मैंने कहा था न कि सीता भाग्यशालिनी है। है। मान जाओ।" भीमन्ना ने कहा।

"यानी हमको मानना पड़ेगा ?" बाबा ने खांसते हुए पूछा।

"हाँ, मानने में ही लाभ है।" भीमन्ना ने समझाया।

"लड़की सयानी हो गई है, उससे पूछ लेना अच्छा है।" फिर बाबा ने सीता को पुकारा।

बाबा की पुकार पर सीता आकर उनके सामने खड़ी हो गई। बाबा बोले, "बेटी, ये तुम्हारे लिये विवाह का सन्देश लाए हैं, राजा तुमसे विवाह करना चाहते हैं।"

सीता चुप, नीचे मुँह किए जमीन कुरेदनी लगी।

"तुम जैसी भाग्यवालिनी लड़कियाँ कम ही होती हैं संसार में।" भीमन्ना झट बोल पड़ा।

सीता कुछ न बोली।

"जो काम आप यहाँ कर रही हैं, वह वहाँ भी कर सकती हैं—राजा आपके लिए एक मन्दिर भी बनवा रहे हैं।" सेनापति ने कहा। वह बड़े गौर से नतशिर सीता को देख रहा था। सीता के अंग-प्रत्यंग से जैसे एक महान् तेज छिटक रहा था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"इस गंजी और सुनसान पहाड़ी पर कब तक अपना जीवन व्यर्थ करोगी ?" अन्तःपुर की एक स्त्री ने सीता के कान में कहा।

"राजा को क्रुद्ध करना राजद्रोह है।" एक और स्त्री बोली।

"नहीं, मैं राजा को क्रुद्ध करना नहीं चाहती और विवाह की इतनी जल्दी क्या है ? मैं एक गाँव की लड़की हूँ, कभी विजयनगर तक गई भी नहीं हूँ। कहीं आप रास्ता भटक कर तो नहीं आ गए हैं ?" कहती हुई सीता मुस्कराई। वह शायद प्रसंग बदलना चाहती थी।

"बेटी, मान भी जाओ, हम सबका इसी में भला है। तुम्हारा, राजा का, इस राज्य का, इस गाँव का—सभी का।" भीमन्ना ने समझाया।

"यह प्रस्ताव न तो शीघ्र स्वीकार करने योग्य है, न अस्वीकार करने योग्य।" बाबा कह रहे थे कि सीता ने उनके कान में कुछ कहा।

"खैर, हमें सोचने के लिए कुछ समय दीजिए। अभी क्षमा कीजिए।" कहते हुए बाबा ने सेनापति के सामने हाथ जोड़ दिए।

"कहीं राजा बुरा न मान जाएँ।" भीमन्ना ने भय प्रकट किया। सेनापति भी उसकी ओर इस तरह देखने लगा, जैसे वह उसका ही भय व्यक्त कर रहा हो। उसने थोड़ी देर सोचकर कहा "खैर, हम फिर दो-चार दिन में यहाँ आएँगे। इस बीच ये उपहार रखवा लीजिए।"

"उपहारों की क्या आवश्यकता है ? राजा की हम पर कृपा है, यही पर्याप्त है।" सीता ने विनम्र स्वर में कहा।

"बेटी, राजा द्वारा दिए हुए उपहारों को लौटाया नहीं जाता, ऐसा करना राजा का तिरस्कार समझा जाता है।" भीमन्ना ने कहा।

"हाँ, बेटी।" बाबा ने भीमन्ना के कथन का समर्थन किया।

"हमारा घर एक छोटा सा झोंपड़ा है। यहाँ तरह-तरह के लोग आते रहते हैं। यहाँ ये बहुमूल्य चीजें सुरक्षित नहीं रहेंगी। आप कृपया इन उपहारों को मन्दिर में रखवा दीजिए। वहाँ ये सुरक्षित रहेंगी।" सीता ने निवेदन किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"अच्छा।" सेनापति ने कहा। वह कुछ ठीक तरह सोच नहीं पा रहा था। वह स्तब्ध सा था।

सीता स्वयं उनके साथ मन्दिर गई, उपहारों को वहीं रखवाया और नीम के पेड़ के नीचे के चबूतरे तक उन सबको विदा दे भी आई। जब वे लौटने लगे, तो उसने उनको नमस्कार किया। फिर वह धीमे-धीमे अपने बाबा के पास चली आई।

● ● ●

: १४ :

"बेटी, इधर तो आओ। कुछ आराम करो, हमेशा क्या काम ही करती रहोगी? इतनी छोटी उम्र और इतने सारे काम? आओ, बैठो यहाँ इस खाट पर।" कहते हुए बाबा ने सीता को बिठाया, उसकी पीठ थप-थपाई। न जाने उनको क्या याद आ गया था कि आँखों से एकाएक आँसू टपक पड़े। गला रुँध-सा गया।

"क्यों, बेटी, मन्दिर का काम हो गया है न?" बाबा ने कुछ सँभलते हुए सीता से पूछा।

"हाँ, बाबा—।"

"बेटी, शादी के बारे में क्या सोचा?"

सीता इधर उधर देखती, कुछ लजाती, चुप रही।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"तुम शादी कर लो, तो मैं भी शान्ति से आँखें मूँद लूँगा। नहीं तो मरकर भी, तुम्हारे बारे में दूसरे लोक में सोचता रहूँगा।" बाबा बोले।

"ऐसी बात न करो बाबा!"

"बेटी, मेरा सहारा गया तो तुम बेसहारा हो जाओगी। इतना बड़ा परिवार था, पर कोई भी तो बाकी नहीं रह गया और बेसहारा क्वाँरी लड़की कैसे रहेगी?"

"तुम चिन्ता न करो।"—सीता ने कहा, "अभी जल्दी क्या है?"

"फिर भी तुमने कल की बात पर क्या सोचा? मुझे कुछ डर-सा लग रहा है।"

"डर की क्या बात है बाबा! क्या सोचूँगी, कहाँ राजा और कहाँ हम? हम लोग छोटी जाति के हैं, मरते-जीते लोग…और वे महलों में रहनेवाले महाराजा,………पता नहीं, उनको क्या धुन सवार हुई है।"

"नहीं बेटी।" बाबा ने कुछ कहना चाहा, पर न मालूम क्या सोचकर वे चुप बैठ गए।

"आज मुझे देखा है, कल किसी और को देखकर पगला जाएँगे। क्या भरोसा, इन चंचल चित्त राजाओं का? याद है वह पगली रनिवास की, जो यहाँ कुछ दिन पहले आई थी। सुनती हूँ, वह विजयनगर में कोई मन्दिर बनवा रही है और ये राजा मन्दिर के निर्माण के लिए दान दे रहे हैं।"

"यानी अच्छे आदमी हैं।" बाबा ने कहा।

"मैं उस पगली रानी के बारे में कह रही हूँ, राजा के बारे में नहीं। वह रनिवास में ही पगला गई थी।"

"हूँ।"

"पर वे तो किसी और कारण से तुमको अपने यहाँ रखना चाहते हैं।"

"मैं कुछ-कुछ जानती हूँ, वे कारण क्या हैं। न मालूम वे मुझे क्या समझ रहे हैं? मैं तो एक गँवार लड़की हूँ। सब कुछ भगवान् करते हैं, और श्रेय मुझे दिया जाता है। मुझमें कुछ नहीं है। पता नहीं, भक्तों को मुझमें क्यों विश्वास है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"हूँ" बाबा कुछ सोच रहे थे।

"यदि यही कारण है, तो मेरा यहाँ रहना ही अधिक उचित है। कितने ही लोग यहाँ मेरे पास आते हैं। यदि मैं राजमहल में बन्द हो जाऊँगी, तो इन लोगों का क्या होगा ?" सीता कहती-कहती सोचती-सी लगी।

"हूँ।"

"मैं रनिवास में जाकर अपनों से दूर नहीं होना चाहती। मैं यहाँ पली और बड़ी हुई। मैं इस जगह को छोड़कर नहीं जाऊँगी।"

"नहीं बेटी, इस जगह को तो तुम्हें छोड़ना ही होगा। शादी करके तुम्हें कहीं और जाना ही होगा।"

"नहीं बाबा, तुम ही तो कहा करते थे कि शादी बराबर के लोगों में होती है, बिरादरी में। राजा हमारी बिरादरी में नहीं हैं। मैं राजमहल में नहीं रह सकती, पागल हो जाऊँगी। मुझे ये पत्थर, यह पहाड़ी, यह बावड़ी, ये कीकर, ये नाले, सब बहुत पसन्द हैं। इनसे दूर जाऊँगी, तो जिन्दा नहीं रह सकूँगी। यह मेरी शादी नहीं होगी, मौत होगी। मैं नहीं जाऊँगी।"

"पर, राजा ने सन्देश भेजा है।"

"कल सन्देश भेजा था, आज स्वयं आएँगे। मैं उनसे भी यह कह दूँगी। मैं नहीं जाऊँगी बाबा! जब तक तुम मुझे उन्हें सौंपोगे नहीं, तब तक वे मुझे कैसे ले जा सकते हैं? तुम उनकी मानना मत। हाँ, तुम बड़े अच्छे हो बाबा, नहीं न मानोगे उनकी ?" इन शब्दों में सीता अपने बाबा को मनाने लगी।

"पर बेटी, तुम्हारा भला इसमें ही है कि तुम जाओ। शादी करो उनसे......।"

"बाबा इसमें न मेरा भला है, न राजा का और न विजयनगर का। मैं जहाँ हूँ, मुझे वहीं छोड़ दिया जाए। हम दोनों यहीं भले हैं, बाबा।" कहते हुए सीता ने जिद पकड़ी।

"अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्जी। जब तुम इतनी जिद कर रही हो, तो इसमें अवश्य कोई बात होगी।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"बाबा, मैं अभी मन्दिर होकर आती हूँ, तुम्हें कुछ चाहिए तो नहीं ?" उत्तर में जब बाबा ने सिर हिलाया, तो सीता मन्दिर की ओर चली गई। नीम के नीचे चबूतरे के पास खड़ी हो गई। वहाँ दो-तीन आदमी इस तरह खड़े थे, जैसे उसका इन्तजार कर रहे हों। सीता को देखते ही उन्होंने नमस्कार किया।

"हम नाले के पार से आपके दर्शन के लिए आ रहे थे कि हमें एक स्त्री मिली—वह हमें एक बड़े डेरे में ले गई। रात का समय था, हम कुछ घबराए—डेरों से लगता था, जैसे कोई उमराव ठहरे हों और जिस तरह वह स्त्री हमें अन्दर ले जा रही थी, उससे हमारा भय और बढ़ा। पर, डर का कोई कारण वैसा था नहीं। उसकी मालकिन ने हमारा स्वागत किया। और जब हमने बताया कि हम आपके पास जा रहे हैं, तो उन्होंने आपके बारे में पूछ-ताछ की।"

"वे मेरे बारे में जानना चाहती थीं ?" सीता ने पूछा।

"हाँ, वे शायद कुछ कहना चाहती थीं, लेकिन प्रश्न करने के साथ ही वे सिसकने लगीं। वे आप ही की तरह थीं। वे आपके बाबा को बार-बार याद करके हिचकियाँ भरने लगीं। कोशिश की, पर वे अधिक कुछ न कह सकीं। उन्होंने आपके लिए यह उपहार भेजा है।"

उनमें से एक ने एक छोटी-सी पिटारी सीता के हाथ में रखी।

सीता उसे लेकर, खुशी-खुशी, उछलती-कूदती, फिर घर की ओर जाने लगी। पर वह पिटारी, कुछ-कुछ खनखनाने-सी लगी। सीता रुकी। उसने उसे खोला, उसमें सिन्दूर की खाली डिबिया थी। वह चौंकी, कहीं उनके पति मर-मरा तो नहीं गए हैं ? पर उनकी शादी कब हुई ? किससे हुई ? सिन्दूर का महत्व क्या है, बाबा इसे देखकर न मालूम क्या-क्या सोचेंगे ? उनको न बताना ही शायद अच्छा है—वह धीमे-धीमे झूमती-झूमती, घर की ओर चली। पिटारी में एक कागज भी था। वह उसे पढ़ने लगी—

"पिता जी, मैं सुरक्षित हूँ। अभी यही काफी है। मैं इन लोगों के पीछे-पीछे अपने "उनके" साथ आ रही हूँ, नाला पार करके, घर न आ सकूँगी। चूँकि वह इलाका विजयनगर में है, और "उनको" लेकर युद्ध छिड़ सकता है। मेरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साथ इतने लोग हैं कि बहुत कुछ शक किया जा सकता है। मैं नाले से कोई बीस मील दूर, डेरे गड़वाकर रहूँगी। तुम आना, सीता को भी लाना। मैं उसके बारे में बहुत सुन रही हूँ, उसे देखना चाहती हूँ। जब आओ, तो अपने एकतारे पर कुछ गुनगुनाते आना। किसी को कोई सन्देह नहीं होगा। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी।"—तुम्हारी पुत्री।

सीता यह तो जान गई कि यह उस फूफी की ही चिट्ठी है, जिसके बारे में याद करके बाबा रोज आँसू बहाया करते हैं, पर यह सब क्या लिखा है? एक पहेली-सी है। बाबा को क्या बताऊँ? उनका स्वास्थ्य इतना अच्छा नहीं है कि इतनी दूर पैदल, एकतारा लेकर जा सकें। उनको अपार कष्ट होगा।

लेकिन, किसी-न-किसी को तो जाना ही होगा। मैं जा सकती हूँ। पर मुझे वे पहचानेंगी नहीं। जान-पहचान बताऊँगा, तो पहचान जाएँगी।—वे अपने पिता को तो जानती हैं। बाबा कहा करते हैं कि मेरी शक्ल-सूरत बिलकुल उन पर ही है। तो क्या मैं जाऊँ? फिर यह राजा का संदेश......।

वह कुछ निश्चय न कर सकी। घर के बाड़े तक पहुँची ही थी कि वहीं से लौटकर शीघ्र मन्दिर चली गई।

● ● ●

: १५ :

वह दिन भर कुछ अनिश्चित-सी रही। उसने बाबा से कुछ न कहा। बाबा ने भी कुछ न पूछा। अगले दिन सबेरे वह नीम के नीचे गई। पहले भक्तों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निबटी, फिर मन्दिर के चबूतरे की मुँडेर से नाले के पार देखने लगी। कहीं कुछ न था। वह धुँधलापन जो हमेशा वहाँ रहता था, उस दिन न था। उसके मन में रह-रह कर अपनी फूफी की बात उठ रही थी। कभी वह अन्यमनस्क हो जाती, तो कभी मन्दिर के अन्दर जाकर मूर्ति की ओर निहारती, जैसे किसी पथ-प्रदर्शन की अपेक्षा कर रही हो। वह सोचने लगी—मैं अकेली कैसे जा सकती हूँ? अगर गई भी तो यहाँ हो-हल्ला उठेगा। अगर न गई, तो फूफी इतनी दूर आईं और मैं उनसे मिल भी न सकी, न बावा को ही उनके पास ले जा सकी, इसका गिला हमेशा वना रहेगा। कम-से-कम जिसके लिए जिन्दगी भर वे तरसते रहे, जीते-जी, एक बार तो उसे देख लें।

मन्दिर के कार्य से निवृत्त होकर वह घर न जाकर सीधे गणेश के यहाँ गई। वह वाहर जाने को तैयार हो रहा था। सीता को देखकर कुछ मुँह फुलाए रहा।

"अरे, रनिवास की देवी यहाँ कैसे भटक गई?" गणेश ने ताना कसा।

सीता खिलखिलाकर हँस पड़ी।

गणेश को खबर मिल गई थी कि राजा ने सीता के पास विवाह का प्रस्ताव भेजा है। उपहार वगैरह भी भेजे हैं। उसने यह कभी नहीं सुना था कि राजा कोई प्रस्ताव भेजें, और वह किसी के द्वारा अस्वीकृत हो जाए। जब से यह पता लगा था, न वह सीता के घर गया था, न अपने ही घर अधिक देर ठहरा था। खाना खाने के लिए एक-दो बार अवश्य आया, वरना पहाड़ के आसपास निरर्थक घूमता रहता था।

"रनिवास की देवी! रानी! मन्दिर की मूर्तियाँ भी वाहर निकल सकती हैं, पर रनिवास की देवियाँ नहीं।" कहती हुई सीता और जोर से हँसी।

गणेश को नहीं सूझा कि क्या कहे? वह उसकी ओर आश्चर्य से देखता रहा, जैसे किसी निर्दोष को व्यर्थ दण्ड दे रहा हो। अगर सीता रनिवास चली भी जाती, तो उस बेचारी का भी क्या दोष होता? राजाज्ञा कौन ठुकरा सकता है? उसने पूछा, "क्यों सीता, क्या बात है? बाबा की क्या हालत है?"

"बावा तो अच्छे हैं।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"फिर क्या बात है ?"

"एक समस्या आ पड़ी है । मेरी फूफी ने.......।"

"तुम्हारी फूफी ने, मतलब ?"

"हाँ, मेरी फूफी ने किसी आते-जाते के हाथ एक उपहार भेजा है। एक पिटारी, उसमें यह पत्र भी था। वे कहीं नाले के पास बीस मील की दूरी पर आ रही हैं। चिट्ठी बाबा के नाम है। वे तो जा नहीं सकते, बीमार जो हैं। मैं जाने को सोच रही हूँ।"

"अकेली ?"

"अकेली ही जाऊँगी, तुम सब नाराज जो हो। आज तक नाले तक भी कभी अकेली नहीं गई, फिर नाले पार.......।" सीता ने मुस्कराते हुए कहा, जैसे गणेश को मना रही हो।

"अकेली हरगिज मत जाना सीता ! अभी मैं जिन्दा हूँ। जैसे वे लोग तुम्हारी फूफी को उठाकर ले गए थे, वैसे तुम्हें भी उठा ले जाएँगे। नहीं, यह न होगा।"

"तो क्या किया जाए ?"

"पहले मालूम करना होगा कि वे आई हैं कि नहीं, फिर जो कुछ करना होगा, करेंगे। मैं और गुंडप्पा हो आएँगे.......।"

"बहुत अच्छा, यही बात ठीक मालूम होती है।"

"अगर वे आ गई होंगी, तो तुम्हें, जैसे भी उचित होगा, वहाँ ले जाएँगे। बाबा की हालत इतनी खराब है कि वे दो-चार कदम भी बिना लड़खड़ाए नहीं रह सकते। हमारे पास राजा-महाराजाओं के घोड़े तो हैं नहीं।"

"हाँ।" सीता मुस्करा दी। वह उसका कड़वा इशारा समझ सकती थी।

"और जब लोग तुम्हारे बारे में यहाँ पूछेंगे, तो कहला दिया जाएगा कि तुम अपने एक सम्बन्धी के यहाँ चली गई हो।"

"खैर, वह तो बाद में देखा जाएगा। पर, यह काम जल्दी ही हो जाना चाहिए। हो सके, तो आज ही।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"मैं अभी जाता हूँ।" गणेश ने कहा। उसने अपने कन्धे पर कम्बल डाला, डण्डा लिया और लम्बे डग भरता, सीढ़ियों से पहाड़ी के नीचे उतर गया। गुंडप्पा को भी साथ नहीं लिया। अकेले ही नाला पार करके, शत्रु-प्रदेश में प्रवेश कर गया।

सीता तुरन्त घर न गई। उसने सोचा कि बाबा को अगर कुछ शक हुआ, और उन्होंने प्रश्न किए, तो उससे झूठ बोलते नहीं बनेगा। वह काफी देर अपनी सहेलियों के घर इधर-उधर घूमती रही। जहाँ-जहाँ वह जाती, उसका इस प्रकार सत्कार होता, जैसे वह कोई अपरिचित, प्रतिष्ठित देवी हो। मगर कहीं उसका स्वागत हुआ, तो कहीं ताने भी कसे गए। राजा के सन्देश का समाचार क्या गाँव में फैला कि सीता को लगा जैसे उसके और ग्रामवासियों के बीच कोई खाईं बन गई हो। जो वात्सल्य, जो स्नेह, वह अब तक पाती आई थी, देखा वह औपचारिकता में परिणत हो गया था। उसे यह गवारा न था।

वह जिस विषय पर स्वयं नहीं सोच पा रही थी, उसे ऐसा लग रहा था कि गाँव ने पहले ही जैसे उसका निर्णय कर लिया हो। उनका व्यवहार तो कुछ ऐसा था, जैसे उनको इसका गर्व हो कि उनके गाँव की एक लड़की भी रनिवास में रहेगी। सीता को यह सब विचित्र लग रहा था।

उधर राजा भी सेनापति से सीता का उत्तर पाकर और उतावले हो गए थे। पहली बार उनको इस प्रकार का अनुभव हुआ था। मोह तो था ही, अब यह उनके अभिमान के लिए चेतावनी-सी भी थी। उन्होंने सेनापति को फिर सीता के पास भेजना चाहा, पर उसके कहने पर कि अधिक दबाव डाले जाने पर कुछ-का-कुछ हो सकता है; यह भी सम्भव है कि लड़की गाँव छोड़कर कहीं चली जाए या कुछ और कर बैठे, राजा ने धैर्य धारण करना उचित समझा। किसी को नहीं भेजा। सोचा कि इन परिस्थितियों में सीता को समय देना ही ठीक है। पर, उनकी विह्वलता-आकुलता निरन्तर बढ़ती ही जाती थी। उनमें एक विचित्र आवेश, जिसमें कुछ कुतूहल और कामुकता थी, प्रबल होता जाता था।

● ● ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

:१६:

गणेश ने अगले दिन आकर सीता को सूचना दी कि वस्तुतः उसकी फूफी नाले के पास दस-ग्यारह कोस की दूरी पर पड़ाव डाले हुए हैं।

सीता अपनी फूफी को नहीं जानती थी। पर, गणेश ने बताया कि वह उसके बारे में काफी जानती थीं। उसकी ख्याति कानों कान काफी दूर तक फैल गई थी। विजयनगर के आसपास के क्षेत्रों से तो लोग उसे देखने आते ही थे, बीजापुर और गुलबर्गा के इलाके से भी आ रहे थे। दुखियों के कृतज्ञता-भरे समाचार, कहते-सुनते हवा की तरह फैल जाते हैं। फूफी के कानों में भी ये समाचार पड़े थे।

सीता जान गई कि उसकी फूफी किसी बड़े सामन्त की बेगम हैं। वह सामन्त उन पर जान देते हैं। बड़े सम्पन्न और शक्तिशाली हैं। सल्तनत में उनकी काफी धाक है। पर, वे निस्सन्तान हैं। किंतु फूफी सिवाय सन्तान के न होने के हर तरह से खुश हैं। उनको किसी प्रकार की कमी नहीं है। उन पर कोई जोर-जबर्दस्ती नहीं की जा रही है। पर, विजयनगर के इलाके में आना खतरे से खाली नहीं है। बिना अपने पति के वे नहीं आ सकतीं, और पति लुके-छुपे भी विजयनगर की सीमा में कदम नहीं रख सकते।

गणेश ने सीता से कहा, "वे तुमसे वहाँ आने का अनुरोध कर रही हैं। वाहन का भी वे ही प्रबन्ध कर रही हैं। नाला पार करने के छह मील बाद उनके आदमी हमें ले जाएँगे।"

"तुम्हारी क्या राय है?" सीता ने पूछा।

"हो आओ, आखिर तुम्हारी फूफी ही हैं न?"

"हूँ, पर बाबा····?"

"बाबा को जब मालूम होगा कि उनकी लड़की एक ऐसे सामन्त के यहाँ रह रही है, जो उनके धर्म का नहीं है, शायद अपने को काबू में न रख सकें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उनके हृदय में जो अपनी लड़की की पवित्र स्मृति है, वह अचानक टूट जाएगी और उस स्मृति के सहारे ही तो वे जीवित हैं। वे सोचते हैं—उनकी लड़की कभी-न-कभी जरूर लौटेगी। जिस दिन उनको असलीयत मालूम हो जाएगी, उस दिन वे दम तोड़ देंगे।"

"हैं!"

"तुम एक बार देख आओ, और बाद में अगर ठीक समझो, तो हम बाबा को भी ले जाएँगे।" गणेश ने कहा।

दोनों मिलकर बाबा के पास गए। दोपहर का समय था। गाँववाले अपने-अपने कामों पर चले गए थे। जो लोग सीता के दर्शनार्थ आए थे, वे जगह-जगह अपने नित्य कृत्यों में लगे हुए थे।

"बाबा, तुमने खाना खाया कि नहीं ?" सीता ने बाबा का तकिया ठीक करते हुए पूछा।

"खा लिया बेटी ? क्या बात है ? कुछ जल्दी में मालूम होती हो।"

"मुझे जरा बाहर जाना है, बाबा।"

"क्यों क्या हो गया ? गाँव छोड़कर ?"

"हाँ।"

"क्या राजा के आदमी तुम्हें लिवाने आए हैं ?"

"नहीं तो।"

"तो, फिर कहाँ जाओगी ?"

"नाले के पार, एक स्त्री आयी हुई हैं। वे ऐसी स्थिति में नहीं है कि यहाँ आ सकें। मुझे ही जाना होगा। मेरे कारण इतनों की इच्छाएँ पूरी हो रही हैं, उनकी इच्छा पूरी करनी होगी।"

"अकेली कैसे जाओगी ?"

"साथ में हम भी जा रहे हैं, बाबा!" गणेश और गुंडप्पा ने एक साथ कहा।

"बेटी, मुझे डर लग रहा है। तुम्हारी फूफी एक दिन नाले के पार क्या गई कि उचक्के उसे उठा ले गए। कहीं तुम्हें भी, खैर·····।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"नहीं, वे मुझे नहीं ले जा सकते। वह तब की बात है, जब विजयनगर में अराजकता फैली हुई थी और सीमाओं पर आए दिन इस तरह की बातें हुआ करती थीं।"

"अच्छा, लेकिन अगर इस बीच राजा के आदमी आ गए तो ?"

"तो कह देना कि मैं नहीं हूँ।"

"इतनी जल्दी ही क्या है ? राजा का सन्देशा ठुकराया नहीं जाता बेटी !"

"जब राजमहल में चली जाऊँगी तो ये सारे काम इतनी आसानी से नहीं कर पाऊँगी, अभी········।" सीता कहती-कहती रुकी।

न मालूम उस वृद्ध ने सीता के इस वाक्य में क्या संकेत पाया कि वह सहसा मुस्करा पड़ा, उसने सिर हिला दिया।

"तो मैं जाऊँ, बाबा ? " सीता ने पूछा।

"मुझे रह-रह कर तुम्हारी फूफी याद आ रही है। ना मालूम क्यों ?" बाबा की आँखों से आँसुओं की लड़ी लग गई।

"बाबा, यह भी तो सम्भव है कि मैं फूफी को कहीं देख लूँ। मुझे ऐसा लगता है कि वे कहीं मिल जाएँगी।" सीता ने कहा।

"मिले तो लेती आना। वह ही तेरी शादी करवा देगी। उसकी बात तो तुझे माननी ही पड़ेगी। मैं उसकी भी शादी करवा दूँगा। तीस-पैंतीस की ही तो होगी। तब मैं अपने सारे काम निबटा कर खुशी-खुशी चला जाऊँगा।"

"बहुत अच्छा।" सीता, और गणेश आदि सन्तोष में हँस दिए।

"पर बेटी, अँधेरा होने से पहले आ जाना। जरूर चली आना, समझो ?" बाबा ने उसको आशीर्वाद दिया, "जीती रहो बेटी, हे भगवान् !" इसी बीच खाँसी ने उनको धर दबोचा।

सीता, गणेश और गुंडप्पा उसी कड़ी दुपहरी में बाहर निकल पड़े।

● ● ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शाम के झुटपुटे में सीता उन डेरों के पास पहुँच गई। मार्ग में कोई विघ्न-बाधा नहीं आई। पूर्वनिश्चित व्यवस्था के अनुसार, सामन्त की गाड़ी सीता के लिए नाले से पाँच-छह मील दूर प्रतीक्षा कर रही थी, साथ सशस्त्र सैनिकों की एक टुकड़ी भी थी।

तम्बू गड़े हुए थे, बीच में शामियाना था। उसके एक ओर एक मोटे गद्दे पर, मसनदों के सहारे हुक्का पीते अधेड़ सामन्त बैठे थे। और उनके सामने एक कमसिन स्त्री नृत्य कर रही थी। शराब का दौर चल रहा था। सामन्त अपना मन-बहलाव कर रहे थे।

सीता के वहाँ प्रवेश करते ही नृत्य बन्द कर दिया गया। सामन्त ने इस प्रकार उसका सम्मान किया था। अव्वल तो कोई उस समय आता ही न था। और आता भी था, तो मनोरंजन का कार्यक्रम निर्बाध चलता रहता था। सीता के लिए राजकीय विनोद-विलास की यह पहली झाँकी थी। वह इस तड़क-भड़क पर चकित हो उठी।

सामन्त उसको स्वयं एक ओर बड़े डेरे में ले गए। उसके चारों ओर कितने ही छोटे-छोटे डेरे पड़े हुए थे। यह उनका जनानखाना था। इतने सारे डेरे कि एक पूरी छावनी-सी लगती थी। जब सीता ने डेरे के अन्दर प्रवेश किया, तो उसकी फूफी ने उसको गले लगा लिया। सीता अचम्भे में थी कि उसकी फूफी हुबहू उस जैसी ही थी। पर, लिबास बेगमों के-थे। गहने-वहने भी उन्हीं के थे।

फूफी ने सीता के गाल सहलाकर उसे पुचकारा। प्रेम से एक मोढ़े पर बिठाया।

"सुनते हैं, फ़कत तुम्हारे दीदार से लोगों को औलाद नसीब होती है।" सामन्त ने सीता के सामने खड़े होकर मुस्कराते हुए पूछा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीता को उसका यह "शिष्टाचार" कुछ उद्धत सा लगा। न मालूम यह उसके अनियन्त्रित प्रभुत्व के कारण था अथवा मदिरा के प्रभाव के कारण।

सीता को झट एक और बात भी स्पष्ट हो गई कि उसकी फूफी ने उसको यह नहीं वताया था कि उसका सीता से क्या सम्बन्ध है। यदि वह यह भेद वता देती, तो वह शायद इतनी दूर न आता, न उसको लिवा लाने के लिए यह सब प्रबन्ध ही करता।

"तुम दुआ दो और जो तुम माँगोगी, हम अदा करेंगे।" सामन्त ने कहा। सीता की फूफी उनकी ओर घूर रही थी। उसने अनुमान कर लिया कि नशा अपना असर दिखा रहा है। ऊपर से योंही मर्यादा और शिष्टता की कमी। "अभी इनको वापस जाना है। कल सवेरे इनके भक्त, इनके लिये आएँगे…… इसलिए।" सीता की फूफी ने कहा।

"बेगम, हम समझते हैं। तुम्हारा इशारा है कि हम यहाँ से चले जाएँ तुम दोनों आपस में कुछ गुफ्तगू करना चाहती हो। अच्छा……" सामन्त लड़खड़ाता, खिलखिलाता डेरे से बाहर चला गया।

उसके जाते ही फूफी ने कहा, "मैंने इनको नहीं बताया है कि तुम मेरे भाई की लड़की हो।"

"यह तो मैं समझ गई थी।"

"बाबा कैसे हैं?"

"खाँसी से परेशान रहते हैं। हमेशा तुम्हारा याद करते रहते हैं।"

"जी चाहता है कि उनको एक बार देख आऊँ।"

"हूँ।"

"न तो अकेली जा सकती हूँ और न इनको लेकर ही। मुझे कोई तकलीफ नहीं है, पर ऐसा लगता है कि मैं किसी सोने के पिंजड़े में कैद हूँ। सब कुछ है, बढ़िया खान-पान है, रहन-सहन है, नौकर-चाकर हैं, रोब-दाब है, लेकिन…… ……खैर,……तुम छोटी हो, क्या बताऊँ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"बताओ फूफी, मैं भी जानना चाहती हूँ।" सीता ने कहा। उसके मन में फूफी के इस वर्णन ने अन्तःपुर के जीवन के बारे में कल्पना उत्तेजित कर दी थी।

"बिटिया, तुम सयानी हो गई हो, तो कहे देती हूँ।........ऐसा लगता है जैसे मैं किसी नृशंस व्यक्ति की काम-पूर्ति का साधन मात्र हूँ......और यह ऐसा बींधता अनुभव है कि जो नित नए अपमान की तरह मुझे चुभता है, मेरा वश चले, तो यहाँ से चली जाऊँ।"

"हूँ !" सीता ने आश्चर्य प्रकट किया।

"पर इतना सब कुछ गुजरने के बाद मैं कहीं की भी नहीं रही। मेरे लोग ही मुझे नहीं अपना पाएँगे। कम से कम यहीं की तो रहूँ। जो होना था, सो हो गया, अब यहाँ हूँ, इनके साथ ही बची-खुची जिन्दगी गुजार दूँ, बस यही इच्छा है।"

"हूँ।"

"मुझे सन्तान-वन्तान की कोई इच्छा नहीं है, न हो, तो अच्छा है। मेरा यह निम्न जीवन मेरे साथ ही समाप्त हो जाए, यही मेरी कामना है।"

"हूँ।" सीता बोली, उसके आँसू झरते जाते थे।

"मैं तुमसे मिलना चाहती थी, और वह इसी बहाने हो सकता था। मुझे बड़ी खुशी है कि तेरे नाम से, तेरे दर्शन से इतने सारे लोगों का भला होता है।"

"मुझे खुद नहीं मालूम कि मुझमें क्या है कि लोग मुझे देखने आते हैं, सब भगवान् की कृपा है।"

"बेटी, तुम काफी बड़ी हो गई हो। बाबा तुम्हारी शादी-वादी के बारे में सोच रहे हैं कि नहीं ? हम लोगों का इतना बड़ा परिवार था, कोई भी तो नहीं रहा सिवाय तुम्हारे। सब मर-खप गए और मैं बिछुड़ कर, इन ऐयाशों के साथ मारी-मारी फिर रही हूँ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"हूँ।" सीता के मन में एकाएक एक बात कौंधी—यदि मैं अन्तःपुर में चली गई तो मेरे परिवार का अन्त शायद मेरे साथ ही हो जाए। वह मुस्करा दी।

"जल्दी शादी कर लो। तुम्हारी शादी पर मैं आ सकूँगी कि नहीं, मुझे नहीं मालूम। यह ले, इसे पहन लेना और मेरी याद कर लेना।" यह कहते-कहते फूफी का गला रुँध गया। उसने एक कीमती हीरों का हार उसके गले में डाल दिया। फिर आँसू पोंछते हुए कहना शुरू किया, "मैं अभी इस इलाके में पाँच-दस दिन रहूँगी। इनकी यहाँ कुछ मिल्कीयत भी है। अच्छा हो, यदि तुम दो-तीन दिन बाद फिर आ सको, मैं गाड़ी का इन्तजाम करवा दूँगी। अपनों से मिलकर ऐसा लगता है, जैसे उखड़े पेड़ को अपनी जड़ें मिल गई हों। काफी अँधेरा हो गया है, तीन-चार घंटों में पहुँच जाओगी। भगवान् से प्रार्थना करूँगी कि तुम्हें कोई बाधा न हो......" अभी वह बोल ही रही थी कि सिपाहियों ने हाँफते हुए आकर कहा, "अभी हम वापस न जा सकेंगे, माफ करें, हुजूर का हुक्म है।"

सारे डेरे में खलबली मची हुई थी। कानाफूसी हो रही थी। कुछ घुड़सवार पश्चिम की ओर तेजी से जा रहे थे। कुछ अपने हथियार साफ कर रहे थे। पर सामन्त अपनी मौज में मस्त थे, शायद इस खुशी में कि उनके हुक्म बजानेवाले इतने लोग थे। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि सामन्त के सिपाही, नाले के आसपास विजयनगर के सैनिकों की टुकड़ी को देख आए हैं। वहाँ उनके डेरे गड़े हुए थे। उस हालत में नाले के पार जाना निरापद न था और ये सिपाही उस समय खतरा नहीं मोल लेना चाहते थे।

सामन्त के ही क्षेत्र में उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया जा सकता था। यह भी स्पष्ट था कि सीता की सुरक्षा के लिए ही उसने यह आज्ञा दी थी। पर, सीता अत्यन्त चिन्तित थी। न मालूम बाबा क्या सोचेंगे। उनको पहले ही संदेह था और उन्होंने आगाह भी किया था। अगर उनको कुछ हो गया, तो मैं ही उसकी उत्तरदायी होऊँगी। शायद बाबा सोचने लगें, कहीं फूफी की तरह मैं भी न उठा ले गई होऊँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसके मन में ये ही बातें तरह-तरह के प्रश्नों के रूप में भयंकर स्वप्नों की तरह मँडराती रहीं, घूमती रहीं। वह सो न सकी और रात गुजरती न लगती थी।

● ● ●

: १८ :

सुबह होते ही सामन्त ने डेरा उठवा दिया। शामियाना समेट लिया गया, बोरिया-बिस्तर बँध गया, पड़ाव खत्म हो गया और वे सब पश्चिम की ओर चल दिए।

कितने ही घोड़े थे, कितनी ही गाड़ियाँ थीं, कितनी ही पालकियाँ थीं, सचमुच एक छोटी मोटी छावनी-सी थी। सीता को भी फूफी के साथ एक पालकी में बिठा लिया गया। गणेश और गुंडप्पा को वापस जाने की अनुमति नहीं दी गई। वे सीता को उस हालत में छोड़ भी नहीं सकते थे। वे भी सीता के साथ जाने लगे। बाबा ने जो आशंका व्यक्त की थी, कहीं वह सच तो नहीं हो रही है?

बताया गया कि विजयनगर के राजा स्वयं नाला पार करके, उनका पीछा करनेवाले हैं। यदि देरी की गई, तो उन सबों को गिरफ्तार किया जा सकता है। लड़ाई की भी सम्भावना है।

सीता अनुमान भी न कर सकती थी कि अब क्या होगा। पहाड़ी से उतर कर क्या चली आई कि उसे लगा कि उसकी समस्त शक्ति ही चली गई हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसे कुछ नहीं सूझता था। मानो वह अन्धकार में थी और प्रकाश के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी।

चलते-चलते वे एक छोटे कस्बे में पहुँचे। वहाँ बड़ी छावनी थी। तब तक अँधेरा हो चुका था। सामन्त वहाँ अपने को सुरक्षित समझ रहा था। पर सीता आदि की चिन्ता बढ़ रही थी। कहा गया था कि विजयनगर के राजा सेना के साथ आ रहे हैं, पर वे कहीं नहीं आए, सेना के आने की कहीं सूचना न थी। यह कोई बहाना तो नहीं है? कहीं उसको उड़ा ले जाने की चाल तो नहीं? सीता का भय निरन्तर बढ़ता गया। वह इस विषय में फूफी से कुछ कह भी नहीं पाती थी।

अब उसने गणेश और गुंडप्पा के साथ भाग जाने की ठानी। सख्त निगरानी थी। रात भर कुछ-न-कुछ शोर होता ही रहा। यहाँ मशालें, वहाँ रोशनी। यहाँ सिपाही, वहाँ पहरेदार। यदि वे जैसे-तैसे निकल भी जाते, तो मार्ग में कुछ भी हो सकता था। इस स्थिति में वे सर्वथा अरक्षित ही थे।

सीता ध्यानस्थ हो गई—मूर्तिवत्। वह जब ध्यान से उठी, तो कुछ निश्चिन्त-सी प्रतीत हुई। वह अपने से कहती लगती थी—"भगवान् जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं। चिन्ता करना उसकी इच्छा के प्रतिकूल है।"

वह निश्चिन्त हो इधर-उधर घूमने लगी। युद्ध की तैयारियाँ हो रही थीं, पर सर्वत्र निश्चिन्तता थी। सामन्त का मनोरंजन चल रहा था। पायलों की झंकार, तबले की गमक, सारंगी पर राग जोगिया गूँज रहा था और शराब के जाम पर जाम खाली किए जा रहे थे। वे इस तरह मजा कर रहे थे, गोया रात का किसी और तरह से काटा जाना गुनाह हो।

सीता चकित थी।

बातों-बातों में सुनने में आया कि सुलतान कूच कर रहे हैं और इसी छावनी की ओर आ रहे हैं। सामन्त, सुलतान के सगे, नजदीकी रिश्तेदार थे। जहाँ कहीं भी वे रहते, उन दोनों में खबरों का आना-जाना बना रहता।

सीता उत्सुकतावश शामियाने के पास खड़ी थी। तभी सिपाहियों ने उसको अन्दर ले जाकर, सामन्त के सामने पेश किया। वह मसनद के सहारे

चम०—५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बैठा अपना पेट सहला और रह-रह कर डकारें ले रहा था। "क्यों तुम गाना जानती हो ?" सामन्त ने सीता को चोटी से एड़ी तक घूरते हुए पूछा।

"जी नहीं, हुजूर।"

"नाचना जानती हो ?"

"जी, नहीं।"

"पीना ?"

"जी, नहीं।"

"लाहौल विलाकूवत, जो यह नहीं जानती, वह भला जीती किसलिए है ?"

सीता काँपती-काँपती उसे घूरती रही।

"खुदा ने शक्ल ऐसी दी है कि जन्नत की हूरें भी शरमा जाएँ। मगर शक्ल तो वुत की भी होती है। मगर जान तो हो, जीवट तो हो। कुछ गाओ, कुछ नाचो, तभी तो शक्ल जानदार होगी।" सामन्त बड़बड़ा रहा था।

सीता उसे तरेरने लगी। वह उस नशे में भी समझ रहा था कि उसकी ये ऊटपटांग बातें सीता को पसन्द नहीं हैं।

"तुम सोच रही हो कि हम तुम्हें भगा ले जा रहे हैं, नहीं ऐसा मत सोचो; हम वादा करके निभाते हैं। तुमको, हम अपने वादे के मुताबिक भेज देते। तुम्हारी हिफाजत के लिए ही हम तुम्हें यहाँ लाए हैं···।" कहते-कहते सामन्त ने अपना गिलास बढ़ाया और एक लड़की ने उसका गिलास भर दिया। वह चुसकी लेकर कहने लगा, "अगर नाले के उस पार हमारे आदमी विजयनगर की फौज न देखते, तो मैं तुरन्त तुमको भेज देता, तुम्हें सही सलामत तुम्हारी पहाड़ी पर पहुँचा देता। सच मानो, यकीन करो।"

" तो हमें कब भेजिएगा ?"

"जब वे वहाँ से चले जाएँगे। तुम किसी से पूछ लो, हमारी बेगम से ही पूछो। हम वादा करके मुकरते नहीं हैं। हमने वादा किया था कि उनको तुम्हारे पास लाएँगे, हम लाए, हालांकि हम जानते थे कि हम जोखिम मोल ले रहे हैं। तुम मत नाचो या न गाओ, पर हम जोर जबर्दस्ती से किसी पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी हाथ नहीं उठाते हैं। अरे, वह तो हथियारवन्द का निहत्थे पर हमला हुआ। हमें वह पसन्द नहीं है। हम तो खेल चाहते हैं, दो दिलों का खेल। अरे, नाच-गाना न सही, शायरी तो जानती हो।"

"जी नहीं।"

"तो फिर सोओ, तुम्हारे लिये रात शायद इसलिए आती है कि आँखें बन्द करके, ख्वाब देखो, देखो।" सामन्त के नजर उठाते ही, लड़की ने फिर उसका गिलास भर दिया।

अगर सीता की फूफी इस बीच आकर शामियाने के परदे के पीछे न आ खड़ी होता तो न मालूम सामन्त और क्या अनाप-शनाप बकता। उसने सीता को अपने डेरे में भेजने का संकेत किया।

फूफी उसे अपने साथ ले गई। गद्देदार विस्तर पर बिठाया, पर सीता की आँखों में भला नींद कहाँ।

०००

: १९ :

विजयनगर-नरेश देवराय सीता के यहाँ स्वयं पधारे। शाम का समय था। सारी पहाड़ी सुनसान सी लगती थी। मन्दिर भी सूना-सा था। लोग थे, पर वहाँ वह रौनक न थी, जो राजा ने पहले दिन देखी थी। पाँच-दस अंगरक्षकों के साथ, वह स्वयं भेस बदल कर चले आए थे। सम्भवतः उनका विचार था, कि जो कन्या राजसी ठाठ-बाट, अधिकार, सम्पन्नता और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शालीनता आदि से नहीं प्रभावित हुई थी, वह शायद हमारे व्यक्तिगत लगाव और स्नेह से ही प्रभावित हो। उनका यह भय और भी पक्का हो गया था कि यदि उसके साथ राजनीति से काम लिया गया, तो वह कुछ-का-कुछ कर सकती है। उस पर तो राजा यों ही मुग्ध थे, फिर उसके निमन्त्रण के निराकरण ने उनके अभिमान को चेतावनी-सी दे दी थी, वह उनकी दृष्टि में एक अजेय दुर्ग की तरह थी।

वे शान्त न रह सके, न दैनिक कार्य-कलाप और शासकीय व्यवहार पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सके। जब और कोई उचित विकल्प उन्हें नहीं सूझा, तो वे छद्म रूप धारण कर चले आए।

सीता को मन्दिर में नहीं देखा, वह उसके बाबा के घर गए। उन्होंने फाटक जो खोला, तो बाबा ने अन्दर से खाँसते हुए पूछा, "बेटी, तुम आ गई हो?"

राजा जान गए कि सीता यहाँ नहीं है, कहीं गई हुई है। मगर आश्चर्य हुआ—इस समय इतने अंधेरे में क्या काम रहा होगा, क्यों नहीं आई? कहीं उसे कुछ हो-हा तो नहीं गया? कहीं वह भेस बदलकर विजयनगर तो नहीं गई है? कहीं मेरे अन्तःपुर का निरीक्षण तो नहीं कर रही है। भीमन्ना उसे वहीं ले तो नहीं गया है? एक साथ कई प्रश्न, राजा के मन में कौंधे। वे सहमे।

"क्यों, बाबा, माँ कब आएँगी?" राजा ने दबी और पतली आवाज में पूछा। सीता के भक्त उसे प्रायः "माँ" कहकर ही सम्बोन्धित किया करते थे।

"मेरी नजर धुँधली हो गई है, पास की चीजें भी नहीं दिखाई देतीं। अँधेरे में तो कुछ नहीं सूझता है। नहीं तो मैं ही उसे देखने चला जाता।" बूढ़े बाबा अपने से ही बोलते से लगते थे। वह इतने चिन्तित थे कि उन्होंने राजा का प्रश्न ठीक तरह सुना भी नहीं था, पर बातें ऐसी थीं जिनसे राजा को ऐसा अनुभव हो रहा था, जैसे उनको अपने प्रश्नों के उत्तर मिल रहे हों।

"कब आएँगी?" राजा ने पूछा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाबा खाँसे, झुँझलाए, लाठी पटकी। उन्होंने कोशिश की, पर उठ न पाए।

"गाँव में ही हैं ?" राजा ने पूछा। उनकी उद्विग्नता बढ़ती जा रही थी।

"अगर गाँव में होती तो मुझे किस बात की फिक्र होती ? कम-से-कम खाना देने तो जरूर आती ? खाने का वक्त हो गया है। एक लड़का गायों को बाँध गया है, पर वे भी उसके लिए रँभा रही हैं। ईश्वर जाने, क्या हो गया इस लड़की को।"

राजा शायद कुछ और पूछते। यदि बाबा स्वयं वह प्रश्न न पूछता, जो वह पूछना चाहते थे। वे गायों की ओर देखने लगे, वे रह-रह कर घर की ओर देख रही थीं, उनकी आँखों में एक विचित्र चिन्ता थी, व्यथा थी। क्या अच्छा होता दीये की रोशनी वहाँ न होती, कम से कम, उनकी दयनीय शक्ल तो नहीं देखनी पड़ती।

"भाई, बुरा नहीं मानना, मैं पहचान नहीं पाता। पता नहीं, तुम कौन हो। जरा, देख तो लो कि गायों के पास घास-वास है या नहीं ?" बाबा ने कहा।

"राजा उस तरफ गए, इधर उधर देखा, फिर हाथ हिलाते हुए वापस चले आए। उन्हें खुद पर हँसी आ रही थी।"

"बाबा, कहाँ गई हैं माँ ?" राजा ने पुनः पूछा।

"बेटा, वह किसी भक्त को देखने नाला पार गई है। कह गई थी कि शाम होते-होते लौट आऊँगी, पर अभी तक नहीं आई। न मालूम क्या हो गया है उसको ? छोटी सी जान है और कभी उस तरफ गई नहीं है।"

"अकेली गई हैं ?"

"नहीं, गाँव के दो बच्चे उसके साथ गए हैं।"

"तो क्या वह विजयनगर छोड़कर सल्तनत के इलाके में चली गई हैं ?"

"हाँ बेटा, तभी तो मुझे डर है। गनीमत है कि राजा के यहाँ से कोई खबर नहीं आई। मान लो, उन्होंने खबर भिजवाई या वे खुद आ गए, तो मैं क्या करूँगा ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा मुँह फेरकर मुस्कराने लगे। बाबा उनको देख नहीं सकते थे। बोले, "कह गई थी कि आकर अपना निश्चय बता दूँगी।"

"क्या निश्चय ?" राजा ने जानते हुए भी पूछा।

"निश्चय, निश्चय की बात तो अब बाद की है, पहले वह सुरक्षित लौट तो आए।" इस तरह बाबा ने झट बातों का रुख बदल दिया। राजा मन-ही-मन हँसे, मानों जो उत्तर उन्होंने सोचा था, वह उत्तर उन्हें मिल गया हो।

"यदि किसी को देखने गई हैं, तो लौट आएँगी, इसमें डरने की क्या बात है। मैं दूर से आया हूँ। क्या मैं उनकी यहाँ प्रतीक्षा कर सकता हूँ ?"

"भाई, डर है, मैंने उससे कहा भी था, वह इस घर की इकलौती है और हमारे दिन अच्छे नहीं हैं। जब वह छोटी थी, तो उसकी फूफी भी एक बार किसी काम पर नाला पार करके गई और फिर वापस नहीं आई।"

"हूँ, क्या हो गई ?"

"होना क्या था, वे आदमखोर लोग उसे उठा ले गए। और आज तक उसका पता नहीं है।"

"हूँ।"

"इसीलिए तो डरता हूँ कि कहीं इस बेटी पर भी फिर वैसी ही न गुजरे। हमारे दिन खराब हैं। हमारे अँधेरे में कभी रोशनी होती है, तो बिजली की कड़कड़ाहट के साथ ही चमक होती है, तब पता चलता है कि अँधेरा कितना गहरा है।"

राजा चुप रहे। उन्होंने सोचा—मैं कहीं इनके अँधेरे में बिजली की तरह तो नहीं हूँ ? फिर बोले, "तो आप किसी से कहते क्यों नहीं ? वे उनको ढूँढ लाएँगे।"

"कहना ही पड़ेगा। सोच रहा हूँ कि थोड़ी देर और इन्तजार कर लूँ। शायद वह स्वयं आ जाए। अगर इस बार नहीं आई, तो शायद युद्ध ही हो। विजयनगर के महाराजा बड़े शूर हैं। विवाह का निमन्त्रण दिया है। जब तक वे उसे पा नहीं लेंगे, चैन नहीं लेंगे; भले ही उसे पाने के लिए उनका राज्य ही हाथ से निकल जाए। सुनता हूँ, वे बड़े ज़िद्दी हैं। कहीं हमारे ही कारण युद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न हो जाए, इसीलिए मैं सब्र से काम ले रहा हूँ। एक बार सीता की अनुपस्थिति का समाचार विजयनगर पहुँचा नहीं कि महाराज की सेनाएँ सारा इलाका छानने लगेंगी और युद्ध के बादल मँडराने लगेंगे।"

"हूँ।" राजा कुछ सोचते प्रतीत होते थे।

"देखें, क्या होता है!" बाबा ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए कहा।

राजा थोड़ी देर वहीं घूमते रहे। मन्दिर के चबूतरे पर गए। फिर दूर तक देखा। कहीं दूर कोई रोशनी नजर नहीं आ रही थी, सिवाय गहरा होते अन्धकार के उनको कुछ न दिखाई दिया।

वे पहाड़ी की तलहटी में चले गए। वहाँ गड़े तम्बू देखने लगे। उनमें अपाहिज और बीमार थे। उनको देखकर ही सामन्त के आदमियों को विजयनगर की सेना के पड़ाव की भ्रान्ति हो गई थी।

इधर उधर घूमते-घूमते काफी रात गुजर गई। एक-दो बार बाबा के यहाँ अपने अंगरक्षक भेजे। मालूम हुआ कि सीता वापस नहीं आई है। फलतः महाराज की चिन्ता और भी बढ़ी।

● ● ●

: २० :

राजा उद्विग्न थे। चिन्तित। उनको यह भी भय था कि यदि तुरत कुछ कार्यवाही न की गई, तो सीता की जान को खतरा हो सकता है। उनकी मनोदशा स्थिर नहीं थी। तरह-तरह की आशंकाओं ने उन्हें आ घेरा था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्होंने सोचा कि सीता को दो-चार लोग ही ले गए होंगे, कोई फौज तो आई नहीं होगी। उन दो-चार आदमियों से मुकाबला करने के लिए उनके पास उस समय काफी अंगरक्षक थे। यही नहीं, उन्होंने सोचा—सीता को ले जाने वाले विजयनगर की सीमा से बहुत दूर नहीं गए होंगे। सीमा के पास उनको हमेशा आवश्यक मदद मिल सकती थी। बात समय की थी। यदि तुरत कुछ न किया गया, तो बाद में न मालूम क्या हो और जिन्दगी भर पछताना पड़े। मेरे राज्य से एक स्त्री का इस प्रकार उड़ाकर ले जाया जाना मेरे लिए अपमान है। यह मेरे सुशासन और सुरक्षा पर कलंक है। यह मेरे लिए चेतावनी है। राजा के नाते मेरा कर्तव्य है कि मैं इस स्त्री की रक्षा करूँ। इस कार्य में अगर मेरी जान पर भी बन आए, तो मुझे संकोच नहीं करना चाहिए। इस स्त्री को इतने लोग देवी समझते हैं। उनके लिए आराध्य है, देवी की तरह पूज्य है। वह अपने को भले ही कुछ न समझे, पर औरों के लिए देवीतुल्य है। राजा प्रजा के धर्म का रक्षक है। इस प्रान्त की प्रजा की धार्मिक भावनाएँ सीता पर केंद्रित हैं। उसकी रक्षा करना मेरा धर्म है।

इस तरह सोचते हुए राजा ने उस पहाड़ी की परिक्रमा की। उनके साथ जो पाँच-दस अंगरंक्षक थे, उन्होंने भी वैसा ही किया। मन्दिर के प्रांगण में नारियल चढ़ाए गए। वे कुछ देर वहाँ ध्यानमग्न से बैठे रहे। फिर एकाएक उठे। सीढ़ियों से उतरे और अंगरक्षकों सहित घोड़ों पर सवार होकर, नदी पार करके विजयनगर की सीमा से बाहर चले गए।

उनके अंगरक्षक चिन्तित थे। एक ने घोड़ा बढ़ाकर राजा को सलामी देकर कुछ कहना चाहा, पर राजा ने हाथ से इशारा करके उसे दूर कर दिया। कहा, "हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ कि हम विजयनगर के इलाके में नहीं हैं।"

"यही नहीं महाप्रभु", अंगरक्षक ने कहा, "आप मामूली पोशाक में हैं।"

"हम जानते हैं।" राजा ने कहा।

"अन्नदाता क्षमा करें, परिधान चाहे जैसा हो हैं तो महाराजा ही।" अंगरक्षक का घोड़ा राजा के घोड़े के सामने इस तरह आ गया था, जैसे वह उन्हें रोक रहा हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"हूँ।"

"और हमने राजधानी में आपके प्रस्थान की सूचना भी नहीं दी है। राजधानी को तो सूचित करना ही होगा। राजमहल में भी समाचार भिजवाना होगा।" अंगरक्षक कह रहा था।

"घोड़ा हटाओ सामने से।" राजा ने कहा। पर अंगरक्षक ने घोड़े को रोकने का अभिनय किया। उसका घोड़ा, राजा के घोड़े की गर्दन से अपनी गर्दन रगड़ रहा था।

"यही नहीं, सेना को भी करना होगा। आप शत्रु की भूमि में जा रहे हैं।" कहते हुए अंगरक्षक अपना कर्त्तव्य निभाता जाता था।

"हूँ, पर हम बहुत दूर नहीं जा रहे हैं। जल्दी ही काम हो जाएगा। हमें इस गाँव की उस लड़की की रक्षा करनी है, जिसकी ये लोग पूजा करते हैं और....।" राजा आगे कहना और चाहते थे, पर अचानक चुप हो गए।

"प्रभो, आपका अकेला जाना निरापद नहीं है। अगर जाना पड़ भी जाए, तो सेना को इसकी बराबर सूचना मिलती रहनी चाहिए।"

"सूचना देनी ही है, तो जाओ, तुम सूचना दे आओ।" राजा ने कहा।

"जो आज्ञा प्रभो", अंगरक्षक ने कहा। उसने घोड़े को मोड़ लिया और विजय-नगर की सीमा की ओर तेजी से भगाने लगा।

अब राजा का घोड़ा तेजी से चलने लगा। कोई रास्ता न था। राजा को सीता के बारे में कोई सही जानकारी नहीं। पर, उनका अनुमान था कि उसको ले जानेवाले किसी सड़क और रास्ते से उसे नहीं ले गए होंगे। वे इसीलिए रास्ते से दूर ही जा रहे थे।

सूर्य काफी ऊपर आ चुका था, पर जगह इतनी सुनसान थी कि दूर तक न कोई आदमी दीखता था, न जानवर ही। बंजर जमीन, लाल लाल सी। वहाँ इतने युद्ध हुए थे कि खेती करनेवाले ही नहीं रह गए थे और जमीन हजारों का खून पीकर भी प्यासी-प्यासी सूखी-सूखी पड़ी थी।

राजा कहीं खाने-पीने के लिए भी न रुके। उनके पास अपना खाना नहीं था, और कहीं आस-पास भोजन के मिलने की सम्भावना भी नहीं थी। किन्तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे तो इस प्रकार चिन्तित थे कि उन्हें न भूख लग रही थी और न वे प्यास ही महसूस कर रहे थे ।

दूर कुछ बिखरे बिखरे पेड़ों के बाद, उन्हें धूल उड़ती हुई दिखाई दी। राजा ने अपना घोड़ा उसी ओर भगाया। सन्देह था, कि वह गिरोह, जो सीता को "उड़ा" ले गया है, सामने जा रहा है। जब वे उनके पास पहुँचे, तो उन्हें पता लगा कि वे भी सीता की खोज में निकले कुछ भक्त हैं। उनमें कई जानते थे कि सीता चली गई है और जब उन्होंने देखा कि वह वापस नहीं आई, तो वे भी उसे खोजने निकले हैं।

"कहाँ जा रहे हो? तुम कौन हो?" राजा ने उसके पास पहुँचते ही पूछा।

"हम अपनी देवी की तलाश में निकले हैं। उन पर कहीं आफत न आ जाए।" उनमें से एक ने कहा।

"कौन देवी?"

"सीता देवी।" उन्होंने एक स्वर में कहा।

राजा ने उनको नहीं बताया कि मैं भी उसी की तलाश में अपनी राजधानी छोड़कर इतनी दूर आया हूँ।

"पर क्या मालूम कि वे किधर गई हैं? हो सकता है, हम भी आपकी मदद कर सकें।" राजा ने कहा।

"हम लोग भी पूछते ही आ रहे हैं। पता लगा है कि कोई नवाब उन्हें ले गए हैं और पास ही कस्बे में पड़ाव डाले हुए हैं। आप भी आइए, हम लड़ नहीं सकते हैं। हम बीमार, अपाहिज लोग हैं, कम-से-कम उस देवी का ठिकाना तो मालूम कर सकते हैं, यह तो जान सकते हैं कि वे किस हालत में हैं और यह मालूम करके विजयनगर के कर्मचारियों को सूचना दे दें, तो राजा कुछ-न-कुछ अवश्य करेंगे।" उनमें से एक ने कहा।

"हूँ।"

"हम सोच रहे थे कि अगर हमको मालूम हो गया कि वे अमुक जगह हैं; तो सबसे बड़ा सवाल है कि विजयनगर के राजा को कैसे सूचना दी जाए?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्योंकि हमारे पास घोड़े तो हैं नहीं—फिर हम तेजी से चल भी नहीं सकते। अब आप मिल गए हैं और आपके पास घोड़ा है—आप हमारी सहायता कीजिएगा—तब राजा जो उचित समझेंगे, करेंगे।"

राजा देवराय मुस्कराए। उनके साथ कुछ दूर तक गए। फिर अपने एक अंगरक्षक को बुलाया और उसे कुछ आदेश देकर विजयनगर की ओर भेज दिया। वे स्वयं उन लोगों को लेकर, इस तरह आगे बढ़े, जैसे कोई कुमुक आ गई हो।

: २१ :

राजा देवराय, और वे पाँच-दस लोग आगे चलते गए। कुछ दिग्भ्रान्त से, कुछ-कुछ हताश से राजा के लिए यह उचित न था कि यूँ अरक्षित किसी और सल्तनत में चले जायँ। पर उनसे पीछे हटते भी न बनता था। वे विचित्र दुविधा में थे।

शाम होते-होते, वे एक ऐसी जगह पहुँचे, जो चारों ओर छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरी हुई थी, और आगे एक दर्रा-सा था। बताया गया था कि उस दर्रे के आर पार कुछ लोग पड़ाव डाले हुए हैं। राजा ने अनुमान किया कि सीता वहीं हो सकती है। उनके पास भेदिए न थे कि उन्हें भेजकर निश्चित रूप से जान सकें कि वह किस स्थिति में है। और उसकी रक्षा कैसे की जा सकती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उस हालत में वे कुछ-कुछ पछताने भी लगे थे कि क्यों मैं इतनी जल्दवाजी में, बिना आवश्यक तैयारी के, इतनी दूर चला आया ? फिर वे अपने को आश्वस्त करते कि उन परिस्थितियों में जो उचित था, मैंने वही किया था। यही नहीं, वे कुछ-कुछ दूरी पर अपने आदमियों को छोड़ते आए थे, ताकि पीछे से आनेवाली सेना को उनके मार्ग के बारे में मालूम हो सके। वह सेना भी नहीं आती मालूम होती थी और सिवाय दो अंगरक्षकों के बाकी सब मार्ग में सेना का पथ-प्रदर्शन करने के लिए, उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। साथ के बीमार यात्रियों पर निर्भर रहना भी ठीक न था।

न मालूम वहाँ कितने लोग हों, न जाने उनके पास कैसे-कैसे हथियार हों। हम अगर हमला करें और वे सीता की हत्या कर दें तो? वह काम, जो इतने खतरे का सामना करते हुए, करने के लिए वे आए थे, हमेशा के लिए अधूरा रह जाएगा।

देवराय किसी काम को अधूरा छोड़ने के आदी न थे। अतः उस परिस्थिति में गाड़ियों में ही रात काट देना उचित था। फिर दिन भर की थकान भी थी। भूख थी। जो कुछ करना है, सवेरे करेंगे, रात में दर्रे के पार वे लोग भी अपना डेरा उठाकर नहीं जाएँगे। फिर भी अच्छा है कि इन यात्रियों में से दो-तीन को दर्रे के मुँह पर निगरानी के लिए रखा जाए।

राजा ने ऐसा निश्चय करके, उनमें से दो को दर्रे के मुँह के पास भेजा और आदेश दिया कि तुम पत्थरों की आड़ से देखते रहो कि डेरेवाले क्या करते हैं और बराबर स्थिति की सूचना देते रहो। राजा एक पेड़ के नीचे, पत्थर के पीछे, अपने कवच आदि उतार कर बैठ गए।

और इधर सामन्त नवाब की सूचना पर, सुल्तान की अच्छी-खासी, सधी हुई सेना डेरों में आ गई थी। कहा गया था कि सुल्तान शिकार खेलने को तशरीफ ला रहे हैं।

राजा देवराय को सुल्तान के आने की सूचना न थी।

सबेरे जो वे उठे तो विजयनगर के गिने चुने अश्वारोहियों की एक टुकड़ी नीचे मार्ग पर खड़ी, आक्रमण के लिए सन्नद्ध थी, न भेजी गई थी। इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए इसकी संख्या भी सीमित थी। इसका लक्ष्य केवल राजा का संरक्षण था।

विजयनगर के मन्त्रियों का विचार था कि यह मौसम और राजनैतिक परिस्थितियाँ युद्ध के प्रतिकूल हैं। इसके अतिरिक्त वे राजा के निजी उद्देश्य के बारे में पूर्णतः परिचित भी नहीं थे।

राजा प्रसन्न थे कि अब उनके पास भी सेना है। उन्होंने दर्रे के मुँह पर आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए आदमी भेजे, तो मालूम हुआ कि एक बड़ी सेना उनकी ओर ही कूच करती आ रही है। सेना इतनी बड़ी है कि वे अपनी एक छोटी टुकड़ी के साथ उसका सफलतापूर्वक सामना नहीं कर सकते। फिर वे शत्रु के प्रदेश में भी हैं।

क्या इनको यहाँ मेरी उपस्थिति की सूचना मिल गई है? क्या इनको मुझे यहाँ से भगा देने का पूरा हक है, और क्या मुझमें इतनी शक्ति नहीं है कि मैं इनसे लोहा लूँ? तो मैं क्या करूँ? सीता का क्या होगा? सोचते हुए राजा पसोपेश में थे, कि दर्रे के मुँह से, उन्होंने एक बड़ी सेना को अपनी ओर आते देखा। उस सेना के कई अंग थे—अश्वारोही, हाथी, पदाति। सभी अस्त्र-शस्त्र से लैस।

राजा देवराय जान गए कि मामला उलझ रहा है। भले ही उन्होंने किरीट न पहना हो, राजकीय पोशाक न पहनी हो, पर उनको अगर पहचानने की कोशिश की जाय, तो कुछ मुश्किल न था। तो क्या किया जाए? बढ़ती सेना के सामने उनकी चिन्ता बढ़ती जाती थी। विजयनगर की प्रतिष्ठा कभी आगे बढ़ने के लिए कहती, तो कभी सुरक्षित भाग जाने के लिए उकसाती।

"अन्नदाता, भवितव्य होकर रहेगा। आप विजयनगर की ओर चले आइए!" एक अंगरक्षक ने विनयपूर्वक सलाह दी।

"हूँ।"

राजा के हुंकार से प्रतीत होता था, जैसे उनके सामने कोई विकल्प हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इतने में एक यात्री भी हाँफता हुआ वहाँ पहुँचा। बोला, "बहुत बड़ी सेना आ रही है। सीता और सेना ? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है।" वह बेहद घबराया हुआ था।

"हुँ।" राजा कुछ भी न कह सके।

अंगरक्षक ने उस यात्री के कपड़े ले लिए और उसे एक सैनिक के कपड़े दे दिए। राजा ने थोड़ी दूर जाकर पत्थरों के पीछे खड़े हो, वे कपड़े पहन लिए और लाठी टेकते-टेकते इस तरह पहाड़ों में से निकल पड़े, जैसे कोई वयोवृद्ध गड़रिया हो, जिसकी भेड़-बकरियाँ उससे बच-बचा कर कहीं निकल गई हों।

वे विजयनगर की ओर लौट पड़े। उनके देखते-देखते उनकी सारी सेना आगे बढ़ी। वे शत्रु की नजरें बचाकर विजयनगर की ओर जा रहे थे और उनकी छोटी-सी सेना, उस बड़ी सेना को लोहे के चने चबवा रही थी। उनका विचार था कि उस बड़ी सेना को उस तरह उलझाए रखने से, राजा को सुरक्षित विजयनगर पहुँचने के लिए पर्याप्त समय मिल सकेगा। वे वीरों की तरह लड़ते रहे और एक-एक करके, उस घाटी में अपने राजा की जान, आन, मान की रक्षा के लिए बलि हो गए।

राजा जब शाम के समय सीता के गाँव के पास पहुँचे, तो नाले के किनारे से उन्होंने मुड़कर जो देखा, तो सुल्तान की सेना उनका पीछा करती-करती बिल्कुल नजदीक आ गई थी। उन्होंने भागने की कोशिश की। एक चरते हुए घोड़े को पकड़कर, उस पर सवार होकर राजधानी की ओर जाने लगे। इस बीच उनकी सेना भी सतर्क हो गई थी।

राजा जैसे-तैसे विजयनगर पहुँचे। पर, सीता के गाँव के पास विजयनगर और सुल्तान की सेना में भीषण युद्ध होने लगा। इतिहास फिर अपने को दुहरा रहा था।

● ● ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा देवराय जैसे-तैसे अपने राजभवन तक तो पहुँच गए पर उनके पीछे, रक्त की धाराएँ वह रही थीं। सीता का गाँव, जहाँ कई बार आक्रान्ता आए थे, पर कुछ कर न पाए थे, सीता की अनुपस्थिति में तहस नहस कर दिया गया था।

मन्दिर के कुछ भाग तोड़-फोड़ दिए गए। मन्दिर के सामने का, नीम का पेड़ काट दिया गया। गाँव की वहुत-सी जनता का कत्ले आम हुआ। यहाँ तक कि मवेशी भी नष्ट कर दिए गए।

पर न जानें, बाबा कैसे उनके अंधाधुंध, क्रूर, निर्दय आक्रमण के शिकार नहीं हुए यद्यपि वे मौत की प्रतीक्षा कर रहे थे। सीता की अनुपस्थिति से वे इतने चिन्तित थे कि जीवन की अपेक्षा मृत्यु को ही गले लगाना चाह रहे थे। वे कराहते-खाँसते-हाँफते खाट पर पड़े रहे। आक्रान्ता आँधी की तरह आए और सब कुछ उजाड़ते चले गए।

विजयनगर की सेना इस आक्रमण के लिए तैयार न थी। वहुत सी सेना उत्तर-पूर्व के समुद्र-तट-प्रान्त में, विजयनगर से दूर, किसी विद्रोह का दमन करने गई हुई थी। और आक्रमण इतना अप्रत्याशित था और इतनी विद्युद् गति से हुआ था कि सेना इस आकस्मिक छापे का जोरदार प्रतिरोध न कर सकी। भीषण मारकाट हुई। फिर एकाएक भगदड़ मची, तहलका मच गया, अराजकता फैल गई।

युद्ध तो बहुत हुए थे, पर इस प्रकार का युद्ध उस प्रान्त में पहले कभी न देखा गया था। राजा त्रस्त थे, प्रजा त्रस्त थी और आक्रान्ता मदान्ध सा हो बढ़ता आता था। सुल्तान अपनी बड़ी सेना के साथ विजयनगर के विशाल परकोटे तक पहुँच गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विजयनगर की सुरक्षा-व्यवस्था बहुत ही विलक्षण थी। एक परकोटे के बाद दूसरा परकोटा आता-जाता था, यानी एक दुर्ग के अन्दर दूसरा दुर्ग। हर परकोटे पर चुने हुए सैनिक नियुक्त थे और इन दुर्गों के मध्य में विशाल राजभवन था।

सुल्तान ने विजयनगर को घेर लिया। उसको भय था कि कहीं ऐसा न हो कि वह विजयनगर के दुर्गों के व्यूह के अन्दर चला जाए और बाहर न आ सके और बाहर ही बाहर विजयनगर की बिखरी-बिखरी सेनाएँ संगठित होकर उसकी सेना को न घेर लें, और वे सबके सब मौत के घाट न उतार दिए जाएँ। वह विजयनगर में अचानक पैदा हुई अव्यवस्था से अपरिचित न था। वह उसका पूर्ण लाभ उठाना चाहता था। जब-जब उसको मौका मिलता, तब-तब वह वहाँ की प्रजा को तरह-तरह से सताता। उसने यह भी घोषित किया कि मैं अपने उन लोगों के साथ किए गए दुर्व्यवहारों का बदला ले रहा हूँ, जिन्हें कुछ मास पूर्व विजयनगर की गलियों में अपमानित किया गया था। वह शायद भूल गया था कि राजा ने उदारतापूर्वक उनको क्षमा भी किया था। सुल्तान ने यह भी कहा कि अपमान का बदला अपमान से लिया जाएगा। नगर घिरा हुआ था और सुल्तान की सैनिक शक्ति निरन्तर बढ़ती जाती थी। उसकी अपनी राजधानी से हर तरह की मदद बराबर आती जाती थी। विजयनगर को इस प्रकार घिरा हुआ देखकर, साम्राज्य में जगह-जगह सामन्तों ने बलवा कर दिया। जो सेना विजयनगर से बाहर थी, वह उनके विद्रोह का दमन करने में लगी हुई थी और निश्चय ही इस स्थिति में नहीं थी कि आक्रान्ता की सुसंगठित एवं शक्तिशाली सेना का सामना कर सके।

राजा के सामने सिवाय समर्पण के कोई और विकल्प न था। उसे इस बात का भी सन्तोष था कि सीता की बात कहीं नहीं उठाई गई है। प्रजा को तो शायद मालूम ही न था कि युद्ध का यदि कोई कारण है, तो वह क्या है? इस प्रकार के अनावश्यक अकारण आक्रमण इतनी बार हुए थे कि अब कारण ढूंढने का कोई अर्थ ही नहीं रह गया था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा देवराय ने विवश हो घुटने टेक दिए। उन्होंने सन्धि के लिए सुल्तान के पास दूत भेजे परन्तु उन दूतों का भी अपमान किया गया। वे बड़ी कठिनाई से अपने प्राण बचाकर वापस आ सके। फलस्वरूप राजा इतने क्रुद्ध हुए कि उन्होंने बची हुई सेना के साथ परिणाम कुछ भी हो, दुर्ग से निकलकर सुल्तान की सेना का सामना करने का निश्चय किया। उन्हें इस अपमान से मृत्यु ही अच्छी प्रतीत हुई। उन्होंने लड़ते-लड़ते अपने दुर्ग से बाहर निकलने का दृढ़ निश्चय किया।

किन्तु मन्त्रियों ने उनको वैसा न करने दिया। उस हालत में, उन्होंने सलाह दी कि न केवल राजा के प्राण ही खतरे में हैं, बल्कि विजयनगर की सत्ता ही खतरे में पड़ सकती है और विजयनगर के एक बार के पतन के साथ ही सारा दक्षिण ही आक्रान्ता के वश में आ सकता है। इस तरह विजयनगर की स्थापना जिस उद्देश्य की परिपूर्ति के लिए हुई थी, वह सहसा विफल हो जाएगा। सन्धि भी युद्ध का एक भाग है। परिस्थिति के सुधरने पर पुनः प्रतीकार किया जा सकता है।

राजा को मन्त्रियों की सलाह माननी पड़ी। राजा के वैयक्तिक प्राण साम्राज्य के संगठन की तुलना में गौण थे। राजा को भी कभी-कभी साम्राज्य की रक्षा के लिए आत्मसम्मान का बलिदान करना पड़ता है, आत्मोत्सर्ग करना पड़ता है। साम्राज्य सर्वोपरि था। राज्य की प्रभुसत्ता के प्रति कर्तव्य-पालन का यह कड़वा अवसर था। अतः राजा विवश हो लहू का घूँट पीकर रह गए।

● ● ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: २३ :

राजा अन्तःपुर में खिन्न रहने लगे। न बाहर प्रांगण में आते, न किसी मनोरंजन में ही अभिरुचि दिखाते और न मन्दिर वगैरह ही जाते। हास-विलास के कार्यक्रम भी स्थगित कर दिए गए थे। उनकी अनुपस्थिति में मन्त्री सक्रिय हो गए थे। सुल्तान से उन्होंने समझौते की बातचीत प्रारम्भ कर दी थी। सुल्तान विजयोन्माद में उद्धत हो गया था। दूतों के अपमान के बाद उसका अनुमान था कि विजयनगर की सेना दुर्ग से बाहर आएगी और वह उसका सर्वनाश कर सकेगा। विजयनगर के मन्त्री भी इसका अनुमान कर सकते थे। विवशता भी थी। यह बात मात्र आत्मसम्मान की ही नहीं थी, अस्तित्व की भी थी।

इस बीच एक आक्रमण में सुल्तान स्वयं घायल हो गया था। उसके हाथ पर विजयनगर की ओर से एक बाण आ लगा था और वह पास ही इलाज करवा रहा था। अगर वह बीमार न होता, तो शायद सन्धि के प्रस्ताव को ठुकरा देता। फिर भी, जब सन्धि करनी ही पड़ रही थी, तो उसने उसके लिए मनमानी शर्तें रखीं। शर्तों के अनुसार, जो कुछ युद्ध में सुल्तान की क्षति हुई थी, राजा को उसकी पूर्ति करनी पड़ी। इस शर्त पर विजयनगर के राजा को कोई आपत्ति न थी। एक और शर्त के अनुसार उसने बाँकापुर का किला माँगा। इस किले के आसपास ही सीता का गाँव पड़ता था, संभव है कि यह जानकारी तब नवाब को नहीं रही हो। राजा ने किला दे दिया। यह शर्त भी उनको नामंजूर न थी। पर धार्मिक कारणों का हवाला देकर, उन्होंने सीता का गाँव विजयनगर साम्राज्य में ही रहने दिया। तीसरी शर्त थी कि विजयनगर का राजा अपनी लड़की का विवाह सुल्तान से करे। यह शर्त राजा के लिए बहुत कठिन थी। राजनीतिक कारणों से भी इस प्रकार का विवाह उन्हें मंजूर नहीं था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजघराने में, राज्य के हित में राजकुमारियों का विवाह में दिया जाना और इस तरह मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाए जाने की एक पुरानी परिपाटी थी, पर हिन्दू और मुसलमान में विवाह राजा के लिए कल्पनातीत था।

"विवशता की भी सीमा होती है……यह मुझसे नहीं होगा।" राजा ने अपने मन्त्रियों से कहा, "इस विवाह से एक मांसलोलुप, कामुक की तृष्णा की ही पूर्ति होगी, मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित नहीं होंगे।"

मंत्रियों ने मौन साध लिया।

"विवाह हो जाएगा और आक्रमण यथापूर्व फिर जारी हो जाएँगे। तब इस विवाह से क्या लाभ है? हमेशा के लिए यह हमारे वंश पर कलंक बनकर रह जाएगा।" कुछ संयत होने पर राजा ने कहा।

उनके मन्त्री इन शर्तों के साथ अन्तःपुर के प्रांगण में एक गुप्त मंडप में राजा से मिलने आए थे। पहले तो राजा ने उनसे मिलना न चाहा, पर बाद में कुछ सोच-विचार कर वे वहाँ आए और एक एक पत्थर को टोकते-से वहाँ घूमने लगे। जैसे कि वे स्वयं भँवर में हों और दूसरों को भी भँवर में घुमा रहे हों। क्रोध के कारण एक अजीब रोब आ गया था। आवाज़ में गूँज थी।

मन्त्री बहुत से थे, पर राजा को उस हालत में देखकर कोई भी बोलने का साहस नहीं कर पाता था। राजा ने अपने को सँभालते हुए कहा, "आक्रमण ही तो करेंगे, करें। वे विवाह के बाद भी आक्रमण करने से बाज़ नहीं आएंगे……नहीं, हमें यह शर्त मंजूर नहीं है।"

"पर……।" एक मन्त्री ने कुछ कहना चाहा, किन्तु राजा की भौंहें सिकुड़ी देखकर वह सहम गया।

"पर क्या? कहिए, अगर आप मेरी स्थिति में होते, तो क्या करते? खैर, यह प्रश्न ही नहीं उठता है। कहिए, क्या कहना चाहते हैं?

"आक्रमण यदि इस प्रकार होते रहे, तो हम सेना का पुनः संगठन भी न कर पाएँगे और ये इतने क्रूर हैं कि लाखों का जान लेकर भी इनकी प्यास न बुझेगी।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"उस हालत में शायद आप यह कहने का प्रयत्न कर रहे हैं कि क्यों न मेरी लड़की की आहुति देकर उन लाखों की जानें बचाई जाएँ ?" राजा कह रहे थे और वह मन्त्री किसी अज्ञात भय के कारण काँप रहा था।

"और अब आप शायद यह कहना चाहेंगे कि प्रजा की रक्षा राजा का कर्तव्य है, और यदि यह रक्षा का कर्तव्य उसकी लड़की के अनुचित, अवांछित विवाह से पूरा होता है, तो राजा को अपने कर्तव्य का पालन करना ही चाहिए।" राजा ने भावुकता भरे आवेश में कहा।

ये ऐसी बातें थीं, जिनके बारे में मन्त्रियों ने सोचा भी नहीं था। यह राजा की निजी बात थी। वे उसके बारे में बहुत कह भी नहीं सकते थे। लेकिन, राजा जिस दुविधा में थे, उसमें उनके प्रति उनकी सहानुभूति थी। पर, लाचारी थी।

राजा चलते-चलते एकाएक रुके और उन्होंने पैर पटककर कहा, "मुझे यह शर्त कतई मंजूर नहीं है।"

"मगर···।" मन्त्री ने हाथ मलते हुए कुछ कहने का उपक्रम किया।

"कहिए।"

"अगर सुल्तान से यह वचन ले लिया जाए कि वह विवाह के बाद, विजयनगर पर फिर आक्रमण नहीं करेगा तो,······" मन्त्री ने कहा।

"हूँ।"

"मुझे मालूम है, यह शर्त बहुत अपमानजनक है, पर विजयनगर का नाश इससे भी अधिक अपमानजनक होगा। आपने और आपके वंश ने बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हुए, यह हिंदू साम्राज्य बनाया है। इसलिए कुछ भी हो, हमें इस साम्राज्य को सुरक्षित रखना है। अगर आज अपमानजनक सन्धि से यह सुरक्षित रहता है, तो हमें काल, स्थल के अनुसार, उस पर आपत्ति नहीं करनी चाहिए।" एक वृद्ध मन्त्री कह रहे थे।

'हूँ।"

"युद्ध में बहुत से लोग मरते हैं, स्त्रियाँ सती हो जाती हैं, सबको बलिदान करना पड़ता है। कहा है कि परिवार की रक्षा के लिए अपने स्वार्थ को छोड़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दो, गाँव के हित के लिये परिवार का स्वार्थ छोड़ दो और गाँव के स्वार्थ को राष्ट्र के हित के लिए छोड़ दो.......यह नीतिशास्त्र है...।"

"........तो आपका नीतिशास्त्र चाहता है कि मैं एक सुल्तान को अपना दामाद बनाऊँ......हूँ ?" यह कहते-कहते राजा मण्डप की सीढ़ी से उतरकर अन्तःपुर की ओर चले गए।

मन्त्री हमप्रभ से उनके पीछे खड़े रहे। उन्होंने उस दिन सुल्तान के पास दूत भेजकर कुछ समय माँगा।

● ● ●

: २४ :

राजा कुछ निश्चित न कर पा रहे थे और इस बीच सुल्तान ने अपने छिट-फुट आक्रमण और अधिक कर दिए। सामन्तों के विद्रोह भी बढ़ते जाते थे। विजयनगर की प्रजा पहले ही त्रस्त थी, अब वह पूर्णतः निराश हो गई थी। एक विचित्र मनहूस और उत्साहभंजक वातावरण बन रहा था। शायद सैनिक कार्यवाही और भी बढ़ा दी जाती, यदि सुल्तान कुछ अस्वस्थ न होता। संभवतः समझौते आदि के बारे में भी वह शीघ्र दिलचस्पी न लेता।

नगर में भुखमरी शुरू हो गई थी। सेना में अनुशासनहीनता प्रारम्भ हो गई थी। सारे मन्त्री सहमत थे कि परिस्थितियाँ कुछ ऐसी हैं कि राजा को आखिरी शर्त भी मान लेनी चाहिए। अन्ततः राजा को झुकना पड़ा और उन्होंने लाचार हो सुल्तान की सभी शर्तें मान लीं। जोर-शोर से विवाह की तैयारियाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होने लगीं। सुल्तान की ओर से आक्रमण तुरन्त बन्द हो गए। नगर का घेरा उठा दिया गया। प्रजा में नया उत्साह संचरित हो उठा, सुल्तान की छावनी में भी खुशियाँ मनाई जाने लगीं।

नगर के अवरुद्ध द्वार खोल दिए गए और देखते-देखते सुल्तान की छावनी तक एक सड़क बना दी गई। दोनों तरफ बड़ी-बड़ी दूकानें खुल गईं। नगरवासी, जो इतने दिन एक तरह से कैद थे, अपने को मुक्त अनुभव करने लगे। पर, जिस घृणित शर्त को स्वीकार करने पर यह मुक्ति मिली थी, उससे सबों के मन में एक अव्यक्त पीड़ा अवश्य थी।

सुल्तान की छावनी से उसके वजीर दूल्हन के लिये दस्तूर के मुताबिक बड़े कीमती तोहफे ले गए और सात दिन बाद, वे वापस दूल्हन और उसने बहु-मूल्य दहेज को सुल्तान के पास ले गए।

राजा देवराय ने अपने दामाद को देखने की इच्छा की। सुल्तान भी उनको देखने के लिए तैयार हो गया। इस मुलाकात के लिए एक तिथि निश्चित की गई। सुल्तान अपनी दूल्हन को लेकर बड़ी घूमधाम से राजा को देखने निकला। रास्ते में राजा ने राजोचित ढंग से अपने "दामाद" की अगवानी की।

नगर के द्वार से महल छह मील दूर था और द्वार से महल तक सड़क पर कीमती कालीन डाले गए थे। राजा और सुल्तान साथ-साथ दो सजे हुए घोड़ों पर सवार होकर निकले। उनके दोनों ओर सुन्दर बालक-बालिकाएँ थीं, जो उन पर सुवर्ण पात्रों से सुन्दर पुष्प और सुगन्धित द्रव्यों की वर्षा कर रही थीं। अमीर-उमराव और रईस अपनी खुशी जाहिर करने को भर-भर अंजलि छोटे-छोटे सिक्के हवा में उछाल रहे थे। दरिद्रों की टोली उन्हें लूटती जा रही थी।

इसके बाद नगरवासियों ने अपने पद और अपनी स्थिति के अनुसार राजा और सुल्तान को उपहार भेंट किए। जब वे राजभवन के निकट पहुँचे, तो वहाँ राज-परिवार के सम्बन्धी उपस्थित थे। उन्होंने सुल्तान का यथोचित स्वागत किया। वे जलूस के आगे आगे चलने लगे। सुल्तान और राजा अपने-अपने घोड़ों से उतरे। वे एक बहुमूल्य हीरे-मोती जड़ी पालकी में जा बैठे। फिर राजभवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के उस पार्श्व में गए, जो दूल्हे और दूल्हन के लिए सजाया गया था। तब देवराय ने सुल्तान से विदा ली और अन्तःपुर में चले गए। बाहर से तो वे प्रसन्नचित्त दीख रहे थे, पर उनके अन्तर में असीम वेदना थी। जैसे ही वे निजी कक्ष में गए उनकी वेदना आँसू बनकर फूट पड़ी। वे सिसकने लगे।

सुल्तान हिन्दू रिवाज के मुताबिक राजभवन में तीन दिन रहा। उसका वहाँ हर तरह से सत्कार किया गया। और जाते समय, उसको पहले दिए गए उपहारों से कहीं अधिक कीमती उपहार दिए गए। वह उसी शान से राजमहल से निकला, जिस शान से आया था। राजा उसको चार मील तक छोड़ने गए और फिर राजमहल वापस चले आए। मगर यह सुल्तान को बुरा लगा। वह चाहता था कि राजा उसकी छावनी तक आए और इस तरह उसकी विजय की सार्वजनिक रूप से घोषणा हो। पर, राजा इस घोर अपमान के लिए तैयार न थे।

राजा के कर्तव्य ने उनके स्वाभाविक पितृ-हृदय को ही कुण्ठित कर दिया था। वे सारे "संस्कार" में यथाशक्ति एक प्रकार का अभिनय सा कर रहे थे। पर, सुल्तान की, आक्रान्ता की छावनी तक जाना उनके लिए असम्भव-सा था। कर्तव्य के लिए वे कुछ भी कर सकते थे, पर वह सब अपने क्षेत्र में ही, किसी और की छावनी में नहीं।

सुल्तान की ओर से प्रस्तावित सन्धि की सारी शर्तें मान ली गई थीं। उसने बहुत कुछ मनमानी भी की थी। पर इस छोटी-सी बात से वह आग-बबूला हो उठा। उसने अपने एक उच्च कर्मचारी से कहा भी, "मैं इस तौहीन का जल्दी ही बुरी तरह बदला लूँगा।" और जब यह बात राजा देवराय तक पहुँची, तो उन्होंने कहा, "तो बात फिर वहीं आ गई है, जहाँ से शुरू हुई थी। लड़की की आहुति हो गई, पर यज्ञ सफल न हुआ। कर्तव्य भी निभाया, पर किसी का भला न हुआ।"

उनकी चिन्ता चिता की तरह धधकने लगी। उन्होंने इस चिन्ता में अपने मन्त्रियों से विचार-विमर्श किया। सुल्तान ने जो कुछ कहा था, वह उनको बताया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"पर हमने उनसे सन्धि के अनुसार वचन ले लिया है कि वे भविष्य में हम पर हमला नहीं करेंगे।" मन्त्रियों ने कहा।

"जो आदमी इतनी छोटी सी बात पर, ससुर-दामाद का पवित्र सम्बन्ध तोड़ सकता है, वह इस सन्धि की शर्त को मानेगा, क्या आप इस पर विश्वास कर सकते हैं?" राजा ने पूछा। मन्त्री, स्तब्ध हो कुछ देर राजा की ओर देखते रहे, फिर उन्होंने अपने मुंह लटका लिए।

"आपको विश्वास हो या न हो, मुझे तो बिलकुल नहीं है। अब क्या करना है?" राजा ने पूछा।

"युद्ध की आशंका पूर्ववत् है, हमें फिर सेना का संगठन शुरू करना होगा, अगर हम इस युद्ध में कुछ न कर सके, तो इसका मुख्य कारण यह भी था कि हमारे पास न घोड़े थे, न घुड़सवार ही—सुल्तान के पास ये दोनों ही थे।" युद्धमन्त्री ने कहा।

"हूँ, तो जैसे भी हो, जहाँ से भी हो, घोड़े मँगाए जाएँ और जाति सम्प्रदाय का बिना कोई ख़याल किए रणबांकुरों की नियुक्ति की जाए, ताकि सेना का प्रशिक्षण और संगठन पहले की अपेक्षा अच्छा हो। यह जितनी जल्दी सम्भव हो, किया जाए।" राजा ने कहा। अब यह सहज ही अनुमेय था कि पराजित और अपमानित होने के बाद, उनमें एक नया उत्साह आ गया था।

कुछ देर सोचने के बाद, इधर-उधर देखते हुए वे धीमे-धीमे; जैसे उनकी सभा में ही भेदिए बैठे हों, सावधानी से बोले, "सुल्तान की बात थोड़ी देर के लिए छोड़ भी दी जाए, तो हमें उन सामन्तों की खबर लेनी है, जिनके विद्रोह के कारण सुल्तान को हम पर हमला करने का बढ़ावा मिला। सेनापति, आप तुरन्त इस बारे में आवश्यक कार्यवाही करें।

जोर-शोर से तैयारियां होने लगीं। नगर के जीवन में फिर हलचल पैदा हो गई। उत्सव मनाए जाने लगे, मनोरंजन होने लगा, पर लोग आपस में कहने लगे थे कि राजा ने अपनी विलासिता को तिलांजलि देने का संकल्प कर लिया है।

• • •

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिस लड़की के लिए इतना रक्तपात हुआ था, उसके बारे में विजयनगर में अधिक पूछताछ नहीं हुई। और गाँव में, जो उसके बारे में विशेष रुचि रखते थे, वे प्रायः मर-मरा गए थे। गाँव में यह अफवाह फैल गई कि वह मर-मरा गई है। भक्त लोगों का, जो दूर दूर से उसके दर्शनार्थ आया करते थे, आना बन्द हो गया। वह मन्दिर, जहाँ वह आया-जाया करती थी, सुनसान-सा लगता था। खण्डहर-सा हो गया था। और वह उजड़ा हुआ गाँव और भी उजड़ गया था।

जिस नवाब के यहाँ वह अपनी बुआ को देखने गई थी, उसे सुल्तान के साथ अपनी सेना लेकर विजयनगर के आक्रमण के लिए जाना पड़ा। उसने इसकी आशा न की थी। उसने सोचा था कि सूचना देने के बाद, उसे आगे अपने घर की ओर जाने दिया जाएगा। सीता उसके यहाँ कैदी तो नहीं थी, पर वह कैदी की तरह ही देखी जा रही थी। उस पर कड़ी निगरानी थी।

नवाब तुंगभद्रा के पास पहुँचा ही था कि वहाँ भीषण युद्ध हुआ और वह उसमें मार दिया गया। उसके निजी परिवार में तहलका मच गया। कोई पकड़ा गया, तो कोई मारा गया। सीता और उसकी बुआ सचमुच ही कैदी बना ली गईं। न मालूम क्यों उनको नवाब की मौत के लिए जिम्मेवार ठहराया गया। नवाब के आदमी पहले ही उनसे चिढ़े हुए थे, उसकी मौत के बाद तो वे और भी चिढ़ गए। यह भी सुना गया कि नवाब के वारिस उन दोनों को मरवा देना चाहते हैं।

जब गणेश और गुंडप्पा को यह पता लगा, तो वे सब्जी बेचनेवालों का भेस बदलकर उनके डेरे में गए, और मौका पाकर बचा ले गए। युद्ध-भूमि थी, वहाँ दीवारों की कैद तो थी नहीं। इसीलिए वे कामयाब हो गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अब उनका अपने गांव लौटना मुश्किल था; क्योंकि वह उन दिनों सुल्तान की सेना के अधिकार में था। वे विजयनगर भी नहीं पहुँच सकते थे, क्योंकि सुल्तान ने उसका घेरा डाल रखा था। उनको विवश हो तुंगभद्रा के आस-पास ही भटकते रहना पड़ा। कहीं वे सब्जी बेचते निकलते, तो कहीं ज्योतिषी बन जाते, कहीं-कहीं वे जादू तमाशा भी दिखाते। गुजारा तो हो जाता था, पर दिन-रात भय बना रहता। सीता को तो उन लोगों ने बुरका पहना रखा था। बदली हुई परिस्थितियों ने सारा नक्शा ही बदल दिया था।

सीता यहाँ-वहाँ बहुत घूम आई थी। पर उसकी दैवी पवित्रता और नादानी पूर्ववत् बनी हुई थी। वह जहाँ कहीं कोई मन्दिर देखती, किसी घने वृक्ष के नीचे बैठ कुछ देर के लिए ध्यान-मग्न हो जाती, और इस तरह अपने नित्य कृत्य में लगी रहती, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

रह-रह कर वह अपने बाबा के बारे में सोचती, फिर मन-ही-मन यों हँसती, जैसे अपने से कह रही हो, कहीं कुछ भी हो, मेरे बाबा को कुछ नहीं होगा। वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। राजा भी उनको सता नहीं रहा होगा, क्योंकि सुल्तान, सुना गया, राजा को सता रहा था।

सीता के साथी, उसको युद्ध का कारण समझते थे, पर वह युद्ध को भगवान् का हस्तक्षेप समझती थी और अंशतः यह सत्य भी था। यदि सुल्तान का यह हमला न होता, तो सम्भव था कि विजयनगर के राजा विनोद-विलास में अपना समय व्यर्थ कर देते, संरक्षण शिथिल हो जाता और परिणामतः हिन्दू साम्राज्य का नाश हो जाता।

सीता यह देखकर प्रसन्न थी कि वह अपनी बुआ के साथ है। वह उनको छुड़ाकर अपने घर ले जा रही थी। वह जानती थी कि उसके बाबा तब तक अपना दम न तोड़ेंगे, जब तक वे अपनी लाड़ली लड़की और पोती को न देख लेंगे। चारों ओर इतना भय और आतंक था पर वह निश्चिन्त थी।

विजयोल्लास और विवाह के बाद अपनी सीमा में पहुँचते ही सुल्तान ने फरमान निकाला कि सीता और उसकी बुआ को, जिनके कारण युद्ध हुआ था, मेरे सामने पेश किया जाए। वह सीता को ही, कहा गया, अपनी विजय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का कारण समझ रहा था। यदि सीता उसके इलाके में न होती तो न वह अपनी राजधानी से आता, न विजयनगर पर आक्रमण करता, न राजा को पराजित करता, न उसकी लड़की से शादी करता, न उसकी धाक ही इतनी जल्दी जम पाती। और जब सुल्तान को पता लगा कि सीता और उसकी बुआ भाग निकली हैं, तो उसे आश्चर्य के साथ क्रोध भी आया। उसने अपनी सेना को सतर्क कर दिया। तुंगभद्रा के किनारे-किनारे सिपाहियों को तैनात कर दिया गया, ताकि वे लुक-छिप कर विजयनगर की भूमि में न चली जाएँ। सेना उनकी खोज कर रही थी। नगर-नगर में गुप्तचर घूम रहे थे। गाँवों में हर जगह उनके लिए तलाशी ली जा रही थी। जंगल छाने जा रहे थे। खेत-खलिहानों में खोजें हो रही थीं। कितनी ही ऐसी स्त्रियाँ पकड़ ली गई थीं, जिनकी शक्ल-सूरत सीता से मिलती-जुलती थी। कुछ को तो पूछ-ताछ के बाद छोड़ दिया गया था और कुछ को सुल्तान के सामने पेश करने के लिए बड़े-बड़े मकानों में सेना के कर्मचारियों की देख-रेख में रोक लिया गया था।

हो सकता है, कि सीता इसके बारे में जानती हो, हो सकता है कि नहीं भी जानती हो। पर उसके साथी घबरा गए थे। न वे दिन में कहीं जा पाते थे, और न रात में ही। न मन्दिरों में पनाह ले सकते थे, न मस्जिदों में। लोग उनको पानी तक देने में हिचकते-घबराते। वे मारे-मारे दर-दर भटक रहे थे। बेपनाह, बेसहारा, फटेहाल!

वे एक दिन सबेरे के झुटपुटे में, एक बैलगाड़ी में जा रहे थे। सीता और उसकी बुआ गाड़ी में थीं। गणेश और गुंडप्पा उसकी बगल में चल रहे थे। गाड़ी के ऊपर कई घड़े इधर-उधर रख दिए गए थे। ऐसा लगता था कि सबेरे वे हाट में घड़े बेचने निकले हों। उनको देखकर शक करना मुश्किल था।

गाड़ी एक नाले को पार रह कर रही थी, कि एक चिकने पत्थर पर से उसका पहिया फिसला और बैल को ठोकर लगी, भार एक तरफ अधिक हो गया, और घड़े एक के बाद एक नीचे गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गए। सीता की बुआ एकाएक चीखी। न मालूम कहाँ से देखते-देखते पाँच-दस सिपाही आ पहुँचे और उनको घेरकर खड़े हो गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह सब इतनी जल्दी हो गया था कि वे सोच भी न सके कि क्या किया जाए। अगर यह न हुआ होता, तो वे पाँच-दस मिनट में विजयनगर की भूमि में पहुँच जाते। सिपाहियों को देखकर गणेश की और गुंडप्पा की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

"कौन हैं ये ?" सिपाहियों ने पूछा।

गणेश चुप रहा।

"इनको घड़ों के नीचे क्यों छुपा रखा था ?"

गणेश से कोई जवाब देते नहीं बना। पास ही खड़ा गुंडप्पा बुरी तरह कांप रहा था।

"कहाँ जा रहे थे इतने सबेरे ?"

"जी, जी,…हम…घड़े…बेचने…" गणेश ने सँभलते हुए कुछ कहना चाहा, फिर उसने चुप रहना ही उचित समझा।

"घड़े बेचने या इन औरतों से …?" सिपाही शायद कुछ और बकता, अगर उसे साथ का सिपाही फौरन न टोकता।

तुरन्त गाड़ी को पीछे लौटाया गया। दो सिपाहियों ने गणेश के हाथ बाँध दिए। वे जैसे-जैसे आगे बढ़ते जाते थे, वैसे-वैसे इस तरह सिपाही जमा होते जाते, जैसे वे इस घटना की प्रतीक्षा में नदी के किनारे जगह-जगह छिपे बैठे हों।

सिपाहियों ने मन में निश्चय कर लिया कि यह सीता ही है, जिसकी खोज के लिए, हमको यहाँ तैनात किया गया था। वे सुल्तान से इनाम पाने की आशा में बड़े खुश थे।

वे थोड़ी देर में एक गाँव में पहुँचे। वहाँ सिपाहियों का एक और जत्था उनसे आ मिला। गाँव से एक पालकी ली गई। उसमें गद्दे वगैरा सजाए गए। सीता और उसकी बुआ को उसमें बिठाया गया और गणेश और गुंडप्पा को पालकी उठाने के लिये कहा गया।

पालकी के चारों ओर घुड़सवार सिपाही थे। सख्त पहरा था और पालकी सुल्तान के पास भेजी जा रही थी।

●●●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: २६ :

कहा जा रहा था कि सीता को एक रानी की तरह दरबार में उपस्थित किया जाएगा। पर वह उपस्थित नहीं की गई।

नगर में पहुँचते ही, उसको इस प्रकार राजमहल में ले जाया गया, जैसे वह कोई सुल्तान की पत्नी हो, या उनकी नजदीकी रिश्तेदार। गणेश को भय था कि कहीं वे ज़ेल की कोठरी में न डाल दी जाएँ। पर इससे भी अधिक भयंकर आशंका उसको सताने लगी। ज्योंही वे राजमहल के अन्तर्भाग में गए, त्योंही उनको रोक दिया गया। सिर्फ सीता और उसकी बुआ को अन्दर ले जाया गया। बुर्जों, छज्जों से हजारों आँखें उनको एक साथ घूर-घूर कर देख रही थीं। खम्भों की आड़ में, परदों के पीछे से महरियाँ, गुलाम, हिँजड़े—सब अचरज से उन दोनों की ओर निहार रहे थे। एक दालान के बाद दूसरा दालान खुलता जाता था। ड्योढ़ी के बाद ड्योढ़ी और सब जगह कुहराम-सा मच रहा था, इतने लोगों की इतनी तरह की कानाफूसी हो रही थी कि दबा-दबा सा शोर सब जगह गूँज रहा था।

सीता सिर ऊँचा करके चलती जाती थी और उसकी बुआ सिर नीचा किए, लजाती-लजाती लड़खड़ाती जाती थी। सीता में एक प्रकार का अल्हड़पन था, एक प्रकार की निश्चिन्तता। भगवान् पर इतना विश्वास कि कोई भी विपत्ति उसको झकझोर नहीं पाती थी। गाँव की इस साधारण लड़की में अहं कुछ इस तरह समाविष्ट था कि वह बिलकुल निर्भय हो गई थी, छोटी सी उम्र में ही उसने इतना कुछ देखा था कि अन्तःपुर के ठाट-बाट, राजमहलों की तड़क-भड़क, उत्सुक लोगों का जनसमुदाय, उसे तनिक भी प्रभावित नहीं करता था। उसने भी सोचा था कि उसे कैदी की तरह सीधे सुल्तान के पास ले जाया जाएगा, पर उसने सुल्तान को नहीं देखा। उसे नहीं ले जाया गया। वे दोनों एक महल में ले जाई गईं। ऊँची-ऊँची दीवारें और बड़ा दालान,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसके बीचोबीच छोटा सा संगमरमर का चबूतरा, एक तरफ दो-तीन संगमरमर के कमरोंवाला महल। कुछ दूर हटकर और तीन-चार कमरे। यह उस विशाल महल का अंग होते हुए भी, कुछ अलग सा था।

उनको संगमरमर के कमरे में ले जाया गया और वे बाँदियाँ जो उनके साथ आई थीं, सलाम करके चली गईं। वहाँ मोती जड़े तख्त थे। जगह-जगह सुगन्धित द्रव्य जल रहे थे। मोटे-मोटे रेशमी परदे पड़े हुए थे। तिपाइयों पर रजतपात्रों में फल और खाद्य पदार्थ रखे हुए थे। नक्काशीदार सुराहियों में मादक पेय। इन कमरों में दो-तीन नौकरानियाँ तो थीं, पर सुल्तान नहीं न था।

सीता फर्श पर इस तरह बैठ गई, जैसे उन कीमती मोती जड़े तख्तों पर बैठने की उसे मुमानियत हो। उसकी बुआ ने उसको उठने को इशारा किया और अपने साथ कालीन लदे एक तख्त पर बिठा लिया। वह इस तरह के जीवन से परिचित थी। राजमहलों के तौर-तरीकों से वाकिफ थी।

दिन ढल चुका था। सीता की बुआ सहज ही अनुमान कर सकती थी कि सूरज ढलते-ढलते इन राजमहलों में एक नई रोशनी आएगी, जिसमें पतंगों की मस्ती होगी और मतवालों की रौनक, नई-नई शमाएँ जलेंगी, बुझ जाएँगी और राख हो कुचल दी जाएँगी। ऐश की दुनियाँ में हसरतें हवा के झोंकों की तरह आती हैं और चली जाती हैं। पी-पी कर भी प्यास लगी रहती है। एक ऐसी दुनियाँ जहाँ सब कुछ मिलता है, और सब कुछ पाकर भी "और, और" का नशा, तड़पन, घुटन, सरूर और बढ़ते जाते हैं।

सीता की बुआ भले ही राख न हुई हो, पर वह जानती थी कि वह भी एक हवा के झोंके की तरह है, जिसे और झोंके आँधी बनकर आगे धकेल रहे हैं। इस प्रकार का वासनामय जीवन देखते-देखते वह ऊब-सी गई थी। वह नहीं चाहती थी कि अनाघ्रात पुष्प-सी सीता यहाँ कुचल दी जाए, इन दीवारों के अन्दर वह ईंट-पत्थर-सी न हो जाए। पर क्या किया जाए? उनको तो मगरों वाले ताल में डाल दिया गया था। फिर मगरों से कैसे बचाव हो? हम कर भी क्या सकती हैं? हम तो शिकार किए जाने वाले जानवर हैं.......मैं शिकार हुई तो हुई, पर मुझे सीता को बचाना होगा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो मुझे देखने के लिए अपनी जान की परवाह किए वगैर शत्रु के इलाके में आई। नारी का सतीत्व ही चला गया, सतीत्व ही छीन लिया गया, तो उसके जीवन का भी क्या अर्थ है ? वह दीप नहीं, भटका अंगारा है।...... नहीं, जैसे भी हो मुझे इसे बचाना होगा, मैं बिगड़ी हूँ, और बिगड़ जाऊँगी, तो कुछ नहीं होगा। पर, इसे नहीं बिगड़ने दूँगी। कितनी नादान है यह ? इस तरह यहाँ हर चीज को देख रही है, जैसे शहर में अपने किसी निजी रिश्तेदार के घर आई हो।

सीता वहाँ की एक-एक चीज को ठोंक-पीट कर, सहला-सहला कर, देख-देखकर, खुश हो रही थी। जैसे उसको एक साथ कई ऐसी चीजें देखने को मिल गई हों, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह छज्जे के पास खड़ी थी, कुछ दूरी पर एक नंगा पहाड़ था। उस पर दूर तक किले की दीवार चली गई थी और नीचे सड़क पर ऊँटों का काफिला चला जा रहा था। सूखा पहाड़, सूखी घाटी, खुश्क हवा और सूरज पहाड़ के पीछे अजीब धुंध में ललियाता-ललियाता छुप रहा था। वह तुरन्त बैठ गई और ध्यानमग्न हो गई। वह प्रार्थना करने लगी। अपने गाँव में भी वह सन्ध्या और प्रातःकाल यों प्रार्थना किया करती थी।

प्रार्थना करके जब वह अपनी बुआ के पास आई, तो बुआ ने कहा, "तू यहाँ कुछ न खाना, तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं है। तुम आराम से इस तख्त पर लेट जाओ।"

"नहीं, नहीं; मैं तो ठीक हूँ।" सीता ने कहा।

"नहीं, नहीं तुम बीमार हो। मेरी बात मानो, जिद नहीं किया करते।" बुआ ने इन शब्दों में सीता को समझाया।

सीता खिलखिलाकर हँसी। "हूँ, तो बीमार हो जाऊँ ? अच्छा, जैसा तुम कहोगी, वैसा ही करूँगी।"

"यहाँ जल्दी ही लोग आएँगे। वे चाहे जितना बोलें, पर तुम न बोलना, ख्याल रहे। समझी ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीता तख्त पर लेट गई, अँधेरा छज्जे के पार परदे की तरह उतर रहा था और बांदी ने अन्दर आकर रोशनी कर दो थी।

● ● ●

:२७:

तख्त पर लेटते ही सीता सोने लगो। यह उसकी बुआ के लिए बहाना ही हो, पर वह इतनी थकी हुई थी और तख्त इतना आरामदेह था कि पीठ टेकते ही वह सपनों की दुनियाँ में खो गई। बुआ उसके पास इस तरह बैठ गई, जैसे उसकी सेवा कर रही हो। दो-तीन बांदियाँ, जो उन कमरों के आस-पास थीं, कभी-कभी अन्दर झाँकतीं और फिर सीढ़ियों के पास इस तरह बैठ जातीं, जैसे किसी का इन्तजार कर रही हों। मौसम सुहावना था। आसमान साफ था और तारे झिलमिला रहे थे।

दालान के अन्दर चबूतरे पर गायक जमा हो गए थे, संगत शुरू हो गई थी और कोई नृत्यांगना नृत्य की तैयारी कर रही थी। चबूतरे पर एक रंग-बिरंगा शामियाना तान दिया गया था। शराब का दौर चल रहा था। मसनदें लगी हुई थीं, सुल्तान के आने का समय हो गया था।

कुछ देर बाद, सुल्तान झूमता हुआ आया। कद्दावर, रौबदार, बड़ी दाढ़ी, कन्धे झुके हुए। अधेड़, हाथ में छड़ी, वह चबूतरे पर आकर मसनद के सहारे आराम से बैठ गया और नाच जोर-शोर से शुरू हो गया। दालान के आस-पास जो कमरे थे, उनमें से औरतें झाँक-झाँक कर देखने लगीं। चाँदनी रातों में जब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मौसम अच्छा होता, इस तरह के मनोरंजन की व्यवस्था की जाती थी। सीता की बुआ ने भी सुल्तान को देखा। आज वह उसे पहली बार देख रही थी। उसे देखकर वह अनुमान भी नहीं कर सकती थी कि दो प्राणियों को उसी के हुक्म पर उसी के महल के एक हिस्से में रखा गया है। वह नशे में मस्त था। बुआ ने एक लम्बी साँस ली।

शारीरिक शक्ति क्षीण होने पर भी अपने-अपने चरित्र के अनुसार मनुष्य की आत्मा की भूख नहीं मिटती। भक्त ईश्वरोन्मुख होता चला जाता है। संन्यासियों का मन मोहपाश से और मुक्त होता जाता है और कामुक व्यक्ति नवयौवनाओं के मांसल शरीर की ओर और भी पैनी दृष्टि डालने लगता है। सच तो यह है कि मनुष्य अपनी परिस्थितियों की अपेक्षा अपनी भावनाओं का ही दास अधिक होता है।

सीता की बुआ का जिस नवाब के साथ ताल्लकु था, उसकी भी यही हालत थी, उसके साथ रहकर भी वह अपने को अछूती समझती आई थी। उसने सोचा—यह सुल्तान भी ऐसा ही होगा। कुछ भी हो, इसके हाथ हमारी सीता पर नहीं पड़ने चाहिए। मैं सीता को मार दूँगी, पर इन लोगों के हाथ नहीं पड़ने दूँगी। जिसको इतने पूजनेवाले हैं, वह इन लोगों के जनानेखाने में नहीं सड़ेगी। किन्तु, क्या किया जाए ?

बुआ कभी कन्धे के सहारे बैठी बैठी ऊँघती, तो कभी झटके के साथ उठ जाती और कमरे में धीमे-धीमे चलने लगती। रात काफी हो गई थी, पर चबूतरे की महफिल उठती न लगती थी। वह अनुमान कर रही थी कि महफिल के बाद सुल्तान शायद इन कोठरियों में आए। ऐसी स्थिति में सुल्तान प्रायः नशे में चूर जनानेखाने के किसी कमरे में पहुँचा दिया जाता था और सारी रात वहीं काट देता था। बुआ सिहर उठी—कहीं वह हमारे कमरे में तो नहीं लाया जाएगा ?

थोड़ी देर बाद सुल्तान डगमगाता हुआ सीता के कमरे की ओर आया। सीढ़ियों से टकराया, गिरते-गिरते बचा। जब वह कमरे में आया तो बुरी तरह हाँफ रहा था, उसने बुआ की ओर आँखें गड़ाकर देखा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"तो तुम हो ?" वह गुर्राया। बुआ को ऊपर से नीचे तक देखने लगा। बोला, "खूब हसीन हो तुम····हूँ···।"

बुआ शर्मिन्दा हुई। नजरें नीची करके, पैर से कालीन रगड़ने लगी।

"यहाँ कोई तकलीफ तो नहीं है ?" सुल्तान ने पूछा।

"जी नहीं।"

"इधर आओ, चाँदनी में आओ, देखें तो सही।"

बुआ खड़ी रही। आगे न बढ़ी।

"चाँदनी में शक्ल पर रौनक आती है···और···।" सुल्तान ने उसके कन्धे पर धीमें से हाथ रखते हुए कहा, "हूँ, तुम खूबसूरत हो, पर हमसे कहा गया था कि यह औरत तो बहुत कमसिन है।"

बुआ का भय बढ़ा।

"मुझे बताया गया था कि दो औरतें आई हैं।"

बुआ ने कुछ न कहा। सुल्तान ने इधर-उधर देखना शुरू किया। तख्त पर सीता को लेटी हुई पाया। भारी आवाज में बोला, "तो क्या यही है वह दूसरी औरत ?"

बुआ चुप रही।

"अरे, हम आए और यह सो गई; दीदार भी नहीं हुए। उठाओ। नहीं, नहीं···मैं हसीन औरतों को उबासियाँ लेते हुए नहीं देखना चाहता।—तो यही है न दूसरी औरत ?"

बुआ अब भी चुप रही।

"कहती क्यों नहीं हो ? सुना है, बहुत खूबसूरत है। विजयनगर का राजा तक इस इस पर फिदा हो गया था और मैं उसकी लड़की को ब्याह करके लाया हूँ।"

बुआ मौन साधे खड़ी रही।

"हम शायद ठीक वक्त पर नहीं आए, बेचारी थक गई होगी। कमसिन जो है, क्यों, है न यही बात ?"

"हुजूर माफ करें, उसकी तबीयत खराब है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"हूँ, अच्छा, तो हम हकीम भिजवा देंगे। तो तुम बैठो···आओ, पास आओ, देखें तो···" कहते हुए वह बुआ के कन्धे सहलाता, उसके केशों पर अँगुलियाँ दौड़ाता, इस तरह आँखें फाड़कर देखने लगा, जैसे वहाँ बहुत कुछ देखने को हो, और वह कम ही देख पा रहा हो। उसकी पलकें भारी हो रही थीं, नशे से झुकी जा रही थीं। फिर भी उसने कहा, "आओ बैठो, गाना जानती हो ?"

बुआ चुप रही।

"नाचती हो ?"

बुआ चुप।

"बड़ी संजीदा औरत मालूम होती हो। हूँ। अच्छा सुनो, तुम इस लड़की की कौन होती हो ? शायद तुम्हारी सेहत भी ठीक नहीं है और इसीलिए एकदम खामोश हो······अरे; तुम तो बार-बार आँखें मूँद ले रही हो। तौबा, तो क्या मुझे यहाँ दीवारों से जी बहलाने को लाया गया था ?" सुल्तान कुछ नशे और कुछ गुस्से में बकता जा रहा था।

बुआ फिर भी खामोश रही। सुल्तान उसको कुछ देर तक आँखें गड़ाए देखता रहा। इतने में एक बाँदी ने आकर कहा, "हुजूर को विजयनगर की बेगम के महल में याद किया जा रहा है। आज हुजूर को वहीं सोना है।"

बाहर एक कुर्सी रखी हुई थी। सुल्तान बिना कुछ कहे उसमें जा बैठा, और फिर उसको हिंजड़े उठाकर ले गए।

● ● ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: २८ :

सीता जब सवेरे उठी, तो उसे लगा, जैसे उस दालान में प्रकाश भी वर्षा की बूँदों की तरह झर रहा हो। दीवारें इतनी ऊँची थीं कि सहज ही ऐसी भ्रान्ति होती थी। वह खम्भे के सहारे खड़ी बाहर देख रही थी, उसकी बुआ अन्दर सो रही थी, सारा महल सोता-सा लगता था। कहीं कोई चहल-पहल नहीं। आना-जाना नहीं, वह बड़ा महल एक जेल-सा लगता था।

कुछ देर वह यों ही खड़ी रही। फिर दालान में घूमने लगी, कभी किसी झरोखे से अन्दर देखती, तो कभी किसी पत्थर को लुढ़काती, जैसे कोई नादान लड़की किसी अनजान जगह पर आ गई हो, और यह जानने की कोशिश कर रही हो कि वह है कहाँ या वहाँ है क्या ?

वह इधर-उधर खेलती रही और जब इधर उसकी बुआ उठी, तो उसे वहाँ न देख वह घबराई। उसकी आँखें डबडबा आईं। कहीं सुल्तान के आदमी उसे ले तो नहीं गए हैं ? कहीं वह छज्जे से कूद तो नहीं गई है ? कहाँ है वह ? वह भी उसे खोजती-खोजती बाहर आई और जब सीता को उसने चबूतरे पर देखा तो उसे एक साथ हँसी आई और रुलाई भी। वह भागी-भागी उसके पास गई।

"अरे, यहाँ क्या कर रही हो, बेटी ?"

"क्या अच्छा होता अगर यहाँ भी नीम का पेड़ होता। अपने मन्दिर के पास भी तो एक ऐसा ही चबूतरा है।"

"हूँ, पर यहाँ बैठा नहीं करते, यहाँ सुल्तान की महफिल लगती है रात को—।"

"हूँ, इस समय तो नहीं लगेगी ?"

"पर सुल्तान कभी भी आ सकते हैं। लड़कियों को यहाँ नहीं बैठना चाहिए।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"यह जगह अच्छी है······इस समय मैं घर में गाँयों को दुहा करती थी। हमारी गौवों को कौन दुह रहा होगा ?" सीता ने कहा।

"अरे बेटी, तुम्हें गौवों की पड़ी है और हमारी जान ही यहाँ खतरे में है।"

"क्या खतरा है ? जब तक भगवान् हमारे रखवाले हैं तुम फिजूल फिक्र करती हो, बुआ !" कहकर सीता ने एक मासूम हँसी हँस दी।

"हूँ।"

"बुआ, कभी तुम्हें बाबा याद आते हैं ? वे खाट पर बैठे-बैठे खाँस रहे होंगे। न मालूम उनको कोई गरम पानी भी देनेवाला है कि नहीं ? सबको देखनेवाले भगवान् है, उनको भी देख रहे होंगे।"

"यहाँ बातें नहीं किया करते। चलो, अन्दर चलो।" बुआ ने सीता को हाथ पकड़कर उठाया और अपने साथ कमरे के अन्दर ले गई।

"क्यों, हमें वहाँ बातें नहीं करनी चाहिए ?" सीता ने पूछा।

"बेटी, यह चबूतरा ऐसी जगह पर बना है और ये ऊँची दीवारें इस तरह बनाई गई हैं कि धीमी-सी आवाज भी खूब गूँजती है। गनीमत है कि लोग सो रहे हैं। पता नहीं, तेरी बातें सुनकर वे क्या सोचते ?"

"मगर ऐसा क्यों होता है ?"

"सब कोई तो सुल्तान के सामने बैठकर नाच गाना देख नहीं सकते, पर आवाज गूँजकर इतनी बुलन्द हो जाती है कि हर कोई अपनी-अपनी जगह बैठा उसका आनन्द ले सकता है।"

"हूँ।"

"ऐसी जगह, कोई कानों में फुसफुसाकर साजिश भी नहीं कर सकता। यह कहने को तो महल है, पर कई बातों में जेल से भी बदतर है। खैर, अब तुम उठ गई हो, नहा-धो लो। इन कमरों के पिछवाड़े में ही गुसलखाना है।"

"अच्छा।" सीता पिछवाड़े चली गई। बुआ तख्त पर बैठ गई।

सीता को बचाने के लिए बुआ को कई रास्ते सूझते, पर अधिक सोचने-विचारने पर वह उन रास्तों को बन्द गलियों की तरह पाती। फिर कोई और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपाय सोचती। मगर कोई भी ऐसा रास्ता न सोच सकी, जो शीघ्र कारगर हो सकता। वह बैठी कभी किसी भगवान् से प्रार्थना करती, तो कभी किसी भगवती से, तो कभी खुदा की दुआ माँगती।

सीता जल्दी-जल्दी आई और बोली, "बुआ, हम तो यहाँ आराम से हैं। गणेश कहाँ है, उसका क्या हुआ होगा?"

"वह लड़का है। जो भी कुछ होगा, कोई बात नहीं है। तू अपने बारे में सोच कि तेरा क्या होगा?"

"मेरा क्या होगा? कुछ नहीं होगा।" तुम फिक्र न करो। सीता ने कहा।

"तू रही वही नादान गाँव की लड़की।"

महल में लोग जगने लगे थे और रोजमर्रे का काम शुरू हो गया था। उनकी बाँदियाँ भी उनकी सेवा करने के लिए हाज़िर हो गई थीं। कमरों को जल्दी-जल्दी साफ कर दिया गया। तख्तों पर नई चादरें बिछा दी गईं। तिपाइयाँ साफ कर दी गईं। इन तैयारियों से जाना जा सकता था कि जल्दी ही यहाँ सुल्तान आनेवाले हैं। फिर तीन-चार नौकरानियाँ बड़े बड़े थालों में नाश्ता ले आईं। उन्होंने सूचना दी—"सुल्तान आ रहे हैं।"

"अकेले?" बुआ ने पूछा।

"हाँ, मगर आप जो हैं।" कहती-कहती वह चँवर लेकर द्वार पर सुल्तान की अगवानी करने के लिए खड़ी हो गई।

बुआ का ख्याल था कि सुल्तान इतनी जल्दी नहीं उठेंगे। रात में ऐश करनेवाले अक्सर दिन में देर तक सोते हैं। यह सुल्तान कुछ अपवाद-सा था।

सुल्तान लम्बे-लम्बे डग भरता उनकी ही ओर आ रहा था। उतरती उम्र के बावजूद उसकी चाल में एक अजीब चुस्ती थी। आँखें लाल थीं, शायद वह शराब का असर था। पोशाक भी मामूली थी, जैसे बिस्तरे पर से उठकर सीधे यहाँ चला आ रहा हो। आते ही उसने बुआ की पीठ थपथपाई। उसका आना इतनी जल्दी हुआ था कि बुआ सोच भी नहीं पाई थी कि सीता के बारे में क्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहे। वह हैरान थी। और इस बीच स्वयं सीता उत्सुकतावश सुल्तान को देखने चली आई। इससे पहले उसने कभी किसी सुल्तान नहीं देखा था।

"तो, तुम वही लड़की हो, जिस पर……अरे, खैर जाने दो।" सुल्तान ने कहा। उसका हाथ ऊपर उठा। न मालूम उसने क्या सोचकर उसे फिर नीचे कर लिया। बोला, "कुछ खाया कि नहीं…हाँ, तो तुम्हारी तबीयत कैसी है ?"

"वैसी ही है।" सीता की बुआ ने कहा।

"हमने तुमसे नहीं पूछा…बताओ, तुम्हारी तबीयत कैसी है ?" बुआ को झिड़कते हुए सुल्तान ने सीता से इस तरह पूछा जैसे कोई बूढ़ा बाप अपनी किसी जवान लड़की से पूछ रहा हो।

"ठीक है।" सीता ने कहा।

"आओ, तो खाओ,……मैं रात भर तुम्हारे बारे में ही सोचता रहा। ठीक तरह नींद भी न आई।" सुल्तान बोला।

पता नहीं वह क्या सोचकर यहाँ आया था और यहाँ आकर क्या सोचने लगा था कि जल्दी जल्दी खाने खाना लगा; जैसे कोई निश्चय कर लिया हो और वहाँ वक्त जाया करना गैरमुनासिब हो।

बुआ घबरा रही थी कि न मालूम सुल्तान क्या-क्या पूछे और नादान सीता न मालूम क्या-क्या उसका जबाव दे। पर सुल्तान ने कुछ भी न पूछा। वह सीता को, तल्लीन-सा हो देखता रहा, जैसे वह कोई खूबसूरत तस्वीर हो या जीती जागती बुत हो। एक क्षण बुआ ने सोचा कि उसकी दैवी शक्ति उस बूढ़े सुल्तान पर असर कर रही है। सुल्तान एकाएक उठा और कमरे में इधर-उधर देखता बाहर चला गया। बाहर निकलते निकलते उसने पूछा, "यहाँ कोई तकलीफ तो नहीं है तुम लोगों को ?"

"जी नहीं, मेहरबानी है हूजूर की।" बुआ ने हाथ जोड़कर कहा।

• • •

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

:२६:

सुना गया कि उस दिन सुल्तान दरबार में नहीं गया। काफी देर तक तो महल में ही रहा, फिर हाथी पर सवार होकर शहर से दूर अपने लड़के के महल में चला गया। वह अक्सर वहाँ नहीं जाया करता था। उसके लड़के के लिए अलग महल था। वह ऐयाश समझा जाता था और पिता लड़के की ऐयाशी में दखल नहीं देना चाहता था। सुल्तान को यह बात नहीं पसन्द थी कि उसका लड़का सियासी मामलों में दखल दे।

जब सुल्तान वहाँ गया तो कई तरह के अनुमान किए जाने लगे। एक अनुमान यह भी था कि सुल्तान शहर छोड़कर कहीं बाहर जा रहा है और शासन की बागडोर लड़के को सौंपना चाहता है। और दूसरा अनुमान यह था कि सुल्तान विजयनगर पर फिर आक्रमण करने का उपक्रम कर रहा है। तीसरा अनुमान यह था कि वह अपने लड़के से अपना निजी खर्च कम करने के लिए कहने गया है। उस दिन वह अपने लड़के के महल में ही रहा। अँधेरा होने के बाद ही अपने महल वापस आया और आते ही विजयनगर की बेगम के यहाँ चला गया। वह कहीं भी हो, पर उसके आने-जाने की खबर कानों-कान, महल के कोने-कोने में पहुँचती थी। जब यह खबर सीता की बुआ को मिली, तो वह मन-ही-मन खुश हुई। उसको भय था कि अँधेरा होते ही, सुल्तान सीता को देखने आएगा। उसके आने से एक भय था, न आने से एक और भय था।

सीता सवेरे से बाहर जाने के लिए अपनी बुआ को तंग कर रही थी, कभी यहाँ जाने के लिए कहती, कभी वहाँ। उसको कमरे में रखना कठिन हो रहा था। बुआ ने दो चार दासियों से बातें करके देखा। पर, उनसे कोई सहायता मिल सकेगी, इसकी आशा उसने छोड़ दी थी। उनकी मिन्नत-चिरौरी करके उसने इतना मालूम कर लिया था कि गणेश और गुंडप्पा महल के मेहमानखाने में सुरक्षित हैं, पर वे बेचारे न उन दोनों के यहाँ जा पाते थे, न वहाँ ही आराम से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रह पाते थे । बुआ इतने बड़े महल में थी, पर वह ऐसा अनुभव कर रही थी जैसे वह एक बड़े गहरे कुएँ में डाल दी गई हो और ऊपर आने के लिए न कोई सीढ़ी हो, न कोई रस्सी । एक-एक क्षण मुश्किल से कट रहा था । भविष्य के बारे में वह इस तरह चिन्तित थी कि नींद भी नहीं आती थी । वह अपने को एकदम असहाय पा रही थी । खुदकुशी कर लेना आसान था, पर उससे सीता की स्थिति और बिगड़ जाती । उसने यह भी सोचा था कि पिछले दिन रात की तरह, महल में दालान के चबूतरे पर फिर महफिल लगेगी और आधी रात तक वह चलती रहेगी । पर, उस दिन सुल्तान उस तरफ आया ही नहीं ।

बातों-बातों में बाँदियों से मालूम हुआ कि महल में विजयनगर की बेगम क्या आई थी कि महल का रंग ही बदल रहा था । न मालूम वह सुल्तान पर क्या जादू कर रही है । यह कहा-सुना जा रहा था कि वह सुल्तान को अपने पंजे में रखकर मार देना चाहती है, ताकि वह अपने पिता का उससे बदला ले सके । उसको लेकर, राजमहल में कई गुट बन गए थे । कई बेगमें उसको मारने तक के लिए साजिश कर रही थीं । यह भी सुना गया कि सुल्तान विजयनगर की बेगम के लिए अलग महल बनवा रहा है । जगह देखने ही, वह कल शहर के इर्द-गिर्द घूमता रहा था । कुछ लोगों की यह धारणा थी कि अगर विजयनगर की बेगम का दबाव न होता, तो सुल्तान सीता से भी शादी कर लेता । विजयनगर वाली बेगम ने सुल्तान से कहा था कि यदि उसने सीता से शादी की, तो वह ख्वाह-मख्वाह विजयनगर से शत्रुता मोल लेगा । जब कि उसने विजयनगर से कुछ समय तक युद्ध न करने का वादा किया हैं । सुल्तान ने तत्क्षण उसकी सलाह भी मान ली ।

महलों में इस तरह की खबरें सवेरे से शाम तक उड़ती रहती थीं, हर कोई अपनी पतंग उड़ाता था । कभी किसी की किस्मत जगती, तो कभी वह धूल में मिला दी जाती । सीता की बुआ महल के इस माहौल से अच्छी तरह वाकिफ थी । उसे जब यह मालूम हुआ, तो वह बेहद खुश हुई । शायद यही कारण था कि सुल्तान उनके कमरों में नहीं आया था । आसार अच्छे मालूम होते थे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसको ऐसा लगने लगा, जैसे वे छोड़ दी जाएँगी। फिर एकाएक सन्देह होता, क्या कोई जाल में फँसी चिड़ियों को भला यों ही छोड़ता है? जो भी हो, अनुमान को सत्य तो नहीं ही बनाया जा सकता था।

इसी उधेड़-बुन में बुआ की आँखें लग गईं। महल में सन्नाटा था। सीता आराम से सो रही थी। उसे शायद सपने भी नहीं सता रहे थे। बुआ जब सवेरे उठी, तो काफी समय हो गया था। सीता नित्यकृत्य से निवृत्त होकर, छज्जे में बैठकर, बाहर प्रकृति की छटा देख रही थी। बुआ ने उसे इस बाल-सुलभ मुद्रा में देखकर अनुभव किया कि मेरा उत्तरदायित्व कितना बड़ा है। एकान्त में, चिन्ता निरन्तर रूप बदलकर आँखों के सामने फिरती ही रही थी। सीता को देखकर उसे चिढ़ भी लगती, वह 'क्यों नहीं चिन्तित है? क्यों इतनी निश्चिन्त है?'

इतने में नौकरानियाँ सुल्तान के महल से बड़े-बड़े थालों में नए-नए वस्त्राभूषण लाईं। उन्हें देखकर बुआ का बनता-बिगड़ता हवामहल एकाएक ढह-सा गया।

"हुज़ूर ने आप दोनों को याद किया है। पालकियाँ आ रही हैं। तैयार रहिए।" नौकरानियों ने कहा।

सुल्तान का हुक्म था, इसलिए टाला भी नहीं जा सकता था। अगर टालना भी चाहती, तो न मालूम ये लोग क्या उत्पात मचातीं। सुल्तान के हुक्म की तामील की जाती है, वरना सख्त सजा दी जाती है। सीता पसोपेश में थी, लाचार थी। उन्होंने थोड़ी देर आनाकानी भी की, पर जब कमरों के सामने पालकियाँ आ गईं, तो उन्हें कपड़े बदलने पड़े।

वे सुल्तान के सामने पेश की गईं। सुल्तान अकेला था। छोटा-सा संगमरमर का कमरा, सादी पोशाक। वह सफेद गद्दे पर मसनद लगाकर बैठा था। यह कमरा एक बड़े हॉल के बाहर बरामदे में, दो-एक वजीर, नौकर चाकर और बांदियाँ थीं। पर, सुल्तान के पास कोई न था। कमरा भी इतना बड़ा न था कि उसमें दो-चार आदमी खड़े हो सकें। खिड़की के पास कुरानशरीफ रखा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था। दिन में सुल्तान यहीं आराम करता था। उसके कमरे के पीछे एक बरामदा था, जो सीधे हरम तक जाता था।

बुआ और भतीजी, दोनों को सुल्तान के कमरे के सामने खड़ा किया गया। बुआ तो कांप रही थी, पर सीता मुस्कराती हुई हॉल में लगे झाड़फानूसों को देख रही थी।

"सब ठीक है न ?" सुल्तान ने पूछा।

"आपकी मेहरबानी है।" बुआ ने जवाब दिया।

"जगह पसन्द है न ? अब तुम हमारे हरम में ही रहोगी। मैंने सीता का, यही नाम है न ? खैर न भी हो, तो हम बदल देंगे।"

"जी ?" बुआ आश्चर्यमिश्रित भय से सुल्तान की ओर देखने लगी।

"हमने तय किया है कि हमारे बड़े लड़के के साथ सीता का निकाह हो।"

बुआ पर मानों बिजली गिर गई। सीता भी सँभलकर स्तब्ध खड़ी रह गई। दोनों ने सपने में भी न सोचा था कि वे इस एलान को सुनने के लिए यहाँ बुलाई गई हैं।

"तैयारियाँ शुरू हो जाएँगी और पाँच-दस दिन में निकाह हो जाएगा। मैंने जरूरी इन्तजामात के लिए हुक्म दे दिया है....अब तुम जा सकती हो।" सुल्तान ने गम्भीर होकर कहा।

बुआ और भतीजी सिर नीचा करके जब हॉल में से होती हुई बरामदे में गईं, तो वहाँ खड़े दरबारियों की भीड़ इस तरह छँट गई, जैसे कोई बेगम चली आ रही हो और सीता यह अनुभव कर रही थी, जैसे वह बलि के लिये ले जाई जा रही हो।

● ● ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

:३०:

शादी के मौके पर अक्सर काफी शोरगुल रहता था। और शायद इस बार भी होता, यदि सुल्तान के हाथ बँधे न होते, और राजनैतिक परिस्थितियाँ अनुकूल होतीं। कहा गया कि विजयनगर की बेगम का ही यह सुल्तान पर असर था। यह भी सुना गया कि सुल्तान अपने हरम की जूठन को यूँ बाहर कर रहा था। किसी ने यह न कहा कि जवान लड़की को जवान लड़के को दिया जा रहा है। दुनियाँ भर की कानाफूसी चल रही थी।

सुल्तान का लड़का अधेड़ हो चुका था। उसकी भी कई बेगमें थीं। हमेशा पीकर महल में मस्त पड़ा रहता। उसके पिता को भी यह पसन्द था। नहीं तो उसे डर था कि गद्दी के लिए वह भी बगावत कर सकता है। चाहे कुछ भी करे, जब तक बगावत से दूर है, अच्छा है, उसका पिता सोचा करता था। गद्दी के लिए, साज़िश करनेवाले और उम्मीदवारों के लिए भी यह गवारा था।

वह शासन से इतना विरक्त था कि शहर से बाहर अपनी अलग दुनियाँ में रहा करता था। अगर शहर में कभी कोई मुख्य समारोह होता, तब भी वह नहीं जाता था। मज़हबी बातों में भी उसे कोई खास दिलचस्पी न थी। वह या तो लड़कियों में फँसा रहता, नहीं तो आसपास कहीं शिकार पर निकल जाता।

तैयारियों के नाम पर, सुल्तान अपने लड़के को नई लड़की के साथ बड़ी जागीर देने जा रहा था। इसी के लिए दरबार बुलाया गया। जागीर के बारे में एलान तो सबने सुना, पर नई दूल्हन का चेहरा किसी ने नहीं देखा।

बहुत कहा-सुना गया, उसके बारे में—कि हिन्दू है, जादूगरनी है, है, खूबसूरती में उसका कोई जवाब नहीं है....विजयनगर का राजा भी उस पर इस बुरी तरह फिदा था कि गद्दी का भी त्याग करने उसे पाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाहता था। यह भी कहा गया कि जहाँ कहीं वह रहती है, उसी जगह के राजा या सुल्तान की विजय होती है, इसीलिए सुल्तान उसकी अपने लड़के से शादी करके उसको हमेशा विजयी रखना चाहता है। जो जंग में लड़ नहीं सकता, वह कम-से-कम एक स्त्री को पाकर तो अपनी सल्तनत बनाए रखे। जिसके यहाँ सैकड़ों स्त्रियाँ हैं, वहाँ एक और कोई ज्याद भारी नहीं पड़ेगी।

इन सुल्तानों के हरम में रोज इस तरह स्त्रियाँ लाई जाती थीं और भेज दी जाती थीं कि किसी ने इस नए निकाह के बारे में विशेष उत्साह नहीं दिखाया।

इतना सब हो रहा था, और हो चुका था, पर सीता को कोई चिन्ता न थी। लेकिन उसकी बुआ और उसके साथियों को सिवाय चिन्ता के और कुछ नहीं था। उनका हाल दयनीय था।

अगले दिन सवेरे निकाह था। सीता को सजाया जाने लगा। वह नए-नए कपड़ों और गहनों को देखकर अजीब ढंग से हँसी। वह कुछ-कुछ खुश भी थी। वह अपने पर हँस भी रही थी—मैं देवराय के निवास से दूर भागना चाहती थी, अब इस सुल्तान के महल में आ फँसी। बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं। रोने-चिल्लाने और हाय-तोबा करने से क्या फायदा? जो होना है, सो होकर रहेगा।

वह कभी मन-ही-मन हँसती, तो कभी अनायास उसके आँसू भी ढुलक पड़ते। तब उसकी बुआ भी साथ रो पड़ती। फिर उसे अचरज होता······क्यों इन लोगों ने इस छोटी सी लड़की को लेकर इतना हंगामा मचा रखा है।

नज़राने पर नज़राने आते थे। कुछ सुल्तान के महल से, तो कुछ शाहजादे के महल से। सीता के नाम पर भी सुल्तान ने एक जागीर लिखवा दी थी। उसे शायद सीता के बारे में कोई अन्ध विश्वास तो नहीं, पर शायद सीता को अपने लड़के को भेंट में देकर, देवराय को वह चिढ़ाना चाहता था।

अगले दिन एक बड़े जुलूस के साथ सीता को शाहजादे के महल में भेजा गया। जुलूस में कितने ही हाथी और घोड़े थे। सल्तनत के उमराव भी पालकियों में जा रहे थे। गणेश और गुंडप्पा सीता से चार आँखें करना चाहते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे भी जुलूस में थे। पर वे न सीता के पास जा सकते थे, न सीता ही उनके पास आ सकती थी। उसके आँसू छलके जाते थे और पैर चक्की-से घिसटते जाते थे।

शाहजादा सीता को लिवा लाने के लिए अपने महल की ड्योढ़ी पर खड़ा था। उसके साथ सब-के-सब एक बड़े शामियाने के नीचे चले गए। वहाँ कई रस्में पूरी की गईं। जहाँ देखो, वहीं बेशकीमत परदे लगे हुए थे। अन्दर क्या हो रहा है और क्या नहीं हो रहा है, पता लगाना मुश्किल था।

शाम तक लोगों को खिलाया-पिलाया जाता रहा। गाना-बजाना चलता रहा। अँधेरा होने के बाद आतिशबाजियाँ छोड़ी गईं। शराब का दौर चला। गुलछर्रे उड़े। सुल्तान अपने महल वापस चला गया।

सीता को महल के सजे-धजे हिस्से में उसकी बुआ के साथ भेज दिया। वह भी अब उन सैकड़ों औरतों में थी, जिन पर शाहज़ादे की कृपादृष्टि बारी-बारी से पड़ती थी।

कई रस्में पूरी हो गई थीं, पर वह रस्म जिससे शादी हमेशा के लिए पक्की हो जाती है, पूरी नहीं हुई थी; क्योंकि शाहजादा उसी दिन शिकार करके लाई गई एक गवाँर लड़की के साथ महल के किसी ओर कोने में पी-पा कर राग-रंग में मस्त था।

● ● ●

:३१:

सीता अपने कमरे में आकर सो गई। और कोई लड़की होती तो न मालूम क्या-क्या सोचती, क्या-क्या चाहती। पर वह थकी हुई थी, सो गई। कोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिन्ता नहीं, कोई उत्कण्ठा नहीं। विचित्र निश्चिन्तता, जैसे पहले ही जानती हो कि आगे क्या होने वाला है। उसकी बुआ की हालत अजीब थी, उसे न तो नींद आती थी और न वह आँख खोल इधर-उधर देख ही सकती थी। उनको कमरे में भेजकर सब इस तरह चले गए थे, जैसे उनका काम पूरा हो गया हो और उनका वहाँ आसपास रहना व्यर्थ हो। बुआ को उनका वहाँ न रहना ही बेहतर लगा। उसने निश्चय कर लिया था कि अगर शाहजादा उस कमरे में आएगा, तो उसकी लाश ही बाहर जाएगी। इसके लिए अगर उसे खुद भी मरना पड़ता, तो उसे मरना मंजूर था। उसे यह बात कतई पसन्द नहीं थी कि उसी की तरह उसकी नादान भतीजी सीता को भी वहाँ दोजख के दिन गुजारने पड़ें।

रात गुजरती गई। सवेरा हो गया। महल की दीवारों से परे पेड़ों पर चिड़ियाँ चहचहाने लगीं। नौकर-चाकरों का आना-जाना शुरू हो गया। पर शाहजादा न आया। बुआ को भय हुआ कि कहीं शाहजादा को मालूम तो नहीं हो गया कि वह उसका खातमा कर देना चाहती है। महलों में दीवारों के कान ही नहीं, जुबानें भी होती हैं। वे दिल में छिपी बातें भी जान जाती हैं। महलों में रहनेवाले कुछ भी सोचते हों, पर वे वाकई काँच के मर्तबानों में रहते हैं, हर कोई हर किसी की बात जान जाता है।

जब शाहजादा न आया, तो बुआ ने लम्बी साँस ली—जो रात में नहीं आया था, वह दिन में क्या आएगा ?

सीता प्रातःकाल उठी और पूर्ववत् आँखें पोंछकर ध्यान करने लगी। उसके मुख से ऐसा लगता था, जैसे वह कह रही हो—जब तक मेरे भगवान् मेरे साथ हैं, मैं अकेली नहीं हूँ, चाहे कहीं भी डाल दी जाऊँ। महल हो या जेल, मेरे लिए सब बराबर हैं। कुछ नहीं होगा।

वह उस कमरे के छज्जे से नीचे महल के आँगन में देख रही थी कि एकाएक भगदड़ मच गई। हाय-तोबा होने लगी। सब अपने-अपने कमरों से इस तरह भागकर आँगन में खड़ी हो गईं, जैसे कोई ज़लज़ला आया हो। इतने जोर-जोर से कानाफूसी होने लगी कि खासा शोर-गुल होने लगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीता की उत्सुकता बढ़ी। उसने जानना चाहा कि क्या हो रहा है। कहीं गणेश और गुंडप्पा को तो इन लोगों ने नहीं पकड़ लिया है, उन्हें कहीं सता तो नहीं रहे हैं। हो सकता है, उन्होंने महल के अन्दर घुसने की कोशिश की हो और वे पकड़ लिए गए हों। वह और ध्यान से देखने लगी। वहाँ स्त्रियाँ ही अधिक थीं। दो ही चार मर्द थे। गणेश नहीं था। फिर क्या हो रहा है?

सीता ने अपनी बुआ को उठाना चाहा, पर उसको आराम से सोती देख वह जान गई कि वह रात भर नहीं सोई होगी, इसलिए उसको उठाना अच्छा नहीं। वह अपने कमरे में चहलकदमी करने लगी। जब वह अपने कमरे से सटे पास के कमरे में गई, तो उसने वहाँ एक बाँदी को देखा, वह उसे झुक-झुक कर सलाम कर रही थी। सीता ने अनुमान किया कि वह उन्हीं के लिए मुकर्रर नौकरानी होगी।

"क्यों, क्या हो गया है?" सीता ने पूछा।

"नहीं मालूम, बेगम साहिबा।"

"तो जाकर मालूम करो।"

बाँदी का जाना था कि फिर शोर अधिक हुआ, फिर सीता छज्जे से देखने लगी। एक लड़की, जिसने फटा लहँगा पहन रखा था, और जिसके बाल बिखरे हुए थे, सीढ़ियों पर घसीटी जा रही थी। वह चीख-चिल्ला नहीं रही थी, स्त्रियाँ उसे लात मार रही थीं, बुरा-भला कह रही थीं, गालियाँ दे रही थीं, उस पर थूक फेंक रही थीं। सीता ने सोचा कि शायद कोई नौकरानी होगी, चोरी वगैरह की होगी, नहीं, तो चुगली खाई होगी, भुगत रही है।

उस लड़की को आँगन के बीचो-बीच लाकर एक खम्भे से बाँध दिया गया। एक आदमी ने एक जलती सींखची ली और उससे उसकी आँखें निकाल लीं। लड़की एक बार जोर से चिल्लाई और फिर झट चिल्लाना इस तरह बन्द कर दिया जैसे चिल्लाकर उसने गलती की हो, या अपनी कमजोरी दिखाई हो। उस पर पत्थर बरसने लगे, जिसके हाथ में जो आया, उसने उसे उस पर फेंका। देखने में वह गँवार लगती थी, पर उसकी सहनशक्ति शहीद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की सी थी। सीता ने उसके पास जाकर खड़े होने की सोची। वह सीढ़ियों पर उतर ही रही थी, कि उसकी बाँदी ने उसे रोका और उसे अन्दर ले गई। पर वह चुप न रह सकी। उसने अपनी बुआ को उठाया। उसने उठकर सामने का वह निर्दय दृश्य देखा। फिर उसने आँखें, इस प्रकार मोड़ लीं, मानो उसने इस तरह के दृश्य पहले बहुत बार देखे हों।

"इन महलों में उन स्त्रियों की हालत ऐसी ही होती है जो अपने सतीत्व की रक्षा करना चाहती हैं। किसी को फँसा लाए होंगे ये जालिम और उसने, खैर, तुम क्या देख रही हो वहाँ ? अन्दर जाओ, थोड़ी देर में यह तमाशा खत्म हो जाएगा। उस पर गिद्ध मँडरा रहे होंगे। चलो भी—" कहती हुई बुआ सीता का हाथ पकड़कर छज्जे से अन्दर कमरे में ले गई।

"क्यों क्या बात है?" सीता ने बाँदी से पूछा।

"बड़ी खूँखार लड़की है। इसने रात को, सुनते हैं, शाहजादा की आँखें फोड़ दीं। दीवार फाँदकर भाग जाना चाहती थी कि पहरेदारों ने पकड़ लिया।" बाँदी ने बताया।

"शाहजादा कहाँ है ?" बुआ ने पूछा।

"वे अपने कमरे में औंधे पड़े हैं। हकीम इलाज कर रहे हैं। न मालूम क्या हो। सुल्तान आ रहे हैं, सारा शहर महल के बाहर जमा हो रहा है।" बाँदी बताती गई।

"पर यह लड़की है कौन ?"

"कोई ग्वालिन है, सुनते हैं। शाहजादा शिकार के लिए गए थे, तो इसे पकड़ लाए। रात इसे अपने कमरे में ले गए और इसने मौका निकाल कर अपनी अँगुलियों से उनकी दोनों आँखें फोड़ दीं।

"बड़ी दिलेर लड़की है। ऐसी लड़कियाँ इन महलों में अक्सर नहीं आतीं।" बुआ के मन में कई बातें आ रही थीं, पर उसने उस समय चुप रहना ही उचित समझा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"अब क्या होगा इस लड़की का ?" सीता ने पूछा ।

"कुछ भी होगा, तुम्हें क्या ? तुम अन्दर चलो"—बुआ सीता को अन्दर ले गई ।

● ● ●

: ३५ :

तरह-तरह के अन्दाज लगाए गए । तरह-तरह की अफवाहें उड़ीं । पर सब जगह यही अधिक कहा-सुना जा रहा था कि कई सामन्तों ने साजिश कर-करा के शाहजादे को अन्धा करवा दिया है । एक गँवार कमसिन लड़की बिना उनके बढ़ावे के, शाहजादे का बाल बाँका नहीं कर सकती थी ।

इस अफवाह में कितनी सचाई थी, कहना मुश्किल है । पर लड़की को जो तुरन्त मरवा देना चाहते थे, उनमें कई सामन्त थे, जो शाहजादे के खिलाफ थे और खुद तख्तनशीं होने के ख्वाहिशमन्द थे । उन्होंने जाकर इसकी इत्तिला सुल्तान को भी कर दी थी ।

सुल्तान ने उस लड़की को महल के आँगन में, खम्भे से बाँधकर आँखें निकाल कर पत्थरों से पीट-पीट कर मार देने का हुक्म दिया था । इस तरह गँवार लड़की को कुछ कहने का मौका भी न दिया गया । अगर वह भागती हुई न पकड़ी जाती, तो सम्भव था कि सीता पर सन्देह किया जाता । फिर भी कहनेवालों का कहना था कि न मालूम किस बुरे वक्त पर वह महल में आई है कि उसके आते ही शाहजादे को अन्धा कर दिया गया ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुल्तान को सीता के बारे में बढ़ा-चढ़ा कर बताया गया। उसको थोड़ा-बहुत तो पहले ही मालूम था, वह उसका पहला निजी अनुभव भी था। अगर उसने सीता को पाना चाहा था, तो इसलिए नहीं कि उसमें असाधारण दैवी शक्तियाँ थीं, बल्कि इसलिए कि उसको भेदियों ने बताया था कि विजयनगर का राजा उस पर बेतरह फिदा है। फिर वह भटकी-भटकी खुद उसके इलाके में आ गई थी। और, जब से वह आई थी, उसका शुभ ही हो रहा था। उसको ये सब विश्वास पहले तो अन्धविश्वास से लगे, फिर वह स्वयं कुछ-कुछ विश्वास करने लगा, तभी उसने उसकी शादी अपने लड़के से की थी। पर, अब मामला एकदम उलटा हो गया था। उसे सूझ न रहा था कि क्या किया जाए?

पहले तो उसने सीता को भी मरवा देना चाहा। पर, उसका क्या कसूर था? अगर यह बात विजयनगर के महाराजा को मालूम हो गई तो?

अगर वह इस बार जीत गया था, तो पहले कभी विजयनगर के राजा से खदेड़ा भी गया था। युद्ध होगा तो न मालूम, किसका पड़ला भारी पड़े। यह भी सुना जा रहा था कि विजयनगर के हिन्दू मित्र-राज्य आपस में संगठित हो रहे हैं। यदि एक ऐसी स्त्री को जिसकी वे पूजा कर रहे थे, मरवा दिया गया तो वे सब एक साथ उबल पड़ेंगे। सुना जाता है कि वे पहिले ही नाराज हैं कि मैंने इस लड़की की अपने लड़के के साथ शादी कर दी है। क्या किया जाय? लोगों में भी यह विश्वास पक्का हो रहा है कि यदि सीता महल में कदम न रखती, तो शाहजादा अंधा न बनाया जाता। शायद वह गँवार भी शाहजादे की आँखें न निकालती, अगर उसी दिन सीता की उससे मैं शादी न करवाता,...हो सकता है, लड़के ने उस गँवार लड़की को ब्याहने का वचन दिया हो और वह छोड़ दिए जाने पर नाराज हो गई हो। यह लड़का, उम्र के बावजूद, नादान है। पता नहीं इस सीता को लेकर और क्या-क्या दिक्कतें पैदा हों। अंधे शाहजादे को गद्दी पर बिठाया नहीं जा सकता। तो गद्दी क्या मेरे भाई के लड़के को दी जाएगी? मेरे साथ क्या मेरा निजी खानदान भी खतम हो जाएगा? तो खैर, इस सीता का क्या किया जाय? सुल्तान सोचता रहा, सोचता रहा। ये सारे प्रश्न, उसके मन में उबल रहे थे। उसने विजयनगर की बेगम से बातचीत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो नहीं की थी, पर शुरू से ही वह कहती आई थी कि सीता को सल्तनत में रखना खतरे से खाली नहीं है। कभी भी वह युद्ध का कारण बन सकती है। विजय का कारण वह तभी तक है, जब तक सत्य उसके साथ है। सत्य को उसके सहारे की क्या जरूरत है ? वह स्वयं विजयी हो जाता है। क्या हैं ये विश्वास ? इन पर न सोचना अच्छा है। मनहूस बातें।

सुल्तान हौदे में तनकर बैठ गया। हाथी महल के अन्दर जा रहा था। वह अन्दर गया और एक ऊँचे चबूतरे पर उतर गया। सीधे अपने लड़के के कमरे में गया। वह बिस्तरे पर पड़ा-पड़ा कराह रहा था और हकीम उसे घेरे हुए थे।

वह फिर आँगन में गया। तब तक वह गँवार लड़की निष्प्राण हो चुकी थी। जगह-जगह से खून बह-बह कर जम गया था। फटे चीथड़े लटक रहे थे। वह नग्नप्राय थी और उसका सिर लटक गया था। उसके ऊपर कौव्वे काय-काय कर रहे थे।

"इसे निकाल कर बाहर फेंक दो।" सुल्तान ने हुक्म दिया। और उसको झट उतारकर ड्योढ़ी पर भेज दिया गया। वहाँ कुछ जंगली जानवरों को पिंजड़ों में रखा जाता था, और थोड़ी देर बाद सिवाय उसके चीथड़ों के, हड्डियाँ भी नहीं बचीं।

अब सुल्तान सीता के कमरे में गया। वह अन्दर कहीं थी। बाँदी के बुलाने पर, वह सुल्तान के सामने एक खम्भे के पीछे खड़ी हो गई। सुल्तान का मुँह लाल-पीला हो रहा था। जैसे कोई आक्रोश बाहर निकलने के लिए कोशिश कर रहा हो और निकल नहीं पी रहा हो, या वह लहू का घूँट पी गया हो और वह चेहरे पर छलक रहा हो।

"तुम आईं, और हमारे शाहजादे की आँखें जाती रहीं। क्यों ?" सुल्तान कुछ देर बाद इधर उधर देखते हुए बोला। वह शायद उसकी बुआ को देखना चाहता था। पर उसके बारे में कोई पूछताछ न की।

सीता कुछ न बोली। सुल्तान ने आशा भी न की थी कि वह कुछ बोलेगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"तुम यहाँ रहोगी, तो न मालूम और क्या-क्या कयामत ढाओगी। तुम अपने घर चली जाओ, मैं लड़के से कह दूँगा।"

"पर,······पर।" सीता ने कुछ कहना चाहा, किन्तु सुल्तान को दीवार की ओर निहारता देख चुप हो गई।

"पर शायद तुम कहना चाह रही हो कि तुम्हारी शादी हो चुकी है और कैसे तुम अपने पति को छोड़कर जाओगी ? मैंने कहा न कि मैं कह दूँगा, तुम जाओ। खुदा के वास्ते यहाँ से फौरन से पेश्तर चली जाओ।"

"पर मैंने तो शादी नहीं की है। कुछ रस्मों का मेरी मर्जी के बिना पूरा किया जाना शादी नहीं है····नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था, पर····पर····मैं जानना चाहती हूँ कि क्या सवारी वगैरह का इन्तजाम किया जाएगा ?" सीता ने हिचक-हिचक कर रुक-रुक कर कहा।

"बाकायदा किया जाएगा—तुम जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी अपने लोगों के साथ चली जाओ। मैं इस सिलसिले में सब जरूरी हुक्म दे रहा हूँ।" सुल्तान शायद इसके वाद कुछ और नहीं कहना चाहता था। वह लम्बे-लम्बे कदम रखता, सीढ़ियों से उतरकर जल्दी-जल्दी, अपने लड़के के कमरे की ओर चला गया।

● ● ●

३३:

थोड़ी ही देर में सीता, उसकी बुआ, गणेश और गुंडप्पा महल से निकल पड़े। उनकी सवारी के लिए दो हाथी दिए गए थे। बीस-पचीस घुड़सवार भी थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसकी बुआ खुशी से फूली न समा रही थी। उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि इस नाटकीय ढंग से सीता की विमुक्ति होगी और वह जीवित रह सकेगी। यह सोच उसे और भी खुशी होती, कहीं भी वह भटकी हो, अब वह भी अपने घर वापस जा सकेगी।

जब वे शहर से बाहर आ गए, और विजयनगर के मार्ग पर जाने लगे; तो सीता ने गणेश को याद दिलाया। "देखो भगवान् का चमत्कार.... भगवान् चाहेंगे तो मैं फिर बाबा की देखभाल कर सकूँगी।" वह नीचे मुँह किए मुस्करा रही थी।

सरकारी कर्मचारी शायद नहीं जानते थे कि सीता जा रही है। अगर जानते तो भी कोई उनको देखने न आता। वे निश्चिन्त चलते जाते थे।

"हमें हथियार लाने चाहिए थे। "गणेश ने कहा।

"क्यों?" गुंडप्पा ने जानना चाहा।

"भाई, ये सिपाही कहीं गड़बड़ करने लगें तो?"

"क्या गड़बड़ करेंगे ये? ये सुल्तान के हुक्म पर आ रहे हैं।"

"सुल्तान ने हमें भेजकर—अपने हाथ साफ कर लिए हैं, इन लोगों को सौंपकर। वे यह भी न सोचेंगे कि हमारा क्या हुआ?"

"हथियार भी हों तो जो कुछ होना होगा, वह होगा ही। तुम निश्चिन्त रहो, जिनकी वह रक्षा करता है, उनको शस्त्रों की आवश्यकता ही नहीं होती।" सीता ने ईश्वर की ओर संकेत करते हुए उनको आश्वस्त किया।

जब वे दुपहर के भोजन के लिए मार्ग के निकटवर्ती दुर्ग में ठहरे, तो उनके लिए सब व्यवस्था इस प्रकार की जा रही थी, जैसे वे कोई शाही मेहमान हों। और वे ही सिपाही जिनके बारे में गणेश इतना सशंक था, सीता को दूर-दूर से झुक-झुक कर सलाम कर रहे थे। वे भी सीता की प्रसिद्धि से प्रभावित थे और उसके दर्शन करके अपने को धन्य समझ रहे थे।

सीता के गाँव का रास्ता दो-तीन दिन का था। वह किसी और रास्ते गई थी और आज किसी दूसरे मार्ग से वापस आ रही थी। वह मार्ग के समीप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के दृश्य देखने में मस्त थी। यह मार्ग मरुस्थल में से नहीं जाता था, मगर कहीं कहीं मरुभूमि आती भी थी, तो कहीं सड़क के आस-पास पेड़ वगैरह थे। हरियाली थी।

जैसे-जैसे रास्ता कटता जाता था, वैसे-वैसे सीता भी अपने बाबा के बारे में चिन्तित होती जाती थी। न मालूम वे जीवित हैं या नहीं? गाँव है कि नहीं? मन्दिर है कि नहीं? वे लोग हैं कि नहीं?……सब भगवान् की दया है।

सीता को शायद नहीं मालूम था कि उसको लेकर विजयनगर में क्या-क्या हुआ है। वे ही भक्त जो उसे देखने आए थे, झुंडों में बँट गए थे और दक्षिण के सभी राज्यों में उसका यश गाते चक्कर काट रहे थे। जनता को उसके बारे में बता रहे थे। उसके बारे में कितने ही गीत लिखे जा चुके थे। वैतालिक और भाट घूम-घूमकर उसका प्रचार कर रहे थे।

हिन्दू राज्यों में, एक नए प्रकार का उत्साह संचरित हो रहा था। एक कन्या के अपहरण को लेकर हिन्दू-समाज में रोष छा गया था। धर्म को लेकर नया संगठन बन गया था। और भी कारण हो सकते थे, पर सीता का कारण प्रबलतम था।

विजयनगर जिसकी स्थापना ही हिन्दूधर्म के रक्षण के लिए हुई थी, देवराय के समय में, विघटित-सा होने लगा था, और जब-जब विजयनगर के राजा कुछ-कुछ निश्चिन्त या असावधान हो जाते थे, तब-तब उनके अधीनस्थ सामन्त स्वतन्त्र होने की कोशिश करते आए थे। पर, सीता के अपहरण की घटना ऐसी घटना थी, और इसकी कुछ ऐसी प्रतिक्रियाएँ थीं कि हिन्दू सामन्तों ने प्रजा की भावनाओं का ख्याल करते हुए अपने को संगठित करने का संकल्प किया।

राजा देवराय भी पिछली बार इतने अपमानित हुए थे कि वे भी और सामन्तों की सहायता चाहते थे। उन सामन्तों के साथ, जिनको कि वह नष्ट कर देना चाहते थे, उन्होंने सन्धि कर ली थी और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लिए थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विजयनगर में सैनिक तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई थीं। सीता के भक्तों का दवाव इतना बढ़ रहा था कि कहीं-कहीं देवराय के पुतले बनाकर उसको चूड़ियाँ और साड़ी पहनाकर, छुपे-छुपे जलाया भी जाने लगा था। माँग की जा रही थी कि सीता को, जिसके कारण विजयनगर को विजय मिल सकती थी, छुड़ाने के लिए शीघ्र युद्ध किया जाए।

यदि कुछ लोग इस प्रकार आन्दोलन कर रहे थे तो कई पारम्परिक वर्ग यह भी कह रहे थे कि क्यों एक ग्रामीण ग्वालिन को लेकर इतना हो-हल्ला मचाया जा रहा है! क्यों अन्ध-विश्वासों को बढ़ाया जा रहा है! उनको भय था कि इस आन्दोलन से कहीं हमारा प्रभाव न कम हो जाए।

तव तक विजयनगर को गुप्तचरों द्वारा यह खबर तो मिल गई कि सीता का विवाह जवर्दस्ती कर दिया गया है, पर यह समाचार अभी नहीं पहुँचा था कि वह महल से छोड़ भी दी गई है। न उन परिस्थितियों के बारे में ही कोई जानता था, जिनमें उसकी विमुक्ति सम्भव हो सकी।

सीता अपने गाँव के पास पहुँची। थोड़ी दूर पर वह पहाड़ दिखाई दिया, जिस पर उसका मन्दिर था; उसका गाँव था। सीता और उसके साथी बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने पंख लगाकर वहाँ पहुँचना चाहा, पर नदी के तट तक पहुँचते-पहुँचते, तेजी से चलने के बावजूद काफी अँधेरा हो गया। सिपाही थक गए थे, हाथी थक गए थे। अँधेरे में उनको चलने में दिक्कत भी हो रही थी। लाचार हो उनको रात में वहीं पड़ाव डालना पड़ा। गणेश ने गुंडप्पा को दो-तीन उत्साही सिपाहियों को मनाकर उनके साथ गाँव भेज दिया।

● ● ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: ३४ :

खबर रातोंरात विजयनगर तक पहुँच गई कि सीता तुंगभद्रा के तट पर पड़ाव डाले हुई है। प्रातःकाल होते-होते काफी भीड़ इस तरफ जमा हो गई।

सूर्योदय होते ही सीता ने नदी पार की। सुल्तान के सिपाहियों ने उससे विदा ली। वह हाथी से उतरकर पैदल पहाड़ी की ओर चलने लगी, और इस प्रकार कदम रखती जाती थी जैसे गाँव की मिट्टी को छूकर वह पुलकित हो रही हो। उसके पीछे एक जुलूस-सा निकल रहा था। उसका असाधारण स्वागत हुआ।

राजा देवराय स्वयं उसकी अगवानी करने के लिए पहाड़ी के नीचे खड़े थे। उनके आसपास उनके मन्त्री थे। सीता उनको देखकर एक क्षण झिंपी, फिर पहाड़ की सीढ़ियों पर इस तरह चढ़ने लगी, जैसे उनका होना या न होना उसके लिए बराबर हो।

वह जल्दी-जल्दी अपने घर गई। घर की छप्पर उड़ चुकी थी। जहाँ गौवें बराबर रँभाया करती थीं, वहाँ का वातावरण साँय-साँय कर रहा था। बाड़े के पत्थर इधर-उधर लुढ़क गए थे। खाट एक ओर टूटी पड़ी थी। मकान सुनसान था। सीता का माथा ठनका।

"बाबा कहाँ हैं ?" सीता ने पूछा।

भीमन्ना ने दबी आवाज में कहा, "वह तुम्हारा इन्तजार कर-करके गुजर गया।"

"गुजर गए ?" सीता के मुख से अविश्वास की आह निकली और वह फूट-फूट कर सिसकने-बिलखने लगी। उसकी बुआ भी रोने लगी। उनको यूँ दुखी देख जो भीड़ वहाँ जमा हो रही थी, छँट गई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीता और उसकी बुआ मकान में इधर-उधर देखने लगीं। कोई भी चीज अपनी जगह नहीं थी। गाँव ही उजाड़ दिया गया था। जो पाँच-दस झोपड़ियाँ थीं, उनको भी रोड़े-पत्थरों में मिला दिया गया था और गाँव वाले भूख की ज्वाला शान्त करने के उद्देश्य से विजयनगर चले गए थे।

"वे कब गुजर गए ?" सीता की बुआ ने अपने आँसू पोंछते हुए पूछा।

"ज्यादा दिन नहीं हुए। हमने जो कुछ किया जाना चाहिये था, किया।" मौत को कौन रोक सकता है; उम्र भी हो गई थी, पर मौत के वक्त भी वह तुम्हें याद करता रहा, सीता के लिए सिर धुनता रहा।" भीमन्ना ने बतलाया।

"हूँ......" सीता की बुआ जोर-जोर से रोने लगी।

"सीता के जाने के बाद, सुल्तान के लोगों ने गांव पर हमला किया। बहुत से लोग मारे गए, तुम्हारे पिता बचे रहे। मगर खाँसी के दौरे ने उनकी जान ले ली। हम भी तो जाने ही वाले हैं, कितने दिन और जीएँगे ? तुम सुख से रहो बेटी।" भीमन्ना यह कहते हुए स्वयं मुँह मोड़कर सिसकने लगा।

गाँव की हालत बुरी थी। वह खंडहर-सा हो गया था। जिस बावड़ी में रोगी आ-आकर नहाया करते थे, उसको भी पत्थरों से भर कर पाट दिया गया था, पर पानी वहाँ बुलबुला रहा था और धीमे-धीमे कलकल करता बह रहा था। लेकिन वहाँ कोई भीड़ न थी, जैसे सीता के जाते ही उस बावड़ी की महिमा भी चली गई हो।

कुछ लोगों को सन्देह था कि यह आततायियों की करतूत नहीं, बल्कि विजयनगर के पुरोहितों का दुष्कृत्य है। वे बावड़ी को बिगाड़कर, शायद उसकी महिमा को बिगाड़ना चाहते थे......जैसे महिमा अगर थी, तो वह सीता की न होकर, बावड़ी की ही हो।

मन्दिर पत्थरों का ढेर-सा हो गया था। उसकी छत तोड़ दी गई थी, दीवारें ध्वस्त कर दी गई थीं। चबूतरा मात्र रह गया था। नीम के पेड़ को भी उजाड़ने का प्रयास किया गया था, मगर वह बच गया था और उसी तरह साया दे रहा था, जैसे पहले देता था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अगर आक्रान्ताओं का बस चलता, तो वे शायद पहाड़ को भी सपाट कर देते। हर चीज नष्ट कर दी गई थी। लोग कहा करते थे कि सीता उस गाँव का प्राण थी, वह चली गई, और गाँव निष्प्राण हो गया, अब अस्थि-पंजर-सा रह गया है।

सीता थोड़ी देर अपने घर में रही, फिर मन्दिर गई। राजा भी वहाँ पहुँच गए थे और चबूतरे के नीचे खड़े थे। वे चारों ओर निरीक्षण कर रहे थे। सीता के आते ही वे उसकी ओर देखने लगे। वह नीम के पेड़ के नीचे बैठ गई ध्यानस्थ सी। उसकी आँखों से आँसू बहते जाते थे। वह अपने घर में रो भी नहीं पा रही थी। वहाँ उसे कोई सान्त्वना देनेवाला नहीं था, और मन्दिर के समीप, वह ऐसा अनुभव कर रही थी जैसे बाबा की गोद में सिर रखकर हिचकियाँ ले-लेकर रो रही हो।

राजा भी सोच रहे थे—उसके यहाँ होने से विजय मिलती हो या नहीं, पर जनता में, राज्य में एक नया संगठन बन गया है, एक नई चेतना आ गई है और यही विजय की भूमिका है। सीता को नहीं मालूम कि हम क्या चाहते हैं, किन्तु वह हमारे उत्साह और प्रेरणा का स्रोत है।

राजा के मन में विचारों का तूफ़ान सा आ गया था··· विश्वास युक्तिसंगत हो, या अयुक्तिसंगत, पर उनके कारण ही मानव क्रियाशील बनता है। क्रियाशीलता सफलता की कुंजी है। श्रद्धा से शक्ति पैदा होती है। सीता ने जनता में श्रद्धा पैदा की है, मैं उसका उपयोग करूँगा। जीवन में, मनुष्य तरह-तरह से सन्तोष प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। यदि किसी को पूजने से सन्तोष मिलता है, तो उसे क्यों रोका जाए ? जिस व्यक्ति पर इतने लोग अपने सन्तोष के लिए निर्भर हैं, क्यों मैं उसे अपनी बनाना चाहूँ ? यह स्वार्थ है। और राजा को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठना चाहिए···· मैं उठूँगा—राजा ने अपने को समझाया।

जब सीता ने आँखें खोलीं, तो राजा ने कहा, "आप विजयनगर आ सकती हैं और जहाँ जी चाहे, रह सकती हैं। आपको हर प्रकार की सुविधा दी जाएगी।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीता कुछ न बोली।

राजा ने सोचा कि शायद उसको संदेह हो रहा है कि वह अन्तःपुर में रानियों के साथ रखी जाएगी, इसीलिए वह नहीं बोल रही है। उसने कहा, "मैंने अपना इरादा बदल लिया है।"

पर तब भी सीता नहीं बोली। वह विस्फारित नेत्रों से उस ओर देख रही थी, जहाँ कभी मन्दिर का सुन्दर कलश था।

राजा का पहले कुछ भी इरादा रहा हो, पर जब से वह अपमानित और पराजित हुआ था और जब से सीता के बारे में सर्वत्र आन्दोलन चल पड़ा था, वह सीता की रक्षा करना चाहता था। वह उसको अपने अन्तःपुर में नहीं रखना चाहता था। उसमें विचित्र परिवर्तन आ गया था। उसका दृष्टिकोण बदल गया था। कभी-कभी तो राजा यह भी सोचने लगा था""चूँकि उसके मन में एक देवी के प्रति वासनामयी लालसा उठी थी, इसी कारण उसको सब जगह नीचा देखना पड़ा था"""अपनी लड़की को यवन सुल्तान से ब्याहना पड़ा था। विवाह क्या था, बलि थी। वह सोच रहा था कि उस वासनाजनित आसक्ति के लिए उसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है। वह लज्जित था। इस बीच उसे यह समाचार भी मिल गया था कि कैसे सीता के साथ "निकाह" होते ही, शाहजादा अंधा कर दिया गया था। वह जालिम सुल्तान तक उसको देखकर बदल गया था। हो सकता है, वह भी मन-ही-मन पश्चात्ताप कर रहा हो।

राजा को भय था कि यदि मैंने भी सीता से विवाह करना चाहा, तो मेरी भी वही दुर्गति होगी, जो शाहजादे की हुई। यदि सीता मुझ से विवाह करना चाहती, तो आपत्ति ही नहीं करती, मेरा प्रस्ताव टालती ही नहीं। कम-से-कम अब तो मुझे स्थिति को समझना चाहिए। उस स्त्री से विवाह भी क्यों किया जाय, जो भगवत्कृपा का माध्यम समझी जाती हो और अपने ही ढंग से भगवान् को अर्पित हो चुकी हो, जो जनता की नजर में देवी हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विचारों के इस घात-प्रतिघात के प्रभावों से उद्वेलित होकर राजा ने सीता के समक्ष हाथ जोड़ दिए। तभी सीता ने आँखें खोलीं। राजा की भी अन्तर्दृष्टि खुल चुकी थी।

सीता की साँस तो धीमे-धीमे चल रही थी, पर आँसू लगातार झरते जाते थे।

"मुझे क्षमा करो।" राजा ने कहा।

सीता के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान दौड़ पड़ी।

"मैं पराजित होकर भी, अपने को विजयी समझ रहा हूँ। तुम्हारी कृपा है...मैं कुछ नहीं चाहता। जैसा तुम चाहो, वैसा करो...मैं वही करूँगा जो तुम चाहोगी।" राजा ने विनम्र भरे स्वर में कहा।

"आप मुझे क्षमा करें। मैं राजा की आज्ञा का पालन नहीं कर पाऊँगी। मुझे यहीं रहने दीजिए।" सीता ने राजा की ओर मुड़कर कहा। ऐसा लगता था जैसे बाबा का दिया हुआ वचन बाबा के साथ ही समाप्त हो गया हो।

"तो यथाशीघ्र इस मन्दिर का निर्माण प्रारम्भ कर दिया जाए।" राजा ने मन्त्री की ओर देखकर कहा।

"मुझे नहीं मालूम कि भगवान् ने मुझे क्या दिया है, पर मुझे देखकर कितने ही लोग सन्तुष्ट होते हैं, तब मैं किसी एक की होकर कैसे उसको सन्तुष्ट कर सकूँगी? यह भगवान् का कार्य है, और जो भगवान् का कार्य करते हैं, चाहे वे पुरुष हों, या स्त्री, वे विवाह के बन्धनों से दूर रहते हैं। विवाह से शारीरिक आसक्ति पनपती है और मैं भगवदासक्त ही रहना चाहती हूँ। राजा पर जन-कल्याण का उत्तरदायित्व है। जन के हित के लिए उसको अपना हित त्यागना पड़ता है। मैं यहीं रहूँगी।" सीता ने एक व्याख्या-सी की।

राजा थोड़ी देर, तन्मय हो उसको देखते रहे। फिर नतमस्तक हो, नमस्कार करके चले गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीता वहां से चल पड़ी'। वह अपने घर में जाकर, एक-एक चीज को उठाकर उन्हें यथास्थान रखती गई। उसको ऐसा लग रहा था, मानो सारा संसार ही उसका घर है। वह सबकी है और सब उसके हैं।

● ● ●

मुद्रक—भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन, वाराणसी।
३१/७—७६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाल्मीकि विद्यापीठ

१२६०१३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

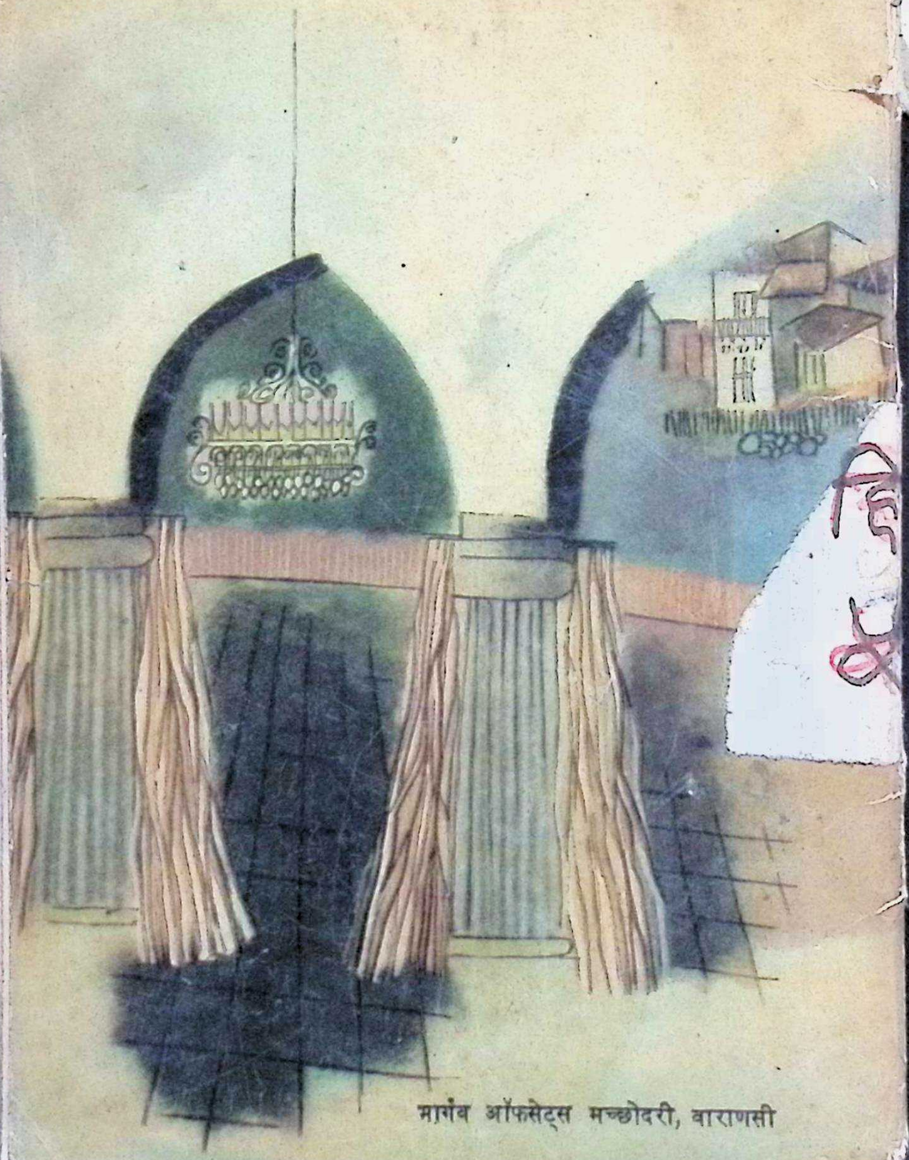

भार्गव ऑफसेट्स मच्छोदरी, वाराणसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu